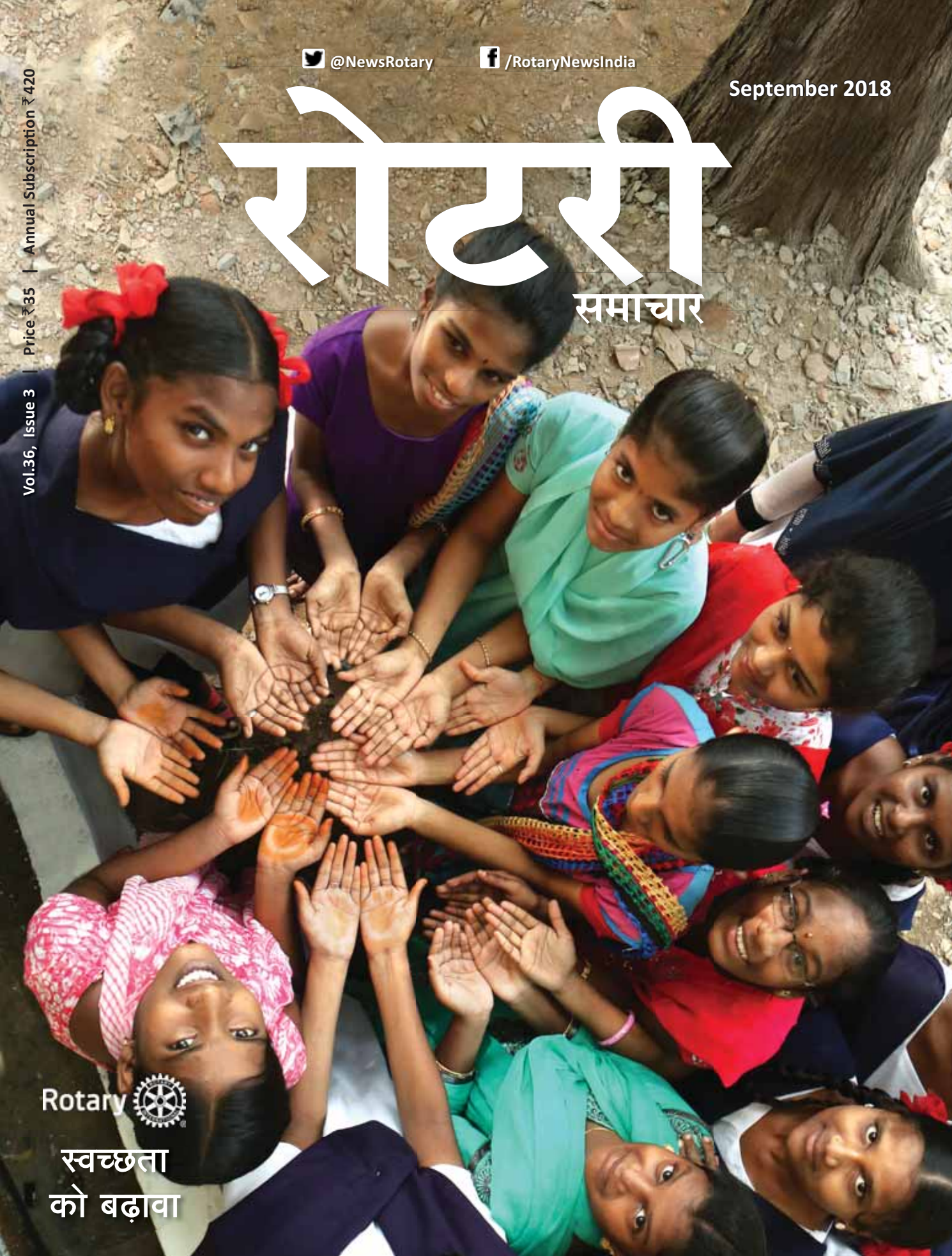


रोटरी

समाचार



Rotary 

स्वच्छता
को बढ़ावा



Rotary District 3090



BE THE
INSPIRATION



Dr. V.B. Dixit
District Governor 2018-19



Release of District Directory by
HE V.P. Singh Badnore, Governor of Punjab



Assistant Governors Review Meet



Installation of Rotary Club Ferozepur Cantt

Signature Project of The District : Water and Sanitation

विषयसूची

14 भारत से खसरा और रूबेला को खत्म करना
दिल्ली में नेशनल पोलियोप्लस और MR ओरिएंटेशन मीट में
पोलियोप्लस में 'प्लस' की विस्तार से चर्चा की गयी।

22 पोलियो को सुर्खियों में रखें:

रो ई निदेशक भास्कर

रो ई निदेशक सी भास्कर ने रोटेरियनों को अफगानिस्तान
और पाकिस्तान जहाँ से पोलियो के मामलों की रिपोर्ट
जारी है से सावधान रहने की चेतावनी दी। वायरस कभी
भी भारत में घुस सकता है।

26 श्रेय वह लें जिसके आप हक़दार हैं
INPPC चेयर दीपक कपूर ने रोटेरियनों से आग्रह
की के वे पोलियो उन्मूलन में रोटर की पर्याप्त
भूमिका को विशिष्टता दें।

28 ब्रेकआउट सत्र में मेल मिलाप
टोरंटो सम्मेलन से कुछ दिलचस्प सत्रों की एक झलक।

32 मोरादाबाद के रोटेरियन स्थानीय स्कूलों
को संवारते हैं
इन रोटेरियनों की बदौलत बच्चों को स्कूलों में
बेहतर स्वच्छता सुविधाएं का आनंद मिल रहा है।

46 ईच बिन अंय हैम्बर्गर
जर्मनी में दुनिया के प्रवेश द्वार पर लंगर डाल दें,
जहां स्थानीय महसूस करना सहज और सरल है।

64 कुचिपुड़ी के राग
आंध्र के पारंपरिक नृत्य का अन्वेषण करें।

74 असमी बच्चों के लिए जीवन का उपहार
ग्रेटर तेजपुर और दिल्ली पूर्व के रोटर क्लुबों ने
CHD से पीड़ित असम से आठ बच्चों को हृदय
सर्जरी की सुविधा प्रदान की।

कवर पर: आंध्र प्रदेश के एक गांव में स्कूली
बच्चों गर्व से अपने साफ हाथों का प्रदर्शन करते हुए।
रोटेरियनों ने इन बच्चों को हैंडवाश अभ्यास सिखाया है।



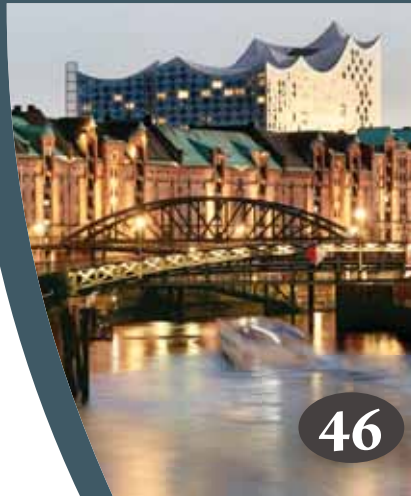
14



28



32



46



64



74



100 करोड़ का दान प्रेरित करता है, प्रोत्साहित करता है

लेख TRF के लिए ₹100 करोड़ का दान का प्रत्येक शब्द पढ़ा और रविशंकर के कार्य, समाज के लिए उनका प्रेम और दूसरों की मदद करने का उनका दृष्टिकोण देखकर मैं मंत्रमुग्ध हुआ। यह लेख उनके लिए आंखें खोल देने वाला है जो समाज से लेते तो बहुत कुछ है पर बदले में समाज के लिए कुछ नहीं करते। इस महान व्यक्ति से मिलना चाहता हूँ और उन्हें छूकर स्वयं को यह यकीन दिलाना चाहता हूँ। महोदय आपको और डीजी को मेरा सलाम कि उन्होंने उनके महान कृत्य के लिए उस व्यक्ति को प्रेरित

कृपाल सिंह, रोटरी क्लब
दुर्गापुर स्टील सिटी
मंडल 3240

रोटरी क्लब बेंगलोर ओर्चर्ड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर का यह एक शानदार, उदार, साहसिक और

अनुकरणीय कृत्य है कि उन्होंने TRF को ₹100 करोड़ दान किये है। मानव गुणों के बीच इतने बड़े दिलवाले दानकर्ता मिलना दुर्लभ है।

हेमंत गोगटे, रोटरी क्लब
अम्बरनाथ - मंडल 3142

डी रविशंकर को उनकी दरियादिली और उदार स्वैये, जिसकी वजह से उन्होंने संस्थान को ₹100 करोड़ का दान दिया, के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। उनको मेरा सलाम।

डॉ डी के सोलंकी, रोटरी क्लब
बानपुर बलुगाँव - मंडल 3262

रवि शंकर वास्तव में एक विनम्र और परवाह करने वाले रोटेरियन है जिन्होंने दुनियाभर में रोटरी के कार्यों को ख्याति दिलाई है। हर कोई उनकी तरह ना सोच सकता है ना ही कार्य कर सकता है। आगे की पीढ़ी उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के



रूप में याद रखेगी जो दिव्य विचारों एवं कृत्यों के साथ जिया। रोटरी को उनपर बहुत गर्व होना चाहिए।

नंदनन वरियर, रोटरी क्लब
वादाकंचेरी कोचीन
मंडल 3201

डी रविशंकर द्वारा TRF को ₹100 करोड़ का दान देने के बारे में पढ़ना विस्मयकारी था। उनकी कहानी वाकई में उतनी ही शानदार है

जितनी इतना बड़ा दान देने की उनकी व्याख्या - “समाज ने मेरे पिता की जगह ले ली थी - इसलिए मैं यह पैसा समाज को लौटा रहा हूँ।” उनके परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हें मिला समर्थन प्रशंसनीय है।

साथ ही, जयश्री द्वारा लिखित एक जोशपूर्ण पुनर्मिलन, त्रिनिदाद, हर्मिंगबर्ड का देश, रशीदा भगत द्वारा लिखित कोपाई नदी का सम्मान जैसे सभी लेख पढ़ने योग्य है। मध्य पृष्ठ भारत के नक्शे पर हमारे डीजीयों की तस्वीरों के साथ शानदार है। हम भविष्य में भी ऐसे ही अच्छे कार्यों की आशा करते हैं।

एम टी फिलिप, रोटरी क्लब
त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

रोटरी समाचार का नियमित पाठक होने के नाते, मैं आपको और आपकी टीम को उच्च-श्रेणी के लेख, कवर पेज, रोटरी

RIPN सुशील गुप्ता को बधाइयाँ



ख्वाजा साहब चिस्ती दरगाह और ब्रह्म देव के निवास की पावन नगरी, अजमेर से बधाइयाँ। PRID सुशील गुप्ता को बधाइयाँ जो 2020-21 के लिए रोई अध्यक्ष उम्मीदवार चुने गए

हैं। पत्रिका को नियमित रूप से भेजने के लिए धन्यवाद; रशीदा भगत और उनकी टीम के कारण, मुझे, 46 वर्षों से एक रोटेरियन, को पत्रिका की विषय वस्तु अद्भुत, शिक्षाप्रद और प्रेरक लगती है।

विष्णु अग्रवाल, रोटरी क्लब अजमेर - मंडल 3053

रोटरी भारत द्वारा बढ़िया प्रदर्शन

टोरेंटो सम्मेलन के दक्षिण एशिया रिसोप्शन पर लिखे गए लेख शीर्ष रोई नेतृत्वकर्ताओं ने की भारत के प्रदर्शन की प्रशंसा। रोटरी भारत की चहुंमुखी उपलब्धियों का दृष्टांत देता है। विश्व नेतृत्वकर्ताओं द्वारा ऐसा कहा जाना मनोबल को बढ़ाता है। भारत ने पिछले वर्ष 19.1 मिलियन डॉलर का योगदान दिया था और अब डी रविशंकर ने ₹100 करोड़ दिये!

आर मुरली कृष्ण, रोटरी क्लब
बेहामपुर - मंडल 3262

उत्कृष्ट सम्पादकीय

मैं सम्पादकीय दिल टूटने का और उदारता का मौसम से अवाक हूँ और मैं खुद को इसे पूरा पढ़ने से नहीं रोक सका। संपादक खेलों के बारे में बात करती है और रोटरी और खेलों को एक साथ एक मंच पर लाती है। रॉजर फेडरेर में जिस अहंकार की अनुपस्थिति का उन्होंने उल्लेख किया, वह मैंने महान दानकर्ता डी रविशंकर में भी पाया जिन्होंने संस्थान को ₹100 करोड़ दान किये।

हम उनसे कई और शानदार लेखों की उम्मीद कर सकते हैं। रोटरी समाचार एक

परियोजनाओं की सूची और रोटरी परिवार से प्रेरणादायक खतों के साथ एक पत्रिका प्रकाशित करने के लिए बधाई देता हूँ। मैं डी. रविशंकर को भी TRF को ₹100 करोड़ दान देने के लिए बधाई देता हूँ। भगवान उनके और उनके परिवार का हमेशा भला करे!

डेनियल चित्तीलाप्पिल्ली, रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3201

डी रविशंकर द्वारा TRF को दिए गए 100 करोड़ के दान के बारे में पढ़ना आनंददायक था। उनकी रूपरेखा शानदार है। उन्हें और उनके परिवार को मेरा सलाम। उन्होंने एक उत्कृष्ट उदाहरण स्थापित किया है।

एम एन महेश्वरप्पा, रोटरी क्लब दवानगरे विद्यानगर - मंडल 3160

डी रविशंकर के जीवन की कथा को पढ़ना वाकई प्रेरक और प्रोत्साहक

है। मुझे यकीन है कई पाठकों की आँखें नम हो गई होंगी। विशेष लोग हैं जो रोटरी के सिद्धांत स्वयं से ऊपर सेवा और दुनिया में अच्छा करने की इसकी क्षमता में विश्वास रखते हैं। हम सभी को समर्पण और ईमानदारी के साथ कड़ी मेहनत करनी चाहिए ताकि यह विश्वास बरकरार रहे।

डॉ सतीश धामकर, रोटरी क्लब बेलगौम - मंडल 3170

डी रविशंकर द्वारा TRF को एक बार में ₹100 करोड़ का दान देने के बारे में पढ़ना आनंदपूर्वक विस्मयकारी था। उन्हें और उनके परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। गेट्स फाउंडेशन के बाद TRF में दान देने वाले वह दूसरे सबसे बड़े दानकर्ता हैं।

एन जगदीसन, रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

सूचनाप्रद और अति उत्तम पत्रिका है। टीम को मेरी शुभकामनाएं।

पी एस गोखले, रोटरी क्लब डोम्बीवली मिडटाउन - मंडल 3142

सदस्यों का अवरोधन महत्वपूर्ण है

सदस्यों के अवरोधन पर रोई निदेशक सी. भास्कर का सन्देश अद्भुत था। मुझे उसे बार-बार पढ़ने में मजा आ रहा था। मेरा सुझाव है कि नए सदस्यों को शामिल करने से पहले उनकी प्राथमिकताओं, रुचियों और सेवा के लिए समय की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि

हमें रोटरी में वास्तव में सेवाभावी लोग मिल सकें।

डॉ एन आर यू के करथा, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

कोपाई नदी:

एक खूबसूरत कहानी

अगस्त अंक में कोपाई नदी पर एक लेख को देखना गर्व की बात थी। टेलीफोन पर लिए गए साक्षात्कार ने मुझे अपने विचारों को प्रकट करने में सुविधापूर्ण बनाया। मैं अभिभूत हुई जब मेरे विचारों को आपके लेखन में इतनी सूक्ष्मता के साथ लिखा

गया। नदियों पर मेरी धारणा, पुरुष एवं महिलाओं की समझ में अंतर और नदियों के प्रति उनके लगाव को लेख में अच्छी तरह से लिखा गया था। एक भूगोलशास्त्री होने के नाते यह मेरे लिए पुरस्कार के समान है।

संजुक्ता बानिक
शोध विद्यार्थी, विश्व भारती

मुझे लेख कोपाई नदी का सम्मान पढ़कर अच्छा लगा। दुनिया भर में, 30 सालों में मैंने पांच नदियों की पैदल यात्रा की और उनका अध्ययन किया, और मैं हमेशा जल जिकायों के बारे में लोगों में जागरूकता फैलाता हूँ। आग तक नदियों के बारे में कोई लेख एवं वैज्ञानिक पत्रिकाओं में पढ़ा है, लेकिन आप का लेख बढ़िया था। हमारे अनुभव और भावनाओं को आहूत करने अच्छी तरह से प्रलेखित किया है। ट्रेकर्स अपना निर्धारित जीवन छोड़ कर एक 8-दिन की पैदल यात्रा पर एक नदी से दोस्ती करने चले, उस नदी को बेहतर भविष्य की आशा देने। आप का लेख हमारे लिए ताज में लगे हीरे की तरह है जिसने हमारे सभी सदस्यों को संतुष्टि दी।

प्रोफेसर मलय मुखोपाध्याय, विश्व भारती शान्तिनिकेतन

इर्वेस्टन में संपादकों की बैठक

तत्कालीन रोई अध्यक्ष इयान रिसले ने इर्वेस्टन में हुई रोटरी संपादकों की बैठक (जुलाई अंक) में उचित कहा था कि रोटरी पत्रिकाओं की गुणवत्ता बेहतर हुई है। हमारी भारत की पत्रिका में अब ज्ञानवर्धक एवं अभिनव लेखों का अच्छा मिश्रण होता है।

पीयूष दोषी, रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

लेख इर्वेस्टन में रोटरी संपादक की बैठक जिसमें रशीदा भगत ने पारंपरिक पोशाक में भारत का प्रतिनिधित्व किया था, को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। रोटरी क्लब अंकलेश्वर द्वारा इस बात को सुनिश्चित करना कि स्कूल छोड़ चुकी लड़कियाँ वापस स्कूली शिक्षा की ओर लौटें, एक बार पुनः रोटरी के कार्यों के जादू को प्रदर्शित करता है! रोटरी क्लबों को बेरोजगार युवाओं के लिए टैली में मुफ्त कम्प्यूटर प्रशिक्षण और इसी प्रकार के अन्य कार्यक्रमों की पेशकश कर सकें।

क्लबों को सामुदायिक परियोजनाओं जैसे दूरस्थ गाँवों में चिकित्सीय सेवाओं को भी करना चाहिए। भारत से हम व्यावसायिक परियोजनाओं और सामुदायिक सेवाओं पर अधिक लेखों को पढ़ने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

नवीन कुमार गर्ग, रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090

अपने विचार संपादक को भेजें:

rotarynews@rosaonline.org;

rushbhagat@gmail.com पर ई-मेल करें।

Governors Council

RI Dist 2981	DG	S Piraiyon
RI Dist 2982	DG	Nirmal Prakash A
RI Dist 3000	DG	RVN Kannan
RI Dist 3011	DG	Vinay Bhatia
RI Dist 3012	DG	Subhash Jain
RI Dist 3020	DG	Guddati Viswanadh
RI Dist 3030	DG	Rajiv Sharma
RI Dist 3040	DG	Gustad Anklesaria
RI Dist 3053	DG	Priyesh Bhandari
RI Dist 3054	DG	Neeraj Sogani
RI Dist 3060	DG	Pinky Patel
RI Dist 3070	DG	Barjesh Singhal
RI Dist 3080	DG	Praveen Chander Goyal
RI Dist 3090	DG	Dr Vishwa Bandhu Dixit
RI Dist 3100	DG	Deepak Jain
RI Dist 3110	DG	Arun Kumar Jain
RI Dist 3120	DG	Stuti Agrawal
RI Dist 3131	DG	Dr Shailesh Palekar
RI Dist 3132	DG	Vishnu S Mondhe
RI Dist 3141	DG	Shashi Sharma
RI Dist 3142	DG	Dr Ashes Ganguly
RI Dist 3150	DG	Ramesh Vangala
RI Dist 3160	DG	Konidala Muni Girish
RI Dist 3170	DG	Ravikiran Janradan Kulkarni
RI Dist 3181	DG	Rohinath P
RI Dist 3182	DG	Abhinandan A Shetty
RI Dist 3190	DG	Suresh Hari S
RI Dist 3201	DG	A Venkatachalapathy
RI Dist 3202	DG	Dr EK Ummer
RI Dist 3211	DG	EK Luke
RI Dist 3212	DG	K Raja Gopalan
RI Dist 3231	DG	CR Chandra Bob
RI Dist 3232	DG	Babu Peram
RI Dist 3240	DG	Dr Sayantan Gupta
RI Dist 3250	DG	Kumar Prasad Sinha
RI Dist 3261	DG	Nikhilesh M Trivedi
RI Dist 3262	DG	Bhabani Prasad Chowdhury
RI Dist 3291	DG	Mukul Sinha

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee	Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RIDE	Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RIDE	Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2018–19)

DG Rajiv Sharma	RI Dist 3030
Chair – Governors Council	
DG Pinky Patel	RI Dist 3060
Secretary – Governors Council	
DG Subhash Jain	RI Dist 3012
Secretary – Executive Committee	
DG A Venkatachalapathy	RI Dist 3201
Treasurer – Executive Committee	
DG Shashi Sharma	RI Dist 3141
Member – Advisory Committee	

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor	Senior Assistant Editor
Rasheeda Bhagat	Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
 3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road, Egmore
 Chennai 600 008, India. Phone : 044 42145666
 e-mail: rotarynews@rosaonline.org
 Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd,
 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014,
 India, and published by PT Prabhakar on behalf
 of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr,
 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
 Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the
 Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International
 (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or
 advertisement content. Contributions – original content – is welcome
 but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content
 can be reproduced, but with permission from RNT.



नेताओं और प्राकृतिक आपदा के नुकसान का सामना

पिछले कुछ हफ्ते भारत के लिए अत्यंत कष्टप्रद रहे हैं। जब एक संपादक और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के मीडिया सलाहकार रहे संजय बरू ने ट्वीट किया, “किसी भी राजनेता को हर जगह से उतना प्यार नहीं मिला जितना अटलजी को,” स्वतः ही कोई भी उनसे सहमत होगा। यह तर्क दिया जा सकता है कि लोग गांधी जी को या जवाहरलाल नेहरू को बहुत प्यार करते थे। लेकिन जब पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की मृत्यु की घोषणा हुई, इस आघात की संवेदना वाकई गहरी और सच्ची थी। चाहे उनकी राजनैतिक विचारधारा से सहमत हों या नहीं सभी वाजपेयी से भरपूर स्नेह, उनका सम्मान और प्रशंसा करते थे। उनके कई उत्कृष्ट गुणों के लिए ... जिनमें से पहला था उनका कवि होना। उनकी मंत्रमुग्ध कर देने वाली मगीत नहीं गाता हूँ म के कविता पाठ को कौन भूल सकता है, जिसमें गहराई की इतनी सारी परतें थीं ... करुणा, पीड़ा फिर चुनौती, आशा और आशावाद। या उनका वाक-चातुर्य...याद हैं 1996 और फिर 1999 में संसद में दिए गए उनके भाषण, जब उनकी सरकारें अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाई थीं? उन्हें यूट्यूब पर देखें और कुशल वक्ता के - स्वर के उतार-चढ़ाव, उसकी बारीकियों, और अपने विरोधियों पर बरस पड़ना, लेकिन ऊंची आवाज़ में, चिल्ला कर, दोषारोपण या ड्रामा कर के नहीं बल्कि कुल मिला कर इसे मुहावरा में यूँ व्यक्त किया जा सकता है, जोर का झटका धीरे से। यह उनकी भद्रता थी, और भिन्न-भिन्न लोगों को साथ ले कर चलने की क्षमता थी, जिसने उनके सबसे कटु आलोचकों को भी आज शोक में डुबो दिया।

वाजपेयी के गुजर जाने के साथ DMK के कुलपति और तमिलनाडु के पांच बार मुख्यमंत्री रह चुके एम करुणानिधि के निधन के साथ, देश ऐसे कड़ावर नेताओं से रिक्त होता जा रहा है जो अपनी बात के धनी थे, और उनमें आत्मसंयम और संवेदनशीलता बनाए रखने की अद्भुत क्षमता थी फिर चाहे वे सत्ता पक्ष में बैठें या विपक्ष में।

राजनैतिक रिक्तता छोड़ गए इन नेताओं सहित, केरल के लोगों के लिए भी राष्ट्र शोक में डूबा है जिन्होंने प्रकृति के क्रोध के रू-बरू इस शताब्दी की सबसे भयावह बाढ़ को झेला है। दक्षिणी राज्य के कई जिले, जो हर साल छुट्टियों के पैकेज ‘मानसून मैजिक’ का प्रचार करते हैं, प्रचण्ड बारिश से तबाह हो गए हैं, जिसके कारण अकल्पनीय मानवीय यंत्रणा, कष्ट और विस्थापन के साथ बहुत भारी आर्थिक नुकसान हुआ है। लेकिन वहीं ये एक चेतावनी भी है कि संवेदहीनता और धृष्टता की वजह से जब-जब पर्यावरणीय मानदंडों की उपेक्षा होती है तो फलस्वरूप गंभीर आपदा आना निश्चित है। हालाँकि केरल में प्रकृति के कोप के लिए कुछ हास्यास्पद कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है, जैसे बीफ खाने से या मासिक धर्म में महिलाओं द्वारा सबरीमलाई मंदिर जाने का प्रयास, पर इस संकट का वास्तविक कारण है पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों के पश्चिमी घाटों में तोड़ फोड़। भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा नियुक्त माधव गाडगील की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ पैनल ने अगस्त 2011 में क्षेत्र के प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण की सिफारिश की थी। पैनल ने सुझाव दिया था कि केरल समेत छह राज्यों में फैले पूरे घाट क्षेत्र को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील घोषित किया जाए। लेकिन इसे लागू करने का मतलब होता “विकास की गतिविधियों” में कटौती करना, कुछ औद्योगिक और खनन गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने सहित। ऊँगली उठाने की बात रहने दें, जिस तरह से केरल और अन्य राज्यों के लोग, कई रोटेरियनों समेत, बाढ़ प्रभावित लोगों की मदद के लिए आगे आये हैं, यह मानवता में आपके विश्वास को बहाल करता है। पृष्ठ 54 पर एक संक्षिप्त लेख और अपील प्रकाशित की गई है, जिसमें आप सहायता कैसे कर सकते हैं इसका विवरण दिया गया है। प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं में रोटेरियनों ने हमेशा अपना समय, कौशल और धन पूरी उदारता से दिया है। इसी समय केरल को हमारी मदद की ज़रूरत है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप उम्मीद पर खरे उतरेंगे...

Rashida Bhagat

रशीदा भगत



रोटरी को मज़बूत क्लबों की ज़रूरत हैं

प्रिय साथी रोटेरियनों,

कल्पना कीजिये यदि हम रोटरी द्वारा किसी एक दिन में किए जाने वाले सभी कार्यों की तस्वीर ले सकें। तो रोटेरियनों के अलावा कोई भी इस बात पर विश्वास नहीं करेगा कि एक अकेली संस्था इतना सारा काम कर सकती है। उन तस्वीरों में आप समर्पित स्वयंसेवकों को देखेंगे जो पोलियो का उन्मूलन करने, माइक्रोलोन का प्रबंध करने, स्वच्छ पानी प्रदान करने, युवाओं को परामर्श देने, और अन्य अनगिनत कार्यों को करने हेतु काम कर रहे हैं।

हम ये सभी काम इसलिए कर सकते हैं क्योंकि हमारी भौगोलिक पहुँच अच्छी है और हमारे क्लबों में ऐसे लोग हैं जो उनके समुदायों में व्यस्त हैं। उस समुदाय के हिस्से के रूप में जिसकी आप सेवा करते हैं, आप उसकी जरूरतें जानते हैं, आपके संबंध होते हैं, और आप त्वरित कार्यावाही करने में सक्षम होते हैं। इसलिए प्रत्येक रोटरी क्लब की सदस्यता में उसके समुदाय की विविधता प्रतिबिंबित होनी चाहिए।

हमने इसमें बढ़िया प्रगति की है। मिस्र, इंडोनेशिया और केन्या में, रोटरी को 50 प्रतिशत महिला सदस्यता मिल रही है। हम हमारे क्लबों की आयु विविधता को भी बढ़ा रहे हैं। हमारे समुदायों में से प्रत्येक में, युवा पेशेवर उनके हुनर के माध्यम से योगदान करने, लौटाने एवं परामर्शदाताओं से सीखने के लिए उत्सुक हैं। चलिए उनके साथ साझा करें की रोटरी आखिर है क्या। Rotary.org पर एंजेलिंग यंगर प्रोफेशनल्स टूलकिट के पास एक कार्य योजना है जो आपके क्षेत्र के युवा नेतृत्वकर्ताओं एवं पूर्व रोटरी सदस्यों तक पहुँचने में आपकी मदद करेगी।

एक अन्य संसाधन जो हमारे समुदायों को बेहतर तारीक से प्रतिबिंबित करने में हमारी मदद कर सकता है - एक ऐसा जो हमारी तरह ही वैश्विक है, एक चौथाई मिलियन सदस्यों के साथ मजबूत है और जो पहले से

ही सेवा एवं नेतृत्व के हमारे मूल्यों को साझा करता है - रोटारेक्ट है। रोटारेक्टर हमारे साझेदार हैं: परियोजनाओं पर उनके साथ कार्य कीजिये, अपने कार्यक्रमों पर उनसे बोलने के लिए कहिए, और अपने क्लबों से जुड़ने के लिए उन्हें आमंत्रित कीजिये। दुनिया भर के समर्पित रोटारेक्टर रोटरी के सदस्य बन रहे हैं और यहाँ तक कि रोटारेक्ट का सदस्य रहते हुये ही नए रोटरी क्लबों कि शुरुआत कर रहे हैं।

दुनिया को रोटरी कि आवश्यकता है, और अधिक अच्छा करने के लिए रोटरी को मजबूत क्लबों एवं व्यस्त सदस्यों कि आवश्यकता है। इस बात को सुनिश्चित करना हमारी ज़िम्मेदारी है - आपकी और मेरी - कि जिसकी भी रोटरी से जुड़ने में रुचि हो उसे एक निमंत्रण मिले। Rotary.org पर मैम्बरशिप लीड्स साधन का इस्तेमाल कीजिये जो रोटरी से जुड़ने में रुचि रखने वाले लोगों की मदद ऐसे क्लब से संपर्क करने में करती है जो उनके लिए सही हो। और इस बात को सुनिश्चित करें की प्रत्येक सदस्य के पास रुकने की कोई वजह हो। ऐसे मजबूत क्लबों का निर्माण करके जो सार्थक परियोजनाओं को करने के साथ-साथ मजे भी करते हैं, हम हमारे क्लब के सदस्यों को वे मूल्य दे रहे हैं जो उन्हें कहीं और नहीं मिल सकते।

रोटरी की कहानी - वह कहानी जो सेवा की उन तस्वीरों में कैद है - को केवल अपने तक ही सीमित मत रखिए। मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप सभी उम्र के नेतृत्वकर्ताओं, पुरुष एवं महिलाओं, जो वापस लौटाने का कोई रास्ता खोज रहे हैं, को आमंत्रित कीजिये। ऐसा करके, आप अपने समुदाय में *प्रेरणा बनेंगे* और दुनिया में अच्छा करते रहने में रोटरी की मदद करेंगे।

बेरी रेसिन

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल



निरक्षरता उन्मूलन में शामिल हो

प्रिय रोटेरियनों,

बुनियादी शिक्षा निर्देशों का एक उद्विकासी कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को जिम्मेदार वैश्व नागरिक बनने एवं उनके समुदायों के आर्थिक और सामाजिक कल्याण हेतु योगदान देने के अवसर प्रदान करना है। रोटेरी लगातार बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत और दुनियाभर में साक्षरता के प्रसार को बढ़ावा दे रही है।

रोटेरी मानती है कि माता-पिता और शिक्षकों को पता होता है कि बच्चों के लिए सबसे अच्छा क्या है। स्थानीय क्लब विद्यार्थियों के लिए अपना समर्थन सुनिश्चित करते हैं और शिक्षक उन्हें अध्ययन के महत्वपूर्ण उच्च स्तरों को प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं। तकनीकी-आधारित अतिरिक्त अनुदेश सहायक प्रदान करने से विद्यार्थियों को अधिक अवसर प्राप्त होते हैं और यह उनकी मदद करते हैं जिन्हें आवश्यक अकादमिक अध्ययन की जरूरतों को पूरा करने में संज्ञानात्मक परेशानी है।

चलिए मैं साक्षरता और बुनियादी शिक्षा पहलों के निधीयन पहलुओं पर प्रकाश डालता हूँ। 2018-19 वित्तीय वर्ष के लिए केन्द्रीय बजट में ₹50,000 करोड़ का एक बड़ा हिस्सा आवंटित हुआ है और राज्य स्तर पर, CRY और सेंटर फॉर बजट एंड गवर्नेंस एकाउंटेबिलिटी, एक थिंक टैंक, द्वारा छह राज्यों - उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, बिहार और पश्चिम बंगाल - के हाल ही में किये गए विश्लेषण बताते हैं कि राज्य अपने बजट का 14-20 प्रतिशत हिस्सा स्कूली शिक्षा के लिए आवंटित करते हैं। स्पष्ट है कि पैसा साक्षरता को बढ़ावा देने में बाधा नहीं है। केंद्र और राज्य सरकारें वित्तीय समर्थन का ध्यान रखती हैं।

डिजिटल साक्षरता भविष्य है। वर्ल्ड रीडर और नोकिया के सहयोग से यूनेस्को द्वारा जारी किये गए मोबाइल रीडिंग के सबसे बड़े सर्वेक्षण के मुताबिक, विकासशील देशों में मोबाइल उपकरण साक्षरता को बढ़ावा देने एवं लोगों को पाठन में व्यस्त रखने में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। मोबाइल फोन उल्लेखनीय ढंग

से इथियोपिया, घाना, भारत, केन्या, नाइजीरिया, पाकिस्तान और ज़िम्बाब्वे में साक्षरता कौशलों को बढ़ा रहे हैं। “मोबाइल रीडिंग कोई भविष्य की घटना नहीं है बल्कि आज की, अभी की सच्चाई है, रिपोर्ट कहती है। मोबाइल रीडिंग करीब सात बिलियन लोगों के लिए शिक्षा के अवसर खोल सकती है, और अंततः निरक्षरता दर को हमेशा के लिए कम कर सकती है। वे स्थान जहाँ भौतिक किताबें अपर्याप्त हैं, मोबाइल फोन भरपूर हैं। यद्यपि मोबाइल फोन अब भी मुख्य रूप से बुनियादी संचार के लिए उपयोग किये जाते हैं, फिर भी साधारण से फोन भी लम्बे संदेशों का प्रवेश द्वार होते हैं।”

यूनेस्को के एक प्रशंसनीय अध्ययन के मुताबिक, पढ़ने के लिए एक मोबाइल उपकरण के उपयोग का सबसे अधिक फायदा लड़कियों और महिलाओं को को हो रहा है। वे लड़कों और पुरुषों के मुकाबले छह गुना अधिक पढ़ती हैं।

संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े बताते हैं कि पृथ्वी के अनुमानित सात बिलियन निवासियों में से, छह बिलियन से भी अधिक की अब मोबाइल फोन तक पहुँच है। मोबाइल तकनीक दुनियाभर में सुविधाओं से वंचित समुदायों में साक्षरता और अध्ययन को बढ़ावा दे सकती है। रोटेरी को तेजी से विकसित होती हुई तकनीक के साथ चलने और बुनियादी शिक्षा एवं साक्षरता के अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। वैश्विक स्तर पर निरक्षरता को समाप्त करने के लिए हम यूनेस्को के साथ वैसे ही साझेदारी करने के बारे में क्यों नहीं सोचते जैसे हमने एक साथ मिलकर पोलियो को खत्म किया था!

इस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए!

मैं कोफ़ी अनान के इन शब्दों के साथ समापन करना चाहूँगा: “साक्षरता विपदा से आशा तक जाने का एक पुल है।”

प्रेम्णा बनिर्, रोटेरियनों से प्रेरित करने और दुनिया में एवं एक दूसरे में परिवर्तन लाने के लिए कहिये।

C. Banerjee

सी भास्कर

निदेशक, रोटेरी इंटरनेशनल

District Wise TRF Contributions as on June 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	83,817	6,577	0	11,000	101,394	688	15.9
2982	137,880	12,357	2,725	0	152,961	697	25.7
3000	336,550	26,050	732,892	176,199	1,271,692	2,432	48.1
3011	438,463	2,506	416,349	22,977	880,295	795	26.2
3012	138,839	7,291	112,590	3,016	261,736	359	10.3
3020	151,992	27,437	110,475	58,728	348,632	680	15.9
3030	46,213	22,924	1,050	0	70,187	94	1.9
3040	43,586	93	42,344	127	86,150	237	11.1
3053	67,768	78	22,129	12,500	102,476	110	3.8
3054	85,841	223	531,342	26,000	643,406	171	2.9
3060	413,859	2,323	542,916	138,568	1,097,666	2,110	55.4
3070	83,465	198	25,794	1,084	110,542	562	19.0
3080	240,826	39,261	30,211	4,386	314,685	765	23.5
3090	4,509	0	2,500	0	7,009	10	0.5
3100	14,929	0	30	0	14,960	0	0
3110	137,151	4,516	127,931	0	269,597	298	7.8
3120	123,885	508	87,073	14,993	226,458	212	7.3
3131	622,032	16,917	455,495	121,399	1,215,843	2,237	43.9
3132	149,356	4,975	7,875	20,000	182,206	452	10.4
3141	898,670	35,464	1,076,054	147,751	2,157,938	2,024	39.7
3142	522,121	18,641	140,192	(1,000)	679,954	1,272	47.1
3150	77,619	12,557	52,932	143,882	286,990	786	21.9
3160	236,178	3,588	0	15,914	255,681	376	16.1
3170	430,554	12,405	153,231	0	596,189	1,515	28.4
3181	130,234	1,091	0	78	131,403	941	31.1
3182	102,863	462	40,126	0	143,451	795	25.3
3190	506,342	118,018	482,937	27,570	1,134,867	180	3.6
3201	480,598	27,738	343,092	5,323	856,750	675	13.2
3202	69,903	18,890	58,824	2,773	150,390	160	3.3
3211	239,790	1,100	0	179,186	420,076	302	7.0
3212	393,152	62,621	32,500	2,000	490,273	1,282	34.7
3231	355,222	78,101	551,431	130,914	1,115,668	121	4.8
3232	615,299	40,788	354,293	38,250	1,048,630	878	23.8
3240	129,775	5,338	0	8,367	143,480	595	20.4
3250	203,573	6,431	63,793	26,000	299,797	365	10.3
3261	114,366	130	66,129	1,000	181,625	197	8.4
3262	93,696	14,925	88,529	71,033	268,182	317	9.6
3291	158,517	26,790	131,036	119,294	435,637	200	5.3
India	17,175	1,000,658	3,313		1,021,145		
India Total	9,096,606	1,659,970	6,890,131	1,529,313	19,176,020	25,890	19.0
3220 Sri Lanka	164,292	10,652	12,538	4,217	191,699	654	34.3
3271 Pakistan	48,115	73,197	11,752	0	133,064	90	6.3
3272 Pakistan	37,137	3,301	3,150	3,000	46,588	109	4.0
3281 Bangladesh	482,839	15,306	427,921	106,038	1,032,104	855	15.2
3282 Bangladesh	136,432	14,023	3,600	3,000	157,055	641	17.0
3292 Nepal	171,451	33,566	712,104	0	917,120	735	16.8
South Asia Total	10,136,872	1,810,014	8,061,196	1,645,568	21,653,650	28,974	18.0
World Total	131,229,704	38,938,693	21,571,652	26,087,901	217,827,950		

Source: RI South Asia Office



ART ACROSS GENERATIONS

The german kitchen.
Since 1898.

Head Office and Showroom:

A- 248, Mahipalpur Extension, NH-8,
Delhi-Gurgaon Road, New Delhi-110037

[T] +91-11-46102000 [E] info@haecker-kitchens.com

Häcker
kitchen.germanMade.

www.haecker-india.com

www.haecker-kuechen.com

AHMEDABAD BANGALURU CHENNAI COIMBATORE DELHI
9879538977 9740999350 9442081111 9500210555 9313134488

HYDERABAD INDORE JAIPUR KOCHI LUDHIANA MUMBAI MANGALURU THRISSUR
9700058285 9425803599 9414058718 9895058285 9815048222 9322987229 7899119955 7025991000



रो ई अध्यक्ष मनोनीत,
सुशील गुप्ता।

सुशील गुप्ता रो इ अध्यक्ष 2020-21 के लिए मनोनीत

टेरेसा श्मेडिंग

रोटरी क्लब दिल्ली मिडवेस्ट, मंडल 3011 के सुशील कुमार गुप्ता, रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष 2020-21 के लिए नामांकन समिति द्वारा मनोनीत किये गए हैं। यदि कोई अन्य उम्मीदवार चुनौती नहीं देता है तो उन्हें 1 अक्टूबर को अध्यक्ष - नामित घोषित कर दिया जाएगा।

गुप्ता मानवता पर रोटरी का प्रभाव बढ़ाने के साथ-साथ अपनी सदस्यता की विविधता में वृद्धि करना चाहते हैं।

“व्यक्तिगत रूप से, हम केवल इतना कर सकते हैं।” गुप्ता ने एक वक्तव्य में कहा, “लेकिन जब 12 लाख रोटेरियनों एक साथ मिल कर काम करते हैं, तो हम, जो हासिल कर सकते हैं उसकी कोई सीमा नहीं है, और इस प्रक्रिया में, हम वास्तव में दुनिया में परिवर्तन ला सकते हैं।”

गुप्ता 1977 से रोटेरियन हैं और उन्होंने रोटरी को मण्डल अध्यक्ष, प्रशिक्षण नेता और संसाधन समूह सलाहकार और कई समितियों के सदस्य, उपाध्यक्ष व अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं।

जल संरक्षण में उनके योगदान के सम्मान में आई आई एस विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा उन्हें डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया था।

उन्हें प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार से भी नवाजा गया, जो भारत के नागरिक पुरस्कारों के पदानुक्रम में चौथा पुरस्कार है और यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति ने पर्यटन और सामाजिक कार्य में उनके विशिष्ट योगदान और सेवा के लिए प्रदान किया है।

अपने मानवीय और शैक्षिक कार्यक्रमों के सहयोग के लिए गुप्ता को द रोटरी फाउंडेशन से विशिष्ट सेवा पुरस्कार (*Distinguished Service -ward*) भी प्राप्त हुआ है। वह और उनकी पत्नी विनीता द रोटरी फाउंडेशन के मेजर डोनर और आर्च क्लम्प सोसाइटी के सदस्य हैं।

गुप्ता एशियन होटल्स (वेस्ट) लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक हैं, और हयात रिजेंसी, मुंबई और जे डब्ल्यू मैरियट होटल, नई दिल्ली एरोसिटी के मालिक हैं। उन्होंने फेडरेशन ऑफ होटल और रेस्तरां एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष के रूप में और टूरिज्म फाइनेंस कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया

लिमिटेड के निदेशक मंडल में सेवाएँ दी हैं। वह एक्सपीरियंस इंडिया सोसाइटी के अध्यक्ष हैं, जो पर्यटन उद्योग और सरकार के बीच, सार्वजनिक-निजी साझेदारी के तहत भारत का एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में प्रचार करती है। वह हिमालयन एनवायरमेंट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष भी हैं और भारत में ऑपरेशन आइसाइट यूनिवर्सल बोर्ड में सेवाएँ दे रहे हैं।

रोटरी इंटरनेशनल 2020-21 की अध्यक्ष नामांकन समिति के सदस्य हैं - कजुईको ओज़ावा, रोटरी क्लब योकोसुका, कानागावा, जापान; मनोज डी देसाई, रोटरी क्लब बड़ौदा मेट्रो, गुजरात, भारत; शेखर मेहता, रोटरी क्लब कलकत्ता-महानगर, पश्चिम बंगाल, भारत; जॉन जी थॉर्न, रोटरी क्लब नॉर्थ होबार्ट, तस्मानिया, ऑस्ट्रेलिया; गिलर ई तुमनेन, रोटरी क्लब मकाटी वैस्ट, मकाटी सिटी, फिलीपींस; जुइन पार्क, रोटरी क्लब सनचेन, जिनैनैनाम, कोरिया; एलियो सेरिनी, रोटरी क्लब मिलानो डुओमो, इटली; गिडियन एम पाइपर, रोटरी क्लब रामात हैशरॉन, इजराइल; पर होये, रोटरी क्लब आरुप, डेनमार्क; पॉल निज, रोटरी क्लब वीस्प (वेक्स्ट्रीक नूई), नीदरलैंड; सैम ओकूजेतो, रोटरी क्लब अकरा, घाना; होजे उबिरेसी सिल्वा, रोटरी क्लब रेसिफ़, पनाम्बुको, ब्राजील; ब्रैडफोर्ड आर हॉवर्ड, रोटरी क्लब ओकलैंड अपटाउन, कैलिफोर्निया, यूएसए; माइकल डी मैककुलो, रोटरी क्लब ट्रेंटन, मिशिगन, यूएसए; करेन के वेंज, रोटरी क्लब मैरीविले, टेनेसी, यूएसए; माइकल के मैकगोर्न, रोटरी क्लब साउथ पोर्टलैंड-केप एलिजाबेथ, मेन, यूएसए; और जॉन सी स्मर्ज, रोटरी क्लब नेपल्स, फ्लोरिडा, यूएसए।

© rotary.org

चित्र: रशीदा भगत

भारत से खसरा और रूबेला को खत्म करना

रशीदा भगत

किसी भी रोटरी मंच पर जब भी पोलियो के सन्दर्भ में आंकड़ों का जिक्र होता है, वहां प्रभावशाली आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं, यह बताने के लिए कि विश्व से पोलियो का समूल नाश करने में रोटरी का ज़बरदस्त प्रभाव रहा है। रोटरी के पोलियो प्लस कार्यक्रम से पहले हर साल 125 देशों में 350,000 बच्चे पोलियो का शिकार होते थे. वहीं आज पोलियो से बचने के लिए 2.5 बिलियन बच्चों का टीकाकरण किया जाता है।

परन्तु इंडिया एक्सपर्ट एडवाइजरी ग्रुप ऑफ़ मीज़ल्स एंड रूबेला के अध्यक्ष डॉ जेकब जॉन जिन्होंने रोटरी द्वारा चलाये गए कार्यक्रम में प्रमुख भूमिका निभाई थी, दिल्ली में नेशनल पोलियो प्लस और एम आर (खसरा-रूबेला) की अनुस्थापन सभा में आश्चर्यजनक आंकड़ों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा, याद कीजिये किस प्रकार 1980 में कुछ स्वास्थ्य अधिकारियों का मानना था कि टीकाकरण पर इतना अधिक खर्चा

करना या इसके लिए सरकार पर दबाव डालना व्यर्थ और अनुचित था। 2014 में आंकड़ों का आर्थिक विश्लेषण करने के बाद पता चला कि विश्व से पोलियो मिटाने से हुआ आर्थिक लाभ आश्चर्यजनक और बहुत अधिक है, तीन देशों को छोड़ कर।

डॉ जॉन ने बताया की पोलियो उन्मूलन में वर्ल्ड बैंक ने पूरे भारत में 2 बिलियन डॉलर या ₹14000 करोड़ रुपये खर्च किये हैं। “इसमें ₹10,000 करोड़, वो राशि शामिल

नहीं है जो रोटेरियनों ने कैपेन सामग्री या अन्य मदों में अपनी जेब से खर्च किये, अगर वह राशि भी इसमें समायोजित कर ली जाए तो कुल मिला कर पोलियो अभियान में ₹24000 करोड़ व्यय किये गए।”

लेकिन 2014 के विश्लेषण से पता चला कि पोलियो उन्मूलन की वजह से पूरी दुनिया को लगभग भारत 1.71 ट्रिलियन डॉलर का आर्थिक लाभ हुआ है। “यदि हम 2012 को निर्दिष्ट वर्ष मानें तो, पोलियो का सफाया करके हमने



बाएं से : PRIP राजेंद्र के साबू, INPPC चेयर दीपक कपूर और RID सी भास्कर।

₹1,197 लाख का धन अर्जित किया है। कम से कम इतना तो जानकारी में रहे कि पोलियो में निवेश किये गए हमारे अथाह प्रयासों से भारत समृद्ध हुआ है। बाकी कोई माने या ना माने, भले ही रोटरी को इसका श्रेय ना दे पर हमें ये मालूम रहना चाहिए कि हम रोटेरियनों ने काफ़ी हद तक राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान किया है। हमें इसकी पड़ताल करनी चाहिए की बीमारी को जड़ से मिटाने की प्रक्रिया में आर्थिक और सामाजिक विकास किस प्रकार होता है।”

अब जबकि रोटरी ने भारत में 2020 तक सरकार के इंद्रधनुष कार्यक्रम में शामिल हो कर खसरा, रूबेला, टीबी और ऐसी अन्य बीमारियों को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ नियमित टीकाकरण के विस्तार को बढ़ाने का फैसला कर लिया है, रोटेरियनों को इस यात्रा के लिए कमर कसनी होगी। “कृपया अपनी स्थानीय भाषाओं में एमआर का नाम शामिल कर लें। तभी आप खसरे और रूबेला के खतरों के बारे में अपने समाज को सही ढंग से समझा पाएंगे(देखें बॉक्स)। टीकाकरण शुरू होने से पहले, एक प्रतिशत शहरी बच्चों और तीन प्रतिशत ग्रामीण बच्चों की मृत्यु खसरा और इसकी जटिलताओं के कारण हो गई।”

यदि गर्भवती महिला का रूबेला से संपर्क हो गया तो गर्भस्थ शिशु को अत्यधिक खतरे का सामना करना पड़ सकता है, डॉ जॉन ने कहा कि “बच्चे में मस्तिष्क, आंख, हड्डी सम्बंधित या अन्य जन्मजात बीमारियाँ पनप सकती हैं, ऐसी बीमारियों के साथ

खसरा उन्मूलन सामाजिक विकास के लिए सबसे सहज और सरल है। परन्तु ऐसे स्वास्थ्य अर्थशास्त्री नहीं हैं जो खसरे से संबंधित जटिलताओं के कारण होने वाले नुकसान या उसके दीर्घकालिक दुष्प्रभावों का आकलन करते हों।

डॉ जेकब जोन

जीने से बेहतर है कि वह मर जाए।” इसके अलावा, इस मामले में टीकाकरण 15 वर्ष तक जारी रखना पड़ेगा; मूल रूप से, कवरेज अवधि 5 से 15 वर्ष के बीच होती है। समांतर में, समुदाय-आधारित अभियान में 9 महीने से 4 साल तक की सारी बच्चियों को शामिल किया गया है, जो कि स्कूल नहीं जाती। “यह एक जटिल परिस्थिति है, लेकिन हम 15 साल से कम उम्र की सभी लड़कियों को रूबेला का टीका लगाना चाहते हैं, ताकि समाज में रूबेला वायरस विद्यमान रहने के बाद भी, युवा मां पर रूबेला का कोई असर नहीं होगा,” उन्होंने कहा।

“क्या आप जानते हैं कि भारत में खसरा टीकाकरण की शुरुआत रोटरी ने की थी? 1978 में जब भारत में टीकाकरण अभियान शुरू किया गया, तब इसमें खसरा शामिल नहीं था क्योंकि टीका महंगा था और यहां तक कि भारत में इसका लाइसेंस भी नहीं था।” 1979 में रो ई मंडल 3230 (तमिलनाडु) को राज्य में बच्चों को खसरे का टीका



RIPN मनोनीत सुशिल गुप्ता और RIDE कमल सांघवि।

लगाने के लिए भारत सरकार से विशेष अनुमति मिली थी “हमारे प्रिय स्वर्गीय एमजीआर (पूर्व टीएन मुख्यमंत्री एमजी रामचंद्रन) को धन्यवाद और हमें कनाडाई रोटेरियनों द्वारा दान की गई टीके की पचास लाख खुराक मिली, और टीएन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के साथ मिल कर, हमने पांच वर्षों के भीतर ही राज्य में खसरा के कारण होने वाली बाल मृत्यु को लगभग रोक दिया।”

इस अनुभव के बाद 1984 में डॉ जॉन ने खसरे के टीके का लाइसेंस प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय का नेतृत्व किया और इसे

टीकाकरण अभियान में शामिल किया, जिसे बाद में सार्वभौमिक टीकाकरण अभियान (यूआई) नाम दिया गया।

बैठक को संबोधित करते हुए, पिछले रो ई अध्यक्ष राजेंद्र साबू ने भारत से पोलियो खत्म करने में भारतीय रोटेरियनों के प्रयासों की भरपूर प्रशंसा की। “एक समय दुनिया ने सोचा था कि भारत कभी भी पोलियो को खत्म नहीं कर पाएगा और अगर भारत ऐसा नहीं कर पाया तो पूरी दुनिया कभी भी पोलियो मुक्त नहीं हो सकेगी। जिस दिन भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया, यह सिर्फ भारत

में ही नहीं बल्कि पूरी रोटरि दुनिया, WHO, UNICEF और हमारे सभी वैश्विक सहयोगियों ने धूमधाम से इस का उत्सव मनाया था।”

उन्होंने कहा, एक समय था जब “सरकार ने एनआईडी के विचार को ही खारिज कर दिया था और कहा था कि हम इसे अपने हिसाब से तय करेंगे। तब रोटरि ने उच्चतम स्तर पर इसकी किस प्रकार वकालत की और कैसे राष्ट्रीय टीकाकरण दिवसों की नीति अपनाई गई, यह अपनेआप में इतिहास का हिस्सा है। लेकिन इसकी बागडोर सरकार के हाथ में लिए बिना हमारा सपना साकार नहीं होता। वो हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। हां, सफलता के कई दावेदार होते हैं और कई लोग इसका श्रेय लेंगे भी।”

वहां एकत्रित उन रोटरियनों पर अपनी नाराज़गी जताते हुए, जो यह शिकायत कर रहे थे कि तीन देशों (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नाइजीरिया) को छोड़ कर विश्व से पोलियो हटाने का, रोटरि को उचित श्रेय नहीं मिला, और भारत सरकार के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (UIP) में सम्मिलित होने पर भी ऐसा ही होगा, साबू ने कहा : “ईमानदारी से बताएं, जहां तक खसरा और रूबेला का संबंध है, हमने अभी तक किया क्या है? विचार करना एक बात है, उस पर अमल करना अलग। हमने एक साल पहले (MoU) समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे लेकिन उसके पश्चात् कोई कार्रवाई नहीं हुई है। हमें सक्रिय सहयोग और सहभागिता

करनी पड़ेगी तभी उसकी प्रशंसा की अपेक्षा कर सकते हैं।”

वहां एकत्रित डीजी, पीडीजी और एमआर टीकाकरण अभियान में शामिल अन्य लोगों को सलाह दी कि खसरा और रूबेला दोनों के खतरों के बारे में पहले अपने आप को शिक्षित करें, साबू ने कहा कि पोलियो में यह रोटरि का ट्रम्प कार्ड था और इसका अनुसरण किया जाना चाहिए। “जब हमने दुनिया को पोलियो से निज़ात दिलाने का सपना देखने की शुरुआत की, तो यह बहुत आसान लग रहा था। अनुमान था कि दुनिया के बच्चों को टीकाकरण के लिए हमें केवल 120 मिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी। हमने सोचा कि हम 2005 तक अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। इसलिए जिसे एक साधारण काम सोचा था जैस-तैसे रोटरि उसमें लग गई।”

पर जब भारत ने पोलियो को खत्म कर दिया तो रोटरि के भीतर “संतुष्टि का भाव” फैल गया और नियमित टीकाकरण में हमारा जुड़ाव कम होने लगा था। लेकिन हम यह कतई नहीं भूल सकते कि वायरस हमारे पड़ोस में मौजूद है और कभी

पोलियो में भी, हमने मीडिया के परंपरागत माध्यम से पोलियो विरोधी अभियान का प्रचार किया था, परन्तु अब सोशल मीडिया, विशेष रूप से WhatsApp संदेशों के माध्यम से बहुत सी झूठी सूचनाएं फैल रही हैं।

डॉ प्रदीप हल्दर



बाएं से : PDG गण नितिन दाफ्रिया, क्रांति मेहता, बद्री प्रसाद, डॉ राजीव प्रधान, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, PDG संजय खन्ना, INPPC चेयर दीपक कपूर, PRIP राजेंद्र साबू, RID सी भास्कर, PDG ई के सगादेवन, अनिल अग्रवाल और उपकार सिंह सेठी।

भी सीमा पार कर सकता है। “इसके अलावा, यहां भारत में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां पोलियो किसी भी क्षण प्रकट हो सकता है।”

लेकिन पोलियो की वापसी पर सतर्क रहने के अलावा, रोटरि को एक नई चुनौती की जरूरत थी ... “रोटरियनों की कल्पना पर काबिज़ होने के लिए एक नया विचार।”

पोलियोप्लस कार्यक्रम के ‘प्लस’ के बारे में साबू ने बताया कि 1984-85 में, जब रोटरि ने अपने WHO जैसे सहयोगियों से संपर्क किया, तो यह निर्णय लिया गया कि रोटरि तो पोलियो टीकाकरण का, तथा अन्य संक्रमणीय बीमारियों - ‘प्लस’ भाग का नियंत्रण- WHO द्वारा संचालित किया जाएगा। लेकिन 1988 तक WHO और UNICEF दोनों ने ही पोलियो पर अपना ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया और मप्लसफ भाग एक तरह से

उपेक्षित हो गया था, लेकिन सरकारी टीकाकरण कार्यक्रमों में बना रहा।

अब चूँकि भारतीय रोटरियनों को “नई चुनौती” की आवश्यकता थी, वो और पिछले रो ई अध्यक्ष कल्याण बनर्जी दोनों अंतर्राष्ट्रीय पोलियोप्लस कमेटी, रो ई बोर्ड और टीआरएफ ट्रस्टी को यह मनाने में कामयाब रहे कि भारतीय रोटरियन अब इसके ‘प्लस’ भाग की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं और भारतीय ‘यूआई’ कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। “हमने उनसे कहा कि हम कोई पैसे की मांग नहीं कर रहे हैं, इसकी व्यवस्था हम खुद कर लेंगे जिसके जवाब में उन्होंने कहा कि प्रशासनिक लागत में हम आपकी सहायता करेंगे परन्तु पोलियो के लिए एकत्र किए गए पैसे का इस्तेमाल अन्यत्र तब तक नहीं किया जा सकता जब तक दुनिया में पोलियो कहीं भी मौजूद है।”



पोलियो वायरस के पुनः वापसी पर चौकन्ना रहने के लिए साबू ने रोटेरियनों से “दृढ़तापूर्वक अनुनय की, अपने मंडल में और क्लबों में उस चिंगारी को फिर से सुलगाएं और एमआर टीकाकरण में उन्हें पूरे उत्साह के साथ भाग लेने के लिए प्रेरित करें। यदि आप ने ऐसा नहीं किया, तो हम असफल रह जाएंगे। लेकिन अगर हम ने ये कर दिखाया, तो मैं आपको आश्चस्त कर सकता हूं कि एमआर का यह प्रयोग, जिसे भारत में रो ई ने पोलियोप्लस कार्यक्रम में शामिल करने की इजाजत दे दी है, दुनिया के बाकी हिस्सों में भी दोहराया जा सकता है।”

अपने संबोधन में, टीआरएफ ट्रस्टी गुलाम वहनवती ने रोटेरी की सर्वोच्च बाहरी प्राथमिकता “पोलियो के सम्पूर्ण उन्मूलन” पर जोर दिया; इसे ज़्यादा नहीं खींचा जा सकता। “यह सुनिश्चित करने के लिए हमें ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाना होगा और पूरे मन से काम करना होगा, जब हम इसके इतने नज़दीक हैं, तो

इसे पूरी तरह से ख़त्म करना होगा।

हमें 100 प्रतिशत तक पहुंचना है।”

रोटेरी क्लब बेंगलूर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष डी रविशंकर का फाउंडेशन को ₹100 करोड़ (लगभग 14.7 मिलियन डॉलर) दान करने की उदारशीलता के लिए धन्यवाद करते हुए, उन्होंने रो ई मंडल 3190 के डीजी सुरेश हरि को रोटेरियनों को भारी दान के लिए राजी करने की सराहना की। “अब हरि और रविशंकर दोनों इस दिशा में काम कर रहे हैं कि ₹100 करोड़ का इस्तेमाल कैसे किया जाएगा।”

वहनवती ने कहा, “निश्चय ही इसने हमारे देश के हर मंडल अध्यक्ष का लक्ष्य परिवर्तित कर दिया है। मेरे अपने डीजी शशि शर्मा जिन्होंने 7 मिलियन डॉलर का लक्ष्य दिया था, अब उन्हें उस राशि में कई ‘7’ और जोड़ने होंगे क्योंकि उन्हें मंडल 3190 से ऊपर रहना है! और यही बात देश भर के मंडल अध्यक्षों के लिए भी जाती है, जो इस एक दान से उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित हुए हैं।”

जिस दिन भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया, यह सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी रोटेरी दुनिया, WHO, UNICEF और हमारे सभी वैश्विक सहयोगियों ने धूमधाम से इस का उत्सव मनाया था।

PRIP राजेंद्र साबू

वहां जुटे हुए रोटेरियनों से उन्होंने आग्रह किया कि “उसी प्रतिबद्धता और उत्साह के साथ काम करते हुए न केवल यह सुनिश्चित करें कि भारत पोलियो मुक्त रहेगा बल्कि खसरा और रूबेला को भी जड़ से उखाड़ फेंकना है।”

इससे पहले, बैठक को संबोधित करते हुए PRID अशोक महाजन ने बताया कि खसरा और रूबेला के खिलाफ एक बच्चे को टीका लगाने के लिए 2 डॉलर से भी कम लगते हैं। “हम जानते हैं

कि यह एक आसान काम नहीं है, लेकिन यह असंभव भी नहीं है। हमारे पास पोलियो का अनुभव है, जो बहुत ही मुश्किल काम था। उन 30 वर्षों में हमने संघर्ष किया, कई ठोकरें खाईं और कितना ज़्यादा प्रतिरोध, लेकिन हर समस्या हल होती चली गई। यदि आप उसी उत्साह के साथ काम करें तो हम भारत को एमआर से भी छुटकारा दिला सकते हैं।”

लेकिन एमआर के खिलाफ इस लड़ाई में करीब ₹5 करोड़ की आवश्यकता है। उन्होंने जोड़ा, “पोलियो उन्मूलन के लिए तो हमारे पास हमारा समर्थन करने के लिए टीआरएफ था लेकिन यह हमारा स्वयं का कार्यक्रम है और धन की उत्पत्ति भी हमें ही करनी है, यह असंभव कार्य नहीं है। यदि क्षेत्र में प्रत्येक रो ई मंडल ₹12 लाख का योगदान करता है, तो हमारा लक्ष्य पूरा हो जाएगा।” यदि कहीं पर उनकी मदद की आवश्यकता होती है तो वह हमेशा कॉर्पोरेट या व्यक्तिगत दाताओं से

खसरा “छोटी एड्स” है



बाएं से : रो ई निदेशक सी भास्कर, PRIP राजेंद्र के साबू और डॉ जेकब जॉन।

रो ई के राष्ट्रीय पोलियोप्लस और एमआर ओरिपेंटेशन समागम दिल्ली में, एमआर पर भारत के विशेषज्ञ सलाहकार समूह (IEAG) के प्रमुख विषाणुविज्ञानी और अध्यक्ष, डॉ जेकब जॉन ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया जिन्होंने खसरा को “छोटी एड्स” के समकक्ष बताया। “प्रत्येक बच्चा जिसे अतीत में पोलियो होता था, एक बच्चे की मृत्यु खसरे से भी होती थी। लेकिन वे बच्चे अपनी कहानी बताने के लिए जीवित नहीं हैं।” उन्होंने कहा कि खसरे से संबंधित कई मृत्यु हुई हैं जिनका कारण खसरा नहीं समझा गया जिन्हें ना तो खसरा - संबंधित मृत्यु में वर्गीकृत किया गया ना ही मान्यता

दी गई, क्योंकि खसरा अपने साथ कई बीमारियाँ लाता है ... दस्त, खसरा, बारिश से बुखार और कई अन्य जो खसरे के कारण उत्पन्न होती है ... जो खसरा होने के एक वर्ष के भीतर ही बच्चे को

“लेकिन आज हम जान गए हैं कि खसरा छोटी एड्स है। यह आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली का शमन

1978 में जब भारत में टीकाकरण अभियान शुरू किया गया, तब इसमें खसरा शामिल नहीं था क्योंकि टीका महंगा था और यहां तक कि भारत में इसका लाइसेंस भी नहीं था।

करता है और 90 प्रतिशत स्वास्थ्य लाभ में दो से तीन महीने और 99.9 प्रतिशत स्वास्थ्य लाभ के लिए दो से तीन साल लग जाते हैं हैं। तो दो साल की इस अवधि के दौरान बच्चे अभी भी उन बीमारियों से मर रहे हैं, जो उन्हें खसरे के बगैर नहीं होतीं और यह तो इसकी एक शुरुआत भर है ... यही वजह है जो मैं कहता हूं कि खसरा उन्मूलन सामाजिक विकास के लिए सबसे सहज और सरल है।”

परन्तु ऐसे स्वास्थ्य अर्थशास्त्री नहीं हैं जो खसरे से संबंधित जटिलताओं के कारण होने वाले नुकसान या उसके दीर्घकालिक दुष्प्रभावों का आकलन करते हों, “लेकिन मेरा विश्वास करें, यह एक भयानक बीमारी है जिससे जितनी

जल्दी छुटकारा मिल मिल जाये उतना ही अच्छा है।

खसरा नियंत्रण करने का एकमात्र निश्चित तरीका, डॉ जॉन ने कहा, “वायरस से छुटकारा पा लें, ठीक वैसे ही जैसे हम समाज में पोलियो वायरस से छुटकारा पा चुके हैं।”

रूबेला के बारे में, उन्होंने कहा कि अगर हम रूबेला टीकाकरण कम करते हैं और इस वायरस को समाज में जीवित रहने देते हैं, “तो यह गर्भवती महिला को संक्रमित कर देगा। तो यदि आप ठीक तरह से कार्य नहीं करते हैं और समाज में रूबेला वायरस के असंक्रमीकरण की गति को धीमा कर देते हैं, तो अधिक लड़कियां बिना टीके के या रूबेला प्रतिरक्षा के बिना ही ज़िंदा रहेंगी, इसलिए वास्तव में आप विरोधाभासी तरीके और सैद्धांतिक रूप से जन्मजात रूबेला का जोखिम बढ़ा देते हैं, यदि आप ढिलाई से काम करते हैं तो जन्मजात रूबेला सिंड्रोम का जोखिम बढ़ जाता है।”

इसीलिये भारत सरकार टीके की उपलब्धता को संतुलित करने साथ ही कवरेज यानि कार्यक्षेत्र व्याप्ति के शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति के प्रति बहुत सतर्क थी। “कवरेज का प्रतिशत जितना ऊंचा हो सके उतना अधिक होना चाहिए क्योंकि हम नहीं चाहते कि 15 वर्ष आयु से कम के बच्चे बिना प्रतिरक्षा के जीवित रहें, जिससे भविष्य में रूबेला की विरोधाभासी और सैद्धांतिक वृद्धि हो। भविष्य में असुरक्षित महिलाओं की सुरक्षा के लिए हमें वायरस को मिटाना ही होगा,” उन्होंने कहा। ■

बात करने के लिए उपलब्ध रहेंगे, साथ ही किसी भी क्षेत्र में यदि धार्मिक नेता टीकाकरण का प्रतिरोध करते हैं तो उसके लिए भी उपलब्ध रहेंगे जैसा पोलियो के दौरान भी हुआ था।

स्कूलों में WASH पर एक सत्र को संबोधित करते हुए, RIPN मनोनीत सुशील गुप्ता ने हॉल में मौजूद डीजी और अन्य रोटरी नेतृत्वकर्ताओं से आग्रह किया कि वे जोश के साथ संक्रमण और बीमारियों के निवारक पहलू पर कार्य करना जारी रखें। और वह है स्वच्छता एवं सफाई। “कृपया स्कूलों में यह सुनिश्चित करने के लिए कार्य जारी रखें कि बच्चे पर्याप्त मात्रा में अपने हाथ साबुन एवं पानी से धोएं, विशेषकर खाने से पहले और शौचालय के इस्तेमाल के बाद।” सामूहिक हाथों की धुलाई के स्टेशन और लड़के एवं लड़कियों के लिए पृथक शौचालयों पर कार्य जारी रहना चाहिए, “क्योंकि व्यावहारिक परिवर्तन लाने के लिए हमें अपना ध्यान और ऊर्जा युवा पीढ़ी पर केन्द्रित करना होगा। एक बार हम उनकी मानसिकता बदल दें, और उनके माध्यम से



TRF ट्रस्ट गुलाम वाहनवती और PRID वाई पी दास।

उनके परिवारों और पूरे समुदाय की मानसिकता बदल दें, तो बहुत सी निवारक बीमारियों से निपटा जा सकता है।”

उसी प्रकार, पर्याप्त पानी की आपूर्ति वाले पृथक शौचालयों द्वारा निजता देकर किशोरियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता को सुनिश्चित करने

पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। ऐसा करके, रोटरी लड़कियों की एक पीढ़ी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करेगी, वरना वे माध्यमिक स्कूलों में बुनियादी एवं स्वास्थ्यकर शौचालय सुविधाओं के अभाव के कारण स्कूल छोड़ देती हैं।

INPPC चेयर दीपक कपूर ने इस सभा को आगाह किया कि पोलियो असंक्रमीकरण पर भारतीय रोटेरियन आराम से नहीं बैठ सकता जब तक पूरी दुनिया पोलियो से छुटकारा नहीं पा जाती। “हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पोलियो भारत से तो चला गया है लेकिन दुनिया से नहीं ... पोलियो असंक्रमीकरण आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि पहले था। आज तक पोलियो के 13 मामलों की सूचना

उन 30 वर्षों में हमने संघर्ष किया, कई ठोकें खाईं और कितना ज़्यादा प्रतिरोध, लेकिन हर समस्या हल होती चली गई। यदि आप उसी उत्साह के साथ काम करें तो हम भारत को एमआर से भी छुटकारा दिला सकते हैं।

PRID अशोक महाजन

मिली है और दिल्ली की बैठक का मुख्य कारण ऐसी रणनीति विकसित करना था जिससे हमारी पोलियो विरासत का उपयोग भारत सरकार के UI कार्यक्रम के लिए हो सके।”

भारत विशेषज्ञ सलाहकार समूह के प्रमुख के रूप में डॉ जेकब जॉन द्वारा वरिष्ठ रोटरी नेताओं को MR पर दिए गए प्रस्तुतिकरण से रोटरी के MR से जुड़ाव की शुरुआत का संकेत मिलता है।

उन्होंने भारत में पोलियो टीकाकरण कार्यक्रमों के भीमकाय आकार का जिक्र करते हुए कहा कि उस दिन “हमारे पास 700,000 पोलियो बूथ, 25 लाख टीका लगाने वाले,



PRID अशोक महाजन।

22.5 करोड़ IPV खुराक होती है ... और यह हर NID दिवस पर होता है और *End Polio Now* अभियान के दौरान भारतीय रोटेरियनों ने साबित कर दिया है कि आपके पास ऊर्जा, क्षमता और अब हमारे प्रयासों को बढ़ाने और भारत को खसरा, रूबेला, टीबी इत्यादि जैसी अन्य संक्रमणीय बीमारियों से छुटकारा दिलाने का भरपूर आत्मविश्वास है। आप इसके लिए आवश्यक धन जुटाने में सक्षम हैं; यदि एक रोटेरियन हमारे फाउंडेशन को ₹100 करोड़ दे सकता है, तो कल्पना करें कि सामूहिक रूप से हम क्या कर सकते हैं।”

कपूर ने रोटेरियनों से इंटरैक्ट क्लबों को शामिल कर स्कूलों को MR कार्यक्रम स्वीकार करने का भी आग्रह किया। “और यदि आपके क्षेत्र में कोई प्रतिरोध होता है, तो कृपया उलेमा के चैंपियन पीआरआईडी महाजन द्वारा दिए गए प्रस्ताव का भी फायदा उठाएं। वे हमारे बच्चों की रक्षा में सहायता करने से प्रसन्न होंगे।”

PRID यशपाल दास ने “आगे का रास्ता” पर रोटेरियनों को संबोधित किया और उनसे भारत में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम से विकसित अनुभव और आधारभूत ढांचे का लाभ उठाने का और इसे हमारे बच्चों को खसरा, रूबेला, TB और संक्रमणीय बीमारियों से बचाने के खिलाफ इसका दायरा बढ़ाने व MR कार्यक्रम में सम्पूर्ण और भावनात्मक रूप से जुड़ने का आग्रह किया।

भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के डॉ प्रदीप हलदर ने कहा कि भारत सरकार के एमआर प्रतिरक्षण कार्यक्रम में खसरा और रूबेला जैसी वायरल बीमारियों के टीकाकरण को सर्वोच्च

**हमारे पास 700,000 पोलियो बूथ,
25 लाख टीका लगाने वाले, 22.5
करोड़ IPV खुराक होती है ... और
यह हर NID दिवस पर होता है।**

INPPC चेयर दीपक कपूर



प्राथमिकता दी गई है। “पोलियो में हमें लगभग 17 करोड़ बच्चों का टीकाकरण करना पड़ा था, जबकि इसमें 40 करोड़ से अधिक हैं क्योंकि 9 महीने से 15 साल के आयु वर्ग में आबादी बहुत ज्यादा है। ये है भी इंजेक्शन द्वारा दिया जाने वाला टीका, इसलिए हमें पोलियो जितना लचीलापन नहीं मिल सकता।”

MR अभियान अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों, उप केंद्रों आदि के माध्यम से चलाया जाएगा “और हम समाज के सभी वर्गों तक पहुंचने के लिए अलग अलग रणनीतियों का उपयोग करेंगे। पहले सप्ताह में, हम स्कूल के बच्चों से शुरुआत करेंगे क्योंकि वे हमारी आबादी का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा हैं। इसलिए हम स्कूलों से शुरू कर फिर समाज के बाकी हिस्सों में जायेंगे।”

लेकिन 100 प्रतिशत कवरेज प्राप्त करने में चुनौतियां हैं, “जैसे गलत जानकारी, गलत धारणाएं और सोशल मीडिया के माध्यम से फैलाई गई अफवाहें। यहां तक कि पोलियो में भी, हमें ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ा था, लेकिन उन दिनों हमने मीडिया के परंपरागत माध्यम से पोलियो विरोधी अभियान

का प्रचार किया था, परन्तु अब सोशल मीडिया, विशेष रूप से WhatsApp संदेशों के माध्यम से बहुत सी झूठी सूचनाएं फैल रही हैं।”

उन्होंने कहा, चूंकि प्राथमिक लक्ष्य समूह स्कूल के बच्चे थे, इसलिए शिक्षकों और प्रधानाचार्यों की भागीदारी और सहयोग सबसे ज़रूरी था। लेकिन सार्वजनिक स्कूलों की तुलना में निजी स्कूलों में कवरेज ज्यादा चुनौतीपूर्ण था। उन्होंने कहा कि धार्मिक नेताओं के साथ जुड़ाव, खासकर मदरसों में, अधिक महत्वपूर्ण था।

MR अभियान के पहले चरण में हमसे एक भूल यह हो गई थी कि “पोलियो के विपरीत, हमने अमिताभ बच्चन जैसे हस्तियों को शामिल नहीं किया था, लेकिन अब हमने उन्हें इस टीकाकरण अभियान का चेहरा बना दिया है।”

हालांकि कई राज्य पहले से ही कवर किए जा चुके हैं, पर बड़े राज्य जैसे यूपी, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, राजस्थान और मध्य प्रदेश नवंबर में सम्मिलित किये जाएंगे। डॉ हल्दर ने कहा, “कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उच्च कोटि वाले अभियान और साझेदारी की आवश्यकता है वहीं रोटर की भागीदारी और साझेदारी बहुत महत्वपूर्ण थी।”



PRIP राजेंद्र साबू, रो ई
निदेशक सी भास्कर, TRF
ट्रस्टी गुलाम वाहनवती
और INPPC चेयर दीपक
कपूर इस वर्ष के DGयों
के साथ।

PRID यशपाल दास और पीडीजी राजीव प्रधान और अनिल अग्रवाल को *End Polio Now* में उनके विशेष योगदान के लिए पुरस्कार दिए गए थे।

अपने संबोधन में, तकनीकी अधिकारी (टीकाकरण) WHO के डॉ दानिश अहमद ने भारत के कुछ क्षेत्रों से बच्चों के लापता होने और शहरी क्षेत्रों में टीकाकरण की धीमी गति, विशेषकर झुग्गी - झोपड़ियों में गंभीर चिंता व्यक्त की।

भारत को पोलियो मुक्त बनाने में रोटरी के जबरदस्त योगदान को स्वीकार करते हुए, उन्होंने उस वक्त को याद किया जब वह नोएडा में जिला मजिस्ट्रेट से मिलने व टीकाकरण के महत्व को समझाने में सफल नहीं हो पाए थे “उन रोटारियनों को धन्यवाद जिन्होंने उनसे मुलाकात की और उन्हें आश्वस्त किया, अब वे जिला टीकाकरण की बैठकों की अध्यक्षता करते हैं।”

इसी तरह, 2005-10 के बीच, मुरादाबाद में मुस्लिम समुदाय के बड़े पैमाने पर विरोध के साथ ही पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम संकट में पड़ गया था। “हम समुदाय में धार्मिक नेताओं और प्रभावशाली व्यक्तियों को शामिल करने की

निश्चय ही इसने हमारे देश के हर मंडल अध्यक्ष का लक्ष्य परिवर्तित कर दिया है। मेरे अपने डीजी शशि शर्मा जिन्होंने 7 मिलियन डॉलर का लक्ष्य दिया था, अब उन्हें उस राशि में कई ‘7’ और जोड़ने होंगे क्योंकि उन्हें मंडल 3190 से ऊपर रहना है।

TRF ट्रस्टी
गुलाम वाहनवती

कोशिश कर रहे थे, पर बिना किसी सफलता के। लेकिन फिर रोटरी अपनी उलेमा समिति के साथ आई और ऐसे नेताओं के साथ बैठक आयोजित करने की पहल की। जिस तरह से रोटरी उलेमा समिति ने लोगों को प्रेरित कर साथ लिया और समाधान निकाला वह अभूतपूर्व है। उसके बाद तो किसी भी अवसर पर पोलियो की ऐसी सभाओं में, विभिन्न धर्म के लोगों ने एक ही भाषा बोली और एक ही संदेश दिया।”

हरियाणा में अभी गहन MR टीकाकरण चल रहा है और 90 प्रतिशत से अधिक कवरेज हासिल कर लिया गया है। लेकिन मेवात समेत दो जिलों में, “अल्पसंख्यक समुदाय की तरफ से एक बार फिर वैसा ही प्रतिरोध आ रहा है, और यूपी, बिहार और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों में टीकाकरण शुरू करने से पहले हमें उन्हें सहमत करने के लिए एक बार फिर मंच पर लाना होगा।”

MR टीकाकरण में शत प्रतिशत कवरेज की आवश्यकता पर बल देते हुए, पीडीजी राजीव प्रधान ने हॉल में उपस्थित रोटरी नेताओं से आग्रह किया कि “अपने किट में दिए गए ऑपरेशन मैनुअल को अपनी बाइबिल या गीता के रूप में देखें क्योंकि इसमें विस्तृत विवरण दिए गए हैं।” यह समझाया गया है कि हमने बच्चे क्यों खो दिए थे ... जागरूकता का अंतर, बच्चों की यात्रा आदि। जहां एक विशाल समूह को कोई खुराक नहीं मिल रही है, वहीं कुछ को केवल एक या दो खुराक मिलती हैं। “हमारे लिए यह एक बड़ी चुनौती है।”

चित्र: रशीदा भगत
और हेमंत कुमार बंसवाल

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

पोलियो को सुर्खियों में रखें: रो ई निदेशक भास्कर

रशीदा भगत



रो ई निदेशक सी भास्कर।

पिछले महीने दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय पोलियोप्लस और एमआर ओरिएंटेशन समागम में दिए गए व्यापक व्याख्यान में पिछले चार दशकों में रोटरी की पोलियो की कहानी को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया गया, रो ई निदेशक भास्कर ने भारत में पोलियो उन्मूलन को विगत कुछ दशकों में हुए भारत के निरंतर विकास और तरक्की से जोड़ दिया।

“40 साल पहले की तुलना में भारत परिवर्तन की महत्वपूर्ण अवस्था के कगार पर खड़ा था। उन दिनों विदेशों में धारणा यह थी कि भारत में हम अपनी दुल्हनों को जलाते हैं या फिर भारत में बिजली नहीं है। लेकिन अब यह स्थिति बदल रही है, क्योंकि मूलतः हम मेहनतकश लोग हैं ... चीन के उपरान्त विश्व में हम दूसरे सबसे बड़े इस्पात उत्पादक बन गए हैं, और मोटर कार आज यहां विलासिता का साधन नहीं है। इतना ही नहीं, तीन से अधिक वर्षों से, हमने विश्व बैंक से एक रुपया भी उधार नहीं लिया है। हमारी स्वास्थ्य सेवा की मूलभूत सुविधाओं में काफी सुधार हुआ है और इसके लिए रोटरी को धन्यवाद, भारत से पोलियो को खत्म कर दिया गया है, जबकि बाकी दुनिया को इसमें संशय था,” तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा।

लेकिन, उन्होंने भारत से आये हुए हुए वरिष्ठ रोटरी नेताओं को, डीजी और पीडीजी समेत चेतावनी दी, कि पोलियो के मोर्चे पर हमें तब तक बेहद सावधान रहने की जरूरत है, जब तक हमारे पड़ोसियों - अफगानिस्तान और पाकिस्तान, दोनों में पोलियो के मामले मिलते रहेंगे क्योंकि वायरस आसानी से सीमा पार कर सकता है।

वहां एकत्रित रोटरी नेताओं को दुनिया भर में पोलियो के मोर्चे पर चल रहे वाले काम का परिमाण बताते हुए

मेरे जीवन के सबसे गौरवशाली दिन

दिल्ली में पोलियोप्लस बैठक को संबोधित करते हुए निदेशक भास्कर ने कहा कि टीआरएफ शताब्दी वर्ष के दौरान, भारतीय रोटेरियनों ने 20 मिलियन डॉलर से अधिक का योगदान कर, दान देने में दूसरा स्थान प्राप्त किया था, जबकि 2017-18 में 19.17 मिलियन डॉलर की राशि एकत्रित की गई, जिसने टीआरएफ के मंच पर भारत को दूसरे स्थान पर बरकरार रखा है।

लेकिन इस रोटरी वर्ष के पहले दिन, 1 जुलाई को एक ऐसी घटना हुई थी जिसने भारत के दान देने वाले धूमकेतु को एक बिलकुल अलग धरातल पर पहुंचा दिया। उस दिन “जैसे ही मैं रो ई बोर्ड की सभा में बैठा, मुझे रो ई मंडल 3190 के पीडीजी आशा कृष्णकुमार से एक टेक्स्ट संदेश मिला, जिसमें कहा गया था कि एक रोटेरियन, डी रविशंकर ने फाउंडेशन को ₹100 करोड़ (14.7 मिलियन डॉलर) का योगदान दिया है। मुझे लगा पीडीजी से गलती हो गई थी और ₹1.00 करोड़ के बजाय ₹100 करोड़ टाइप कर दिए, मैं बोर्डरूम से बाहर आया और डीजी सुरेश हरि को बुलाया, उनसे कहा कि मुझे आशा से यह संदेश मिला है, यह ₹1 करोड़ है या ₹100 करोड़? और उन्होंने कहा, ‘निदेशक महोदय, यह ₹100 करोड़ ही है!’



मैं शायद ही इस पर विश्वास कर पाता, फिर सुरेश ने कहा, ‘हमने आपको कहा था ना, हम चमत्कार का अनुसरण करने वाले नहीं बल्कि चमत्कार के निर्माता हैं।’

तो यह था साल का पहला चमत्कार; इस योगदान के लिए डीजी हरि ने रो क्लब बेंगलोर ऑर्चर्ड्स के अध्यक्ष रविशंकर के साथ मिल कर काम किया था। इसके बाद, भास्कर ने बताया, “जैसे ही वो सभा स्थगित कर दोपहर के भोजन के लिए उठे, रो ई अध्यक्ष बेरी रेसीन दोपहर का भोजन कर रहे थे, मैं उनके बगल में बैठ गया और उनसे कहा कि नए रोटरी वर्ष के पहले दिन एक भारतीय रोटेरियन ने टीआरएफ को 14.7 मिलियन डॉलर का योगदान

दिया है। उन्होंने अपना खाने का काँटा नीचे रखा और पूछा: ‘क्या भास्कर, मैंने क्या सुना?’ लिहाजा मैंने डीजी हरि से हुई बात को दोहराया और अपना फोन अध्यक्ष बेरी को दे कर कहा कि लीजिये, मंडल अध्यक्ष से बात करें। उन्होंने अध्यक्ष से बात की और कहा: ‘भास्कर, यह एक चमत्कार है; बिल गेट्स के बाद, एक भारतीय ने दिखा दिया है कि दान कैसे किया जाता है।’

वापस लौटने पर, रेसिन ने भास्कर को घोषणा करने के लिए कहा और “यह मेरा सौभाग्य है और रो ई बोर्ड में घोषणा करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि एक भारतीय रोटेरियन ने दुनिया में टीआरएफ में दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता बनने के लिए 14.7 मिलियन डॉलर दान किए हैं। और यह मेरे जीवन के सबसे गौरवशाली क्षणों में से एक है। तो, भारत बदल रहा है और रो ई में हमें उपलब्धि के क्षेत्र में अपना सिर ऊंचा उठाये रखना है, दिखा दीजिये कि हम कितने उदार हैं और हम कितने कर्मठ हैं।” हॉल में बैठे प्रत्येक व्यक्ति को रोटरी नेतृत्व द्वारा ध्यान से चुना गया है। उन्होंने कहा “कृपया आप में रखे गए विश्वास और ज़िम्मेदारी को न्यायसंगत करें। हम लापरवाह नहीं होंगे; हम पोलियो को लौटने की अनुमति नहीं दे सकते।”

भास्कर ने कहा कि 1988 में जब वैश्विक पोलियो उन्मूलन अभियान शुरू किया गया, तो 125 देशों से हर साल पोलियो के 3,50,000 मामले आते थे। तब से, रोटरी और उसके सहयोगी - यूनिसेफ, WHO, बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, दुनिया की सरकारें आदि - सभी एक साथ - हर साल 2.5 अरब बच्चों का टीकाकरण करने के लिए आगे आए थे। “टीकाकरण के कारण आज वे सभी 16 मिलियन बच्चे चल पा रहे हैं जो अन्यथा लकवाग्रस्त हो गए होते। इसके अलावा, रोटरी ने 1.7 बिलियन डॉलर से अधिक सुपुर्द किए हैं और पोलियो उन्मूलन

अभियान में स्वयंसेवकों ने सक्रिय रूप से लाखों घंटों का योगदान दिया है।”

जिसका नतीजा यह रहा कि तीन देशों - नाइजीरिया, अफगानिस्तान और पाकिस्तान के अन्दर 2016 में पोलियो के 37 मामलों की तुलना में, 2017 में 22 मामले वहीं 2018 में 26 जुलाई तक पोलियो के केवल 13 मामलों की सूचना प्राप्त हुई है। “इसका तात्पर्य है कि हम दुनिया से 99.9 प्रतिशत पोलियो को मिटाने में कामयाब रहे हैं। अधिकांश मामलों में 99.9 प्रतिशत परिणाम निश्चय ही एक उल्लेखनीय सफलता होती है लेकिन पोलियो के

सन्दर्भ में सफलता की दर शत प्रतिशत से ज़रा भी कम हो तो उसे जीत नहीं मान सकते।”

आत्मसंतोष के इस खतरे पर जोर देते हुए कि भारत के पोलियो मुक्त होने के बाद अब हम चैन से बैठ सकते हैं, रो ई निदेशक ने वहां एकत्रित रोटेरियनों को चेतावनी दी कि अगर शीघ्र ही “हम शून्य मामलों तक नहीं पहुँचे तो 10 वर्षों के भीतर ही हर साल दुनिया में 200,000 नए मामले देखने को मिल सकते हैं। रोटरी तब तक चैन से नहीं बैठ सकती नहीं रुक सकती जब तक कि पूरा विश्व पोलियो मुक्त प्रमाणित न हो जाए। इस के लिए

देश में किसी भी मामले की सूचना नहीं मिलने के बाद भी यह प्रमाण पत्र प्राप्त करने में कम से कम तीन साल लगते हैं।”

जब तक विश्व से पोलियो का सफाया नहीं हो जाता यह हमारे लिए चुनौती बना रहेगा, पिछले साल अटलांटा कन्वेंशन में रो ई ने आगामी तीन वर्षों तक प्रति वर्ष 50 मिलियन डॉलर जुटाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। “ध्यान रहे कि हमारे द्वारा जुटाए गए प्रत्येक डॉलर को गेट्स फाउंडेशन 2:1 से मैच कराएगा, जिसका मतलब है की पोलियो उन्मूलन गतिविधियों के लिए कुल 450 मिलियन डॉलर उपलब्ध होंगे, न केवल टीकाकरण के लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व में इसके वायरस का पता लगाने के लिए भी।”

यद्यपि पोलियो को खत्म करने में दुनिया भर में बड़े पैमाने पर कदम उठाए गए हैं, और “अब हम दो ही संग्रह तक सीमित बचे हैं - नाइजीरिया तथा अफगानिस्तान और पाकिस्तान के मध्य की सीमा रेखा, यह क्षेत्र दुनिया के सबसे चुनौतीपूर्ण और जटिल परिवेशों में से एक है,” भास्कर ने बताया। यही कारण है कि रोटरी ने टीकाकरण के नए तरीके इजाद किये हैं, जैसे महिलाओं द्वारा टीकाकरण, धार्मिक नेताओं की भागीदारी, पारगमन आबादी के टीकाकरण पर विशेष ध्यान साथ ही वायरस के किसी भी संकेत के लिए जल आपूर्ति और सीवरेज सिस्टम की विशेष निगरानी और जांच।

“लेकिन, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पोलियो के खिलाफ हमारा नंबर 1 हथियार पोलियो टीका ही है,” उन्होंने कहा कि पोलियो उन्मूलन में हमारे निवेश और अनुभव ने रोटेरियनों को निवारण योग्य बीमारियों जैसे खसरा, रूबेला, हैजा इत्यादि से लड़ने के उपकरण दिए हैं।

यदि “हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे और नाती पोते पोलियो मुक्त संसार में रहें, तो अगले तीन वर्षों तक हमें धन जुटाने के 50 मिलियन डॉलर के वैश्विक लक्ष्य को पूरा करना होगा, हमें अपने विधायकों और नौकरशाहों को लिखकर वित्त पोषण के लिए सरकार पर दबाव बनाना होगा। याद रहे कि अटलांटा में 1.2 बिलियन डॉलर का वादा केवल एक प्रतिज्ञा थी; हमें इसकी अनुवर्ती सुनिश्चित करनी होगी। हमें अपने क्लबों में पोलियो पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।” ■

फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष का संदेश



चलिए पोलियो को खत्म करते हैं

मैं 1987-88 में एक मण्डल गवर्नर था, वह वर्ष जब चार्ल्स सी. केलर रोई अध्यक्ष थे। मंडल गवर्नर के रूप में, मैंने 1988 में फिलाडेल्फिया में आयोजित रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लिया था। वहाँ पर, मैंने सुना कि 125 देशों में लगभग 3,50,000 पोलियो के मामले हैं। लेकिन मैंने कुछ रोमांचक खबर भी सुनी: हमने पोलियो उन्मूलन के लिए 120 मिलियन डॉलर इकट्ठा करने के हमारे लक्ष्य को पार कर लिया था। हमने 219,350,449 डॉलर इकट्ठा किए (और बाद में, लेखांकन समाप्त होने के बाद, यह आंकड़ा 247 मिलियन डॉलर पर पहुँच गया)। हमने क्या जश्न मनाया था। हमने स्वयं के और दुनिया के समक्ष रोटरी कि ताकत को साबित किया था और इस बात को भी साबित किया कि हम एक वैश्विक स्वास्थ्य चुनौती को स्वीकार कर सकते हैं।

आगामी 30 वर्षों में, हमने, हमारे साझेदारों - विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूएस सेंटर्स फॉर डिजीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन, यूनिसेफ, और बिल एंड मेरिलिंडा गेट्स फाउंडेशन - के साथ मिलकर और अधिक धन इकट्ठा किया, राष्ट्रीय टीकाकरण दिवसों का आयोजन किया, और विश्व सरकारों का समर्थन किया। हमारा लक्ष्य हमेशा से हमारे बच्चों से किए गए एक पोलियो मुक्त विश्व देने के वादे को पूरा करना रहा है, और 2017 में, पोलियो के केवल 22 मामलों सामने आए थे।

हमने असाधारण कार्य किए हैं, लेकिन हम जानते हैं कि काम अभी पूरा नहीं हुआ है। एक बार हम पोलियो के मामलों को शून्य तक ले जाए और

पर्यावरण में पोलियो का एक भी वायरस ना मिले, तब तक हमें विश्व को WHO द्वारा आधिकारिक रूप से पोलियो मुक्त घोषित किए जाने का इंतज़ार करना होगा। ऐसा होने के लिए आवश्यक है कि तीन सालों तक किसी भी व्यक्ति या पर्यावरण में पोलियो का एक भी वायरस ना मिले। उन तीन वर्षों के दौरान, हमें बच्चों का टीकाकरण करना होगा और निगरानी करके इस बात को सुनिश्चित करना होगा कि वायरस कभी भी अपनी जड़ें फिर से ना पकड़ पाए।

इस प्रयास में रोटेरियन हमेशा से सबसे आगे रहे हैं - और हम अभी भी हैं। तो, आप क्या कर सकते हैं? सभी को बताइये कि आप रोटरी और पोलियो के बारे में जानते हैं। एक दान कीजिये। अपने क्लब को अपडेट कीजिये और जानिए कि कैसे एक साथ मिलकर आप इस जंग में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हो सकते हैं।

24 अक्टूबर को, हम फिलाडेल्फिया, वह शहर जहाँ इस सब कि शुरुआत हुई थी, में हमारे छठवें वार्षिक विश्व पोलियो दिवस कार्यक्रम में वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल के निर्माण की 30वीं सालगिरह मनाएंगे। एक विश्व पोलियो दिवस अनुदान संचयन समारोह या एक बॉच पार्टी की मेजबानी कीजिये, और उसके बारे में हमें endpolio.org/promote-your-event पर बताइये। अधिक प्रेरणा के लिए, endpolio.org पर जाए।

मुझे आपकी मदद की आवश्यकता है। हमारे वादे को पूरा करने के लिए मैं आपकी मदद पर निर्भर हूँ।

रॉन डी बर्टन

फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

महाराष्ट्र में मुख्य प्रशिक्षक शिक्षकों को तैयार करते हैं

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी भारत साक्षरता मिशन के TEACH को एक बड़ा प्रोत्साहन देते हुये मंडल 3131 के रोटरी क्लब खाड़की ने एक 'मास्टर ट्रेनर प्रोग्राम' शुरू किया है जो निजी स्कूलों और महाराष्ट्र स्टेट काउंसिल फॉर एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (MSCERT) से सम्बद्ध डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट्स ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (DIETs) से अब तक 140 कुशल लोगों को प्रशिक्षित कर चुका है ताकि वे 21वीं सदी की कौशल आवश्यकताओं के हिसाब से कक्षाओं में पढ़ाई को अनुकूल बना सकें।

ट्रेन दी ट्रेनर, अ 21st सेंचुरी एजुकटर प्रोग्राम नामक यह परियोजना एक गैर सरकारी संगठन सोक्रेट्स फाउंडेशन फॉर एनहेन्सड लर्निंग के साथ साझेदारी में 2014-15 में शुरू की गई थी ताकि तकनीक और अभिनव शिक्षण के माध्यम से कक्षा में अध्ययन में आदर्श बदलाव लाए जा सकें, परियोजना समन्वयक चारु माथुर कहती हैं।

नौ स्कूलों के 20 मास्टर ट्रेनर के पहले बैच ने अक्टूबर 2014 से पांच माह में 40-घंटे का एक

संवादात्मक प्रशिक्षण लिया। कार्यक्रम जिसका शीर्षक था *टीचर्स हेल्पिंग टीचर्स - 21st सेंचुरी मास्टर ट्रेनर्स प्रोग्राम* के अंतर्गत, मास्टर प्रशिक्षकों ने सुविधाओं से वंचित इलाकों के दो स्कूलों से अगले 50 शिक्षकों को चुनकर, उन्हें परामर्श दिया और उनको नवीनतम शिक्षण कौशलों में प्रशिक्षित किया।

इस कार्यक्रम ने आगामी वर्षों में ZP स्कूलों के 100 से भी अधिक मास्टर प्रशिक्षकों और 65 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। MSCERT की स्वीकृति के साथ, क्लब सात और बैचों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करने की योजना बना रहा है ताकि 240 मास्टर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा सके जो बदले में 30,000 शिक्षकों को नवीनतम कौशलों से सुसज्जित करेंगे, इस प्रकार राज्य के सभी 33 DIETs कवर हो जाएंगे।

इसके अलावा क्लब MSCERT के बाहर अन्य 100 मास्टर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने की योजना बना रहा है ताकि वे 500 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में सक्षम हो सकें। "हमने इस विशाल परियोजना के

निधीयन के लिए कुछ कॉर्पोरेटों से संपर्क किया है," क्लब के अध्यक्ष विनीत माथुर कहते हैं।

पुणे के DES अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालय की उप-प्राचार्य, ज्योति बोधे के लिए, "कार्यशालाएं आंखें खोल देने वाली होती हैं। यह हमें नए विचारों और धारणाओं के साथ ज़रा हटके सोचने में मदद करती है।"

कार्यशाला का सबसे बहुमूल्य परिणाम शिक्षण, सीखने की प्रक्रिया और विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में 21वीं शताब्दी के कौशलों को आत्मसात करवाने हेतु तकनीक का उपयोग करना है, पुणे के न्यू इंडिया स्कूल की प्राचार्य पूर्णा विद्वान कहती हैं।

MSCERT के निदेशक द्वारा इस कार्यक्रम के फायदों की जानकारी देने वाली एक रिपोर्ट स्कूली शिक्षा एवं खेल विभाग के प्रमुख सचिव को भेजी गई थी, जिन्होंने कहा था कि कार्यशाला राज्य की प्रमुख परियोजना *प्रगत शैक्षणिक महाराष्ट्र* को लागू करने में मदद करती है जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थी कुछ निश्चित अकादमिक मानकों में दक्षता प्राप्त कर सकें। ■

एक 'कहानी को कैसे बोलें' का प्रशिक्षण सात्र।



श्रेय वह लें जिसके आप हक़दार हैं

रशीदा भगत

INPPC चेयर दीपक कपूर



एक जोरदार दलील के साथ, भारत में रोटेरियनों को आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर ने, भारत सरकार के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम को अपनाने के लिए कहा ताकि भारत को खसरा, टी बी, रूबेला जैसी बीमारियों से छुटकारा दिलाया जा सके, आठ दशकों तक, “1905 से लेकर 1980 दशक के मध्य तक, रोटेरियनों ने शौचालयों का निर्माण किया, भूखे को भोजन, निर्वस्त्र को वस्त्र, निराश्रय को आश्रय दिया, बीमारों तक दवाएं पहुंचाई और विश्व शांति का प्रचार किया, लेकिन स्थानीय रोटेरी क्लब को अभी भी रोटी क्लब कहा जाता था। फिर 1980 के दशक के अंत में पोलियोप्लस आया और आम आदमी को अचानक ज्ञात हुआ कि

रोटेरी क्या था। उन्होंने रोटेरी व्हील को पहचाना, और पोलिओप्लस के लिए हमें सम्मान और विश्वसनीयता प्राप्त हुई। आज संयुक्त राष्ट्र गर्व से रोटेरी को अपना सहभागी कहता है और बिल गेट्स जब भी भारत आते हैं वे रोटेरियनो से मिलने पर जोर देते हैं, सौजन्य पोलियोप्लस।”

तब कपूर ने वहां उपस्थित रोटेरियनों से एक प्रश्न किया: “क्या आप जानते हैं कि जिला मजिस्ट्रेट से मिलना कितना मुश्किल था? आज संयुक्त सचिव या सचिव और यहां तक कि मंत्रियों के कार्यालय में भी रोटेरियनों का अभिवादन किया जाता है। रोटेरियन आज अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर और बॉलीवुड की कई अन्य हस्तियों के साथ हाथ मिला सकते हैं, हमारे प्रबल आकर्षणकी वजह से नहीं, बल्कि पोलियोप्लस की वजह से।”

इन सबके बावजूद, रोटेरियन के लिए सबसे अवसाद की बात यह थी कि भारत से पोलियो को खत्म करने का श्रेय रोटेरी को नहीं दिया जा रहा था। “और हमें इसकी मान्यता नहीं मिलती है। परन्तु सच यह नहीं है; बेशक, हमें हर समाचार पत्र या टीवी पर अपनी उपलब्धि का यश नहीं मिलता है। पर क्यूं ? क्योंकि हम उस मान्यता और सम्मान के लिए कुछ नहीं करते; क्या हम प्रेस विज्ञप्ति भेजते हैं? 7 वर्षों तक भारत में पोलियो का कोई भी मामला नहीं मिलना एक बड़ी खबर है, यह इतनी बड़ी खबर है कि भारत को पोलियो मुक्त करने में हर कोई अपनी भूमिका निभाने का दावा कर रहा है।”

कपूर ने विभिन्न मंडलों से आये रोटेरी नेताओं से आग्रह किया “लोगों को बताएं कि



रोटरी ने कल के असंभव को कैसे आज के अपरिहार्य में बदल दिया, कैसे इसने पोलियो उन्मूलन को जन आंदोलन में परिवर्तित किया और इस सपने को सच करने के लिए विशाल धनराशि कैसे जुटाई। रोटेरियनों द्वारा ₹10,000 करोड़ प्रत्यक्ष योगदान से और रोटरी के समर्थन से ₹44,000 करोड़ पोलियोप्लस कार्यक्रम में इस्तेमाल किये गए हैं।”

रोटेरियनों को निम्नलिखित के बारे में भी बात करनी चाहिए।

- निगमों की भागीदारी, और 12 मिलियन डॉलर जो राजश्री बिड़ला ने दिए हैं।
- राजनीतिक नेताओं, नौकरशाहों, धार्मिक नेताओं के साथ रोटरी की वकालत करें।
- रोटरी ने लोगों के सहयोग से पोलियो उन्मूलन को एक जन आंदोलन में बदल

दिया और नेताओं को पूरक टीकाकरण की आवश्यकता के बारे में आश्वस्त किया।

- रोटरी ने एनआईडी और उप एनआईडी की अवधारणा को बढ़ावा दिया और स्वास्थ्य श्रमिकों के झूठे आंकड़ों का पर्दाफाश किया।
- रोटरी ने बच्चों को बूथों में आकर्षित करने के लिए मुफ्त उपहार - गेंदों और सीटी की अवधारणा की शुरुआत की।
- रोटरी ने केंद्र और राज्यों के बीच अंतर मिटाने के लिए एक सेतु की भूमिका निभाई जो एक मत नहीं होते थे।
- रोटरी ने टीका पहुंचाने के लिए रेल, सड़क, ऊंट और नाव का भी प्रयोग किया।
- रोटरी की उलेमा समिति ने मिथकों को तोड़ा और प्रतिरोध को दूर करने में मदद की।
- संपादक को पत्र लिखें और पत्रिकाओं के लिए लघु लेख भेजें।
- स्थानीय निगरानी अधिकारियों के साथ बातचीत करें।
- स्थानीय राजनेताओं या विधायकों से जुड़ें; रोटरी पोलियो बूथ का उद्घाटन करने के लिए उन्हें आमंत्रित करें।
- क्या आपने कभी स्थानीय एफएम चैनल से पोलियो उन्मूलन संदेश प्रसारित करने के लिए कहा है?
- क्या पोलियो उन्मूलन को बढ़ावा देने के लिए आपके क्लब सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं?
- क्या आपने स्कूलों, कॉलेजों में पोलियो उन्मूलन के बारे में बात की है और अपनी कारों पर मण्ड पोलियो नाउफ के स्टिकर लगाए हैं?

7 वर्षों तक भारत में पोलियो का कोई भी मामला नहीं मिलना एक बड़ी खबर है, यह इतनी बड़ी खबर है कि भारत को पोलियो मुक्त करने में हर कोई अपनी भूमिका निभाने का दावा कर रहा है।

बेशक, हमें हर समाचार पत्र या टीवी पर अपनी उपलब्धि का यश नहीं मिलता है।

- क्या आपने अपने मोबाइल पर *End Polio Now* संदेश की रिंग टोन के बारे में विचार किया है?
- क्या आपके मंडल ने मीडिया में पोलियो उन्मूलन विज्ञापनों के लिए भुगतान किया है?

यदि इन सभी सवालियों का जवाब ‘हां’ में है, “तो आप हर संस्थान, मंडल या क्लब में शोर मचाने के हकदार हैं कि भारत से पोलियो मिटाने के लिए रोटरी को कोई श्रेय नहीं मिलता। अन्यथा नहीं। यह सब करें और फिर देखें कि रोटरी का जिक्र होता है या नहीं। पोलियो रोटरी के लिए सम्मान, प्रसिद्धि और प्रतिबद्धता दोनों लाया है, रोटेरियनों में उत्साह और ऊर्जा का संचार किया और भारत को दुनिया के बेहतरीन स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में से एक को विकसित करने में सहायक सिद्ध हुआ है। इस बुनियादी ढांचे का सामर्थ्य और उत्साह खत्म हुआ तो यह कितने शर्म की बात होगी। भारत में रोटरी ने फैसला किया है कि ऐसा होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। कपूर ने कहा, हम इस ढांचे और जोश का लाभ उठाएंगे ताकि हमारी सरकार खसरा और रूबेला से छुटकारा पा सके।”

“हमें प्रतिलिपि बनानी पड़ेगी जिसे पुराने जमाने में कार्बन कॉपी कहा जाता था। व्हाट्सएप के इन दिनों में, आपको केवल कंट्रोल उ और कंट्रोल त या कॉपी और पेस्ट कर फॉरवर्ड करना है। पोलियो के लिए प्रयोग में लाई गई सभी परखी हुई रणनीतियों और प्रयास का उपयोग एमआर टीकाकरण के लिए किया जा सकता है। आपको रोटरी का पहिया फिर से गढ़ने की ज़रूरत नहीं है। अगर हम ऐसा नहीं करते, तो यह हमारे लिए शर्म की बात होगी” ये कह कर उन्होंने समाप्त किया। ■

ब्रेकआउट सत्र में मेल

जयश्री

भारत में WinS लक्ष्य चुनौती कार्यक्रम का उत्साह एवं ऊर्जा इतनी अधिक है कि हमारे मॉडल का पायलट देशों के अलावा भी मेक्सिको, फिलीपींस और युगांडा जैसे देशों में प्रयोग किया जा रहा है। हाल ही में, RIPE बेरी रेसिन ने जब यहाँ कुछ स्कूलों का दौरा किया तो उन्होंने बच्चों द्वारा प्रदर्शित सामूहिक हाथों की धुलाई के प्रदर्शन की सराहना की, टोरंटो सम्मेलन में एक ब्रेकआउट सत्र, जिसका शीर्षक था - *सफलताओं का सहभाजन, चुनौतियों पर विजय और साझेदारों की खोज* - की अध्यक्षता करते हुए TRF न्यासी और रो ई की WinS समिति के प्रमुख सुशील गुप्ता ने कहा।

उन्होंने स्वच्छता कार्यक्रम का एक स्थायी प्रभाव लाने के लिए 'परिवर्तन के एजेंट' रूपी बच्चों के साथ समुदायों में व्यावहारिक परिवर्तन लाने पर जोर दिया। "हमें लोगों को यह बात समझानी होगी कि शौचालय और हाथों की धुलाई की आदत उनके स्वयं के भले के लिए है। स्वस्थ परिवारों का मतलब है अस्पतालों के कम दौरे।"

पांच पायलट देश - भारत, केन्या, होंडुरास, बेलीज और ग्वाटेमाला - उनके स्कूलों में WASH परियोजनाओं को लागू करने हेतु हमेशा साझेदारों एवं दानकर्ताओं की तलाश में रहते हैं। इसलिए, TRF न्यासियों द्वारा दो चरण वाले अनुदान हेतु निधीयन व्यवस्था को स्वीकृति दी गई है, उन्होंने कहा। TRF को प्राप्त हुए 46 आवेदनों में से, 4 सफल हुए और वर्ष के दौरान कुल 1.5 मिलियन डॉलर प्रदान किये गए।

भारत में WinS पर एक अपडेट देते हुए, PDG गणेश भाट ने कहा कि ग्रामीण स्कूलों में शौचालयों एवं हाथों की धुलाई के स्टेशनों की स्थापना के साथ ही, बच्चे अपने घरों में भी इसी प्रकार की स्वच्छता आदतों पर जोर दे रहे हैं। PTA बैठकों के दौरान शिक्षक सफाई एवं स्वच्छता पर अभिभावकों को सलाह देते हैं और सैनिटरी नैपकिन एवं साबुन वितरित करते हैं। उन्होंने शौचालयों और हाथों की धुलाई की सुविधा के लिए निरंतर जल आपूर्ति को सुनिश्चित करने की आवश्यकता को दोहराया। भाट ने एक घटना का जिक्र किया जिसमें एक स्कूल ने अपने परिसर

में शौचालय खंडों के उद्घाटन के बाद, एक बड़ा बोर्ड लगाया जिस पर लिखा था 'धन्यवाद, रोटरी'। इसने बेशक रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि की।

सत्र ने अन्य देशों में भी व्याप्त परिस्थितियों का पता लगाया। उदाहरण के लिए, PDG कार्लोस फ्लोरेस ने ध्यान दिलाया कि होंडुरास में, पानी की कमी, खराब स्वच्छता मापदंड, स्वच्छता मुद्दों पर जागरूकता की कमी और स्वच्छता आपूर्तियों की कमी, WinS कार्यक्रम में बाधा डालती है। जबकि सांता बारबरा में, स्कूल प्रबंधन एवं अभिभावकों के मध्य सहक्रियता ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

मदद के लिए अपील

रोटरी क्लब केन्या की अध्यक्ष मरियम वांकी ने कहा कि केन्या में स्कूलों तक संसाधन समय पर नहीं पहुंचते हैं क्योंकि प्राथमिक शिक्षा मुफ्त है। स्वच्छता के मुद्दे पर किसी कार्यवाही को चुनाव और अधिक विलंबित करते हैं। "जब राजनेता पद के लिए चुनाव लड़ते हैं, तो वित्त चुनाव में खर्च होता है



मिलाप

और आधारभूत संरचनाएं प्रभावित होती है।” स्कूलों में बहुत भीड़ है और पानी एवं स्वच्छता से संबंधित बीमारियों में देश का पांचवा स्थान है। मरियम ने यह कहते हुए अपील की है कि मंडल 9212, जिसमें केन्या, इरीट्रिया, इथियोपिया और साउथ सूडान आते हैं, को “क्लबों एवं कंपनियों से मदद की सख्त आवश्यकता है। हम बेहतर जल सुविधाओं का निर्माण करना चाहते हैं।” हमारे भूजल में फ्लोराइड की मात्रा अधिक है जो बच्चों के लिए असुरक्षित है।

ग्वाटेमाला में, कॉर्पोरेट रोटरी के साथ काम करने को लेकर उत्सुक है, विशेषकर WASH परियोजनाओं के लिए, रोटेरियन डिएगो फर्लान ने कहा।

जब बांग्लादेश के एक प्रतिनिधि ने उनके देश को पायलट में सम्मिलित किए जाने का अनुरोध किया, तो गुप्ता ने कहा कि यह परियोजना 2020 में समाप्त हो जाएगी। उन्होंने कहा, “परंतु आपके क्लब एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करके इस परियोजना को कर सकते हैं। WASH परियोजनाएं केवल पायलट देशों तक ही सीमित नहीं हैं, उन्होंने

आगे कहा कि WASRAG (वॉटर एंड सैनिटेशन रोटरी एक्शन ग्रुप) एक WinS कार्यक्रम को लागू करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करता है।

सत्र का समापन करते हुए, उन्होंने कहा, “इस कार्यक्रम द्वारा पैदा की गई रूचि को देखकर मैं प्रसन्न हूँ। ऐसा कभी कभार ही होता है कि ब्रेकआउट सत्र में कक्ष इतना भरा हुआ हो।”

CSR निधी का संचयन

सत्र, जिसका शीर्षक था CSR और निधि विकास पर उसका प्रभाव, और जिसका संचालन PDG विनय कुलकर्णी ने किया, ने कॉर्पोरेटों को रोटरी के साथ उनकी उद्यम निधियों द्वारा सामुदायिक परियोजनाओं का समर्थन करने हेतु साझेदारी करने के लिए आकर्षित करने का एक परिणाम दिया।

सत्र के अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने पर्यावरण एवं सामाजिक घटकों को ध्यान में रखते हुए परियोजनाएं खोजने के लिए क्लबों को प्रोत्साहित किया। “रोटरी के छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से 5 क्षेत्र भारत की उद्यम नीति में शामिल हैं। इसलिए ऐसे कार्यक्रमों की पहचान कीजिए जो उनके CSR लक्ष्यों को पूरा करने में कॉर्पोरेटों को दिलचस्प लगे और समाज में उन्हें बेहतर लाभ प्रदान कर सकें,” उन्होंने जोर देकर कहा।

PDG शरत चंद्र, मंडल 3110, और राकेश भार्गव, मंडल 3131 के मंडल उद्यम प्रमुख, ने अपने क्लबों में कॉर्पोरेटों को आकर्षित करने की सफलता की कहानियों को साझा किया। जबकि मंडल 3110 ने 175,000 डॉलर के

CSR योगदान के साथ उत्तरप्रदेश के फिरोजाबाद में एक कैथ लैब की स्थापना हेतु RDS प्रोजेक्ट लिमिटेड के साथ साझेदारी की है, वहीं मंडल 3131 ने 300,000 की कॉर्पोरेट साझेदारी की मदद से 5 परियोजनाएं कार्यान्वित की हैं, जिसमें जेस्टेप 2016-17 से दो बार साझेदार बना है और टाटा टेक्नोलॉजीज स्कूलों में उनके ई-शिक्षण कार्यक्रमों में मुख्य भूमिका निभा रहा है।

उन्हें दिखाइये कि उनका पैसा क्या कर सकता है

सफलता के सूत्र को साझा करते हुए, चंद्रा ने कहा कि पहले वह उन रोटेरियनों के पास गए जो किसी कॉर्पोरेट के मालिक थे या उनसे किसी प्रकार से जुड़े हुए थे और कुछ अन्य कॉर्पोरेटों को रोटरी के परिवर्तनकारी कार्यों के बारे में समझाया। “एक कॉर्पोरेट ने रोटरी की एक परियोजना में 2 वर्षों के अंदर अपने योगदान को दोगुना कर दिया है और एक अन्य कंपनी ने वादा किया है कि हमारे द्वारा एक अन्य अच्छी परियोजना के बारे में स्पष्ट किये जाने पर वह उसके योगदान को दोहराएगी।” पारदर्शिता का महत्व सबसे अधिक है। उन्होंने आगाह किया, कॉर्पोरेट प्रमुखों को अवश्य ही यह पता होना चाहिए

कि उनका पैसा कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है। हमने RDS परियोजना के बारे में यह स्पष्ट किया है कि उनके पैसों को कहाँ और किस पर खर्च किया जा रहा है। और

TRF ट्रस्टी और WinS कमेटी के अध्यक्ष सुशील गुप्ता WinS सत्र को संबोधित करते हुए। (बाएं से) PDG कार्लोस फ्लोरस (मंडल 4250), मरियम वानकी, PDG गणेश भट और मेरी जो जीन - फ्रैंकोइस, रो ई की फोकस मैनेजर (शिक्षा और साक्षरता) और WinS लक्ष्य चुनौती सह-संबंधक भी चित्र में शामिल हैं।



बाएं से : टाटा टेक्नोलॉजीज के कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी हेड अनुभव कपूर, PDG विनय कुलकर्णी, TRF ट्रस्टी सुशील गुप्ता, PDG लुईस ए जॉनसन और TRF ट्रस्टी ब्रायन स्टाइलस।



कार्य अवधि के दौरान, हमने सीईओ मदलाल गोयल को हमारे साथ अस्पताल की साइट तक चलने का न्योता दिया जहाँ वह स्वयं देख सके कि गांव के दिल के मरीजों के लिए उनका पैसा कितना बड़ा परिवर्तन ला सकता है,” उन्होंने कहा।

कॉर्पोरेट जगत का अध्ययन

कैसे मंडल 3131 ने CSR साझेदारियां हासिल की, पर अपने सबक को साझा करते हुए, भागव ने कहा कि उनकी टीम ने प्रकाशित आंकड़ों का अध्ययन किया कि कैसे प्रत्येक कंपनी उसके CSR धन को व्यय करती है और किसकी CSR नीति तैयार है। किस प्रकार की परियोजनाओं में उनकी रुचि थी; परियोजना के कार्यान्वयन के लिए क्या उनके पास अपना स्वयं का फाउंडेशन/न्यास था या वह ऐसा उनके आंतरिक विभाग के माध्यम से कर रहे थे। अधिकतर मध्यम आकार की कंपनियों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उनकी CSR परियोजनाओं को करने के लिए अपना स्वयं का विभाग नहीं था। “हमने उन कंपनियों को लक्ष्य बनाया जो उनकी परियोजनाओं को गैर सरकारी संगठनों द्वारा करवाती थी और उन्हें रोटरी के समस्त भारत में विस्तार, हमारी पहुंच एवं नियोजन, स्पष्ट वित्त एवं खर्चों पर नियंत्रण के बारे में समझाया। हमने उनसे कहा कि हम नेतृत्व एवं कौशल लाते हैं और हमसे बेहतर साझेदार और कोई नहीं हो सकता।”

अनुभव कपूर, टाटा टेक्नोलॉजीज के कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी प्रमुख, ने इन “रणनीतियों” को सुनने के बाद नरम मिजाज में कहा, “मुझे नहीं पता था कि इस सब के पीछे एक विपणन रणनीति थी। मैंने सोचा कि रोटरियन सरल, सीधे लोग हैं।” मंडल 3131 के

रोटरियनों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा, “रोटरी के साथ संबद्ध होकर मैं बहुत खुश हूँ। रोटरियन अद्भुत लोग हैं जो जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और कैसे उस काम को पूरा करना है। विभिन्न क्षेत्रों में आप का व्यापक अनुभव आपको समुदाय की जरूरतों को जानने एवं उन्हें पूरा करने में निपुण बनाता है।”

उन्होंने आगे कहा कि अधिकतर कॉर्पोरेट सामाजिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से दाखिल नहीं होते। उनमें से लगभग 65 प्रतिशत रोटरी जैसे किसी गैर सरकारी संगठन को यह कार्य सौंपते हैं। “यदि रोटरी अधिक विचारों एवं साध्य समाधानों को सुझाती है, तो हम आपके साथ काम करने के लिए तैयार होंगे,” उन्होंने कहा, यह कहते हुए कि उनकी कंपनी विश्व भर के अन्य 16 देशों में शैक्षणिक परियोजनाएं कार्यान्वित करने के लिए उत्सुक हैं।

एक सवाल, एक कंपनी यदि परियोजना से हट जाती है तो क्या होगा, के जवाब में गुप्ता ने कहा कि TRF एवं कॉर्पोरेट के मध्य एक स्पष्ट करार होना चाहिए जिसमें परियोजना की विस्तृत जानकारी, अवधि और कैसे धन का इस्तेमाल किया जाएगा का स्पष्ट विवरण हो।

TRF न्यासी ब्रिन स्टाइलस और PDG लुईस ए जॉनसन ने कनाडा एवं ऑस्ट्रेलिया में CSR की संभावना पर रोशनी डाली। विनोद बंसल, भारत में रोटरी CSR साझेदारी के उपाध्यक्ष, ने विश्व भर में अपनाए जा रहे CSR अभ्यासों पर कुछ जानकारी/सुझाव प्रदान किए।

अन्य रोचक ब्रेकआउट सत्र

रोटरी डॉक्टरों के लिए एक सत्र ने पूरी दुनिया में अपनी स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने एवं जिंदगियों को

बचाने के लिए अपनी सेवाओं को विस्तारित करने की संभावनाओं की खोज की। रोटरी क्लब मम्बलम, मंडल 3232, के रोटरियन डॉ एस सुंदर ने उनके क्लब की परियोजना ‘बॉक इंडिया’ के बारे में जानकारी साझा की जिसने तमिलनाडु के हजारों विकलांग लोगों को उनके घरों तक पहुंचकर, कृत्रिम पैरों की मदद से वापस अपने पैरों पर खड़ा कर दिया।

PDG डॉ एन सुब्रमण्यम, मंडल 3011, ने भारत में पादविकृति चुनौती के बारे में बात की। “गावों में बहुत से लोगों को अभी भी यह नहीं पता कि पादविकृति का इलाज संभव है। वे उनके बच्चों को डॉक्टर के पास नहीं ले जाते क्योंकि उनके मन में डर है कि इसका इलाज बड़ा एवं महंगा होगा।” समस्त भारत के अस्पतालों में CURE क्लीनिकों की स्थापना एवं बच्चों में पादविकृति को सुधारने हेतु ऑर्थो पेडिशियनों को प्रशिक्षित करने के लिए मंडल 3011 CURE इंटरनेशनल के साथ साझेदारी कर रहा है।

रोटरी फेलोशिप समूहों एवं उनकी गतिविधियों पर फेलोशिप: दी हिडन जेम ऑफ़ रोटरी सत्र में चर्चा की गई। “आपकी रुचि चाहे जिस भी चीज में हो, आप समान जुनून रखने वाले एक साथी रोटरियन के साथ जुड़कर अपनी सामान्य रुचि के माध्यम से मानवता की सेवा कर सकते हैं,” रोटरी क्लब कलकत्ता साउथ, मंडल 3291, की मधुमिता बिष्णु ने कहा। संगीत प्रेमियों, फोटोग्राफर और जादूगरों से लेकर वकीलों तक, इन समूहों के माध्यम से दोस्त बनाना, परियोजनाओं में सहभागी बनना और जो आपको पसंद है उसके उत्साह को साझा करना मजेदार है, उन्होंने आगे कहा।

चित्र : जयश्री

गोरखपुर में एक हैप्पी स्कूल परियोजना

टीम रोटरी न्यूज

बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण 1960 के दशक में 600 छात्रों वाले अपर प्राइमरी स्कूल, जो उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के जंगल कौरिया जिले में स्थित है, उसमें छात्रों की संख्या घट कर 150 से भी कम रह गई। इसने गोरखपुर, मंडल 3120 के रोटरी क्लब को अपनी हैप्पी स्कूल प्रोजेक्ट में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया।

बच्चे अपनी कक्षाओं में जमीन पर बैठ कर थे, जहां कोई लाइट या पंखों की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। इसके अलावा, स्कूल में शौचालय का भी अभाव था और इसलिए, माता-पिता ने अपने बच्चों को अन्य स्कूलों में भेजना शुरू कर दिया। क्लब के सचिव महाबीर प्रसाद कंदोई ने कहा कि, “हालांकि, शिक्षकों को भरोसा था कि यदि उचित सुविधाएं प्रदान की जाती हैं तो स्कूल में बच्चों लौट आयेंगे और स्कूल अपने खोए हुए गौरव को फिर से प्राप्त कर सकता है।”



छात्रियों के लिए नई बैठने की सुविधा।

शीघ्र ही, जब रोटरियन ने कक्षाओं को डेस्क और बेंच और पंखों से सुसज्जित किया तो छात्रों की नामांकन में 190 तक की वृद्धि हुई। अब परियोजना के दूसरे चरण में, स्कूल में लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग

शौचालय और पर्याप्त जल आपूर्ति के साथ एक हैंडवाश स्टेशन, उपलब्ध कराया जा रहा है। कंदोई जी कहते हैं, “हैप्पी स्कूल प्रोजेक्ट के अधीन शेष प्रावधानों को शीघ्र ही पूरा कर लिया जाएगा।” ■

रोटरी ने मंदिर में प्लास्टिक कतरनी मशीन स्थापित की



नासिक ग्रेपसिटि रोटरी क्लब, मंडल 3030, ने नासिक से 60 कि.मी. दूर स्थित वाणी में माता सप्तश्रंगी के मंदिर के निकट एक प्लास्टिक की बोटल कतरने की मशीन स्थापित की है। सात पहाड़ियों के मध्य स्थित इस मंदिर में साल भर हजारों श्रद्धालु आते हैं और आसपास के क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त रखना एक अत्यंत कठिन काम है, क्लब की पूर्व सचिव, ज्योतिका पाई कहती है। क्लब ने ₹60,000 में दिल्ली की एक निजी फ़र्म से इस मशीन को खरीदा। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मंदिर का दौरा किया था और वह क्लब द्वारा स्थापित प्लास्टिक कतरने की मशीन देखकर प्रसन्न हुये। वह यह देखकर प्रसन्न हुये कि हम पर्यावरण

को संरक्षित करने के लिए कदम उठा रहे हैं, वह कहती है।

एक लीटर की 100 प्लास्टिक बोटलों और 100 किलोग्राम के वजन को डोलने के साथ, यह कतरने की इकाई 220 वोल्ट की बिजली आपूर्ति से एक घंटे में 15-20 बोटल कतर सकती है। “मंदिर के अधिकारी इस बात से प्रसन्न हैं कि वे अब परिसर को बेहतर तरीके से कूड़ा मुक्त रख पा रहे हैं,” क्लब की IPP, अल्का सिंह कहती है। मंदिर प्राधिकारियों द्वारा प्लास्टिक की कतरनों को रिसाइक्लिंग के लिए भेजा जाएगा।

यह उपकरण एक प्रकार का आकर्षण बन गया है और गाँव वाले इसके आसपास जमा होकर इस सुविधा का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। ■

मोरादाबाद के रोटेरियन स्थानीय स्कूलों को संवारते हैं

रशीदा भगत

पीतल के शहर मोरादाबाद में रोटरी क्लबों ने उत्साही रूप से सामान्य स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित किया।

मोरादाबाद से लगभग 22 कि.मी. दूर स्थित सुस्त शहर फ़तेहपुर बिशनोई, जो उत्तर प्रदेश की पीतल नगरी है, में अचानक से स्फूर्ति आ गई है। जिस सड़क पर प्राथमिक विद्यालय और प्रथम बैंक की एक शाखा स्थित है, उस सड़क पर सामान्य तौर पर पायी जाने वाली पॉलिथीन की थैलियों की जगह कपड़े और रेशे से निर्मित मजबूत थैलों, जिन पर प्रमुखता से रोटरी का नाम और लोगो प्रदर्शित है, को देखकर राहगीर चकित है।

रोटरी क्लब मोरादाबाद सेंट्रल, रोई मंडल 3100, के रोटेरियनों ने पिछले हफ्ते यूपी सरकार द्वारा पॉलिथीन की थैलियों के इस्तेमाल पर लगाई

हमने इस स्कूल में WinS को कार्यान्वित किया है; शौचालयों का नवीनीकरण किया है और यहाँ पर जल आपूर्ति भी है। योगा और सामयिक स्वास्थ्य परीक्षण भी है।

PDG अखिलेश कोठीलास



गई रोक की घोषणा को गंभीरता से लिया है, और जल्द ही इन थैलियों को ले जाने के लिए बच्चों, सब्जी विक्रेताओं और अन्य लोगों की भीड़ लग गई।

मैं पीडीजी अखिलेश कोठीवाल, जो इस क्लब के सदस्य है, के निमंत्रण पर और अभी तक जिन क्षेत्रों का कवरेज नहीं हुआ उन क्षेत्रों का कवरेज करने के मेरे वादे को पूरा करने के लिए मोरादाबाद में हूँ। यह एक गरम और उमस भरा दिन है और रोटेरियन मुझे सीधे दिल्ली हवाई अड्डे से पाँच घंटे की यात्रा के बाद प्राथमिक स्कूल ले गए जिसमें लगभग 100 विद्यार्थी पढ़ते हैं। यहाँ पर क्लब ने स्कूलों में

WASH या WinS परियोजना लागू की है और माधुरी गुप्ता, जिन्हें उस शाम क्लब का अध्यक्ष नियुक्त किया जाना है, बच्चों के लिए उनके क्लब द्वारा दान किए गए कुछ साबुन और तौलिये लाई है।

पॉलिथीन की जगह कपड़े के थैले

जब वह बच्चों को हैंड पम्प पर ले जाती है और एक बार पुनः उनके साथ एक धुन पर कैसे हाथ धोये जाने चाहिए का अभ्यास करती है, कोठीवाल समझाते हैं कि क्लब ने इस प्राथमिक शाला को तीन सालों से गोद लिया हुआ है। “हमने इस

स्कूल में WinS के सभी घटकों को कार्यान्वित किया है; शौचालयों का नवीनीकरण किया गया है और यहाँ पर जल आपूर्ति भी है। हम योग कक्षाएँ संचालित करते हैं, सामयिक स्वास्थ्य परीक्षण करते हैं, यूनिफार्म और किताबें वितरित करते हैं और अब हमने एक ई-लर्निंग किट और एक कम्प्यूटर दिया है।”

लेकिन बिजली की कमी के कारण कम्प्यूटर का संस्थापन किया जाना अभी बाकी है। वह आगे कहते हैं, इस परियोजना की शुरुआत तब हुई जब 2014-15 में देवकीनन्दन जैन क्लब अध्यक्ष थे,





रोटरी क्लब मोरादोबाद हेरिटेज के रोटेरियनों द्वारा पर्यावरण अनुकूल बैग का वितरण।

और अब तक क्लब ₹1.5 लाख खर्च कर चुका है। क्लब का तीन और ई-लर्निंग किट वितरित करने का प्रस्ताव है।

प्रथम बैंक के अध्यक्ष रामा नायक, जिन्होंने उनके बैंक द्वारा 20,000 कपड़े के थैलों को दान किए जाने के साथ “शहर को पॉलिथीन मुक्त

रखने” के अभियान का उद्घाटन किया था, कहते हैं कि बैंक जो मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र और एसएमई को ऋण देता है, की अकेले यूपी में 413 शाखाएँ हैं। “रोटरी के साथ साझेदारी में हम इस शहर को पॉलिथीन मुक्त बनाने जा रहे हैं और हमारी सौर ऊर्जा मुहिम, जिसे हमने 10 वर्ष

पूर्व शुरू किया था, के कारण हमारी 60 से अधिक शाखाएँ पूरी तरह सौर ऊर्जा से चल रही हैं। यह शाखा भी एक सौर ऊर्जा शाखा है।”

कोठीवाल पुष्टि करते हैं कि बैंक पहले ही रोटरी द्वारा गोद लिए गए प्राथमिक स्कूल के लिए एक सौर प्रणाली स्वीकृत कर चुका है।

स्वच्छता एवं सफाई

क्लब की अध्यक्ष माधुरी कहती है, “मैं सुनिश्चित करना चाहती हूँ कि ये बच्चे स्वस्थ रहे और पहला कदम सही तरीके से हाथों की धुलाई, स्वच्छता एवं सफाई है। हम स्कूल प्राधिकरण से पूछेंगे कि इन बच्चों को और किस चीज़ की आवश्यकता है। यदि उनके पास जूते नहीं हैं, विशेष तौर पर कड़ाके कि ठंड के महीनों में, तो हम उन्हें वह उपलब्ध करवाएंगे। मैंने आज प्रत्येक बच्चे को दो नैपकिन दिये हैं और उनसे रोजाना एक नैपकिन स्कूल लाने के लिए कहा है।”

अगले दिन मैं मोरादाबाद के आदर्श नगर प्राथमिक स्कूल का दौरा करती हूँ, जो एक मामूली सा दो कमरे की इमारत वाला स्कूल है, और उसमें कामचलाऊ स्वच्छता एवं सफाई सुविधाएं हैं। यह शहर के सबसे गरीब इलाकों में से एक में स्थित है और इसके 80 विद्यार्थी - लड़के और लड़कियाँ



रोटरी क्लब मोरादोबाद सेंट्रल, एक सैनिटरी नैपकिन वैंडिक मशीन, शहर में एक स्कूल को दान करते हुए।
चित्र में PDG अखिलेश कोठीवाल (बीच में) और (उनके बाएं) क्लब के अध्यक्ष अनुज अग्रवाल भी शामिल हैं।



रोटरी क्लब मोरादाबाद हेरिटेज की अध्यक्ष माधुरी गुप्ता बच्चों को हाथ धोने का तरीखा सिखाती हुई।

दोनों - “अधिकतर सबसे गरीब परिवारों... मुख्य रूप से घरों में काम करने वालों, मजदूरों, इत्यादि से है,” क्लब के पूर्व अध्यक्ष तिलोत्तम कोठीवाल कहते हैं। हालाँकि यह क्लब इस स्कूल में WinS लागू करेगा, और इसे एक वर्ष में सुव्यवस्थित करने का वादा करता है, यह क्लब चांदौसी के रास्ते में पड़ने वाले अधिक प्रभावशाली माध्यमिक विद्यालय से भी सम्बद्ध है, जहाँ पर रोटेरियनों ने एक पानी की टंकी स्थापित की है, और एक पेयजल परियोजना को लागू किया है एवं WinS के दिशा-निर्देशों के अनुसार स्वच्छता एवं सफाई सुनिश्चित की है।

मैं सुनिश्चित करना चाहती हूँ कि ये बच्चे स्वस्थ रहे और पहला कदम सही तरीके से हाथों की धुलाई, स्वच्छता एवं सफाई है।

माधुरी गुप्ता

रो ई अध्यक्ष, मोरादाबाद हेरिटेज

अगले चरण में, क्लब सैनिटरी नैपकिन वितरक स्थापित करने जा रहा है।

यह बात कि मोरादाबाद के रोटेरियन WinS कार्यक्रम से प्रभावित हो चुके हैं तब स्पष्ट हो गई जब मैं एक अन्य स्कूल - राम चन्द्र शर्मा कन्या इंटरकॉलेज - का दौरा करती हूँ, जो कक्षा 12वीं तक 750 लड़कियों को शिक्षा प्रदान करता है। इस स्कूल को रोटरी क्लब मोरादाबाद सेंट्रल द्वारा गोद लिया गया है। इसके अध्यक्ष, अनुज अग्रवाल, आग्रह करते हैं कि मैं एक सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीन का उदघाटन करूँ।”

एकदम स्वच्छ विद्यालय

इस प्रभावशाली एवं एकदम स्वच्छ स्कूल में, रोटरी क्लब मोरादाबाद सेंट्रल पहले ही WinS लागू कर चुका है। अध्यक्ष के रूप में मेरे वर्ष के दौरान, “इस स्कूल को साफ एवं सेहतमंद रखने के लिए हम जो कुछ भी मदद कर सकते हैं, करेंगे। आज हमने उन्हें एक सैनिटरी वेंडिंग मशीन दी है। अब उन्होंने आरओ वॉटर प्युरिफ़ाइर की मांग की है और अगले हफ्ते हम एक आरओ मशीन स्थापित करेंगे।”

जैसा वादा किया गया था, उन्होंने पुष्टि की है कि आरओ मशीन पहले ही स्थापित की जा चुकी है।

अग्रवाल आगे कहते हैं की यूपी सरकार की 1090 नामक एक योजना है जिसमें लड़कियों को आत्म-रक्षा में सक्षम बनाने हेतु उन्हें *पावर एंजल्स* के रूप में सशक्त किया जाता है। “हमारी आईजी से चर्चा चल रही है क्योंकि हम कम से कम 100 लड़कियों को आत्म-रक्षा की कला में प्रशिक्षित करना चाहते हैं।”

ये लड़कियां बदले में दूसरों को प्रशिक्षित करेंगी; अपेक्षित है कि एक ‘पावर एंजल’ एक पुलिस अफसर की तरह ही सक्षम एवं प्रभावी होगी। प्रधानाचार्य भारती अग्रवाल रोटरी क्लब मोरादाबाद सेंट्रल और रोटरी का उनके स्कूल के लिए ‘फरिश्ता’ बनने हेतु धन्यवाद करती है। “यदि आज परिसर चमचमाता हुआ एवं इतना स्वच्छ दिखाई दे रहा है,” तो यह रोटरी की वजह से है, वह कहती है।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

चूना के कारण अब किसी के नेत्रों में कोई अंधापन नहीं होगा

जयश्री



क्या आप जानते हैं कि चूना (बुझा चूना) जिसका इस्तेमाल पान को स्वादिष्ट बनाने के लिए किया जाता है, उसके कारण विगत दस वर्षों में लगभग 2,000 बच्चों को अंधापन का सामना करना पड़ा? चेन्नई में शंकर नेत्रालय द्वारा आयोजित ओकुलर सर्फेस और केराटोप्रोथेसिस सम्मेलन में चूना पाउडर द्वारा आंखों के कारण होने वाले व्यापक नुकसान पर प्रकाश डाला गया।

बच्चों ऐसी दुर्घटनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं क्योंकि अक्सर उन्हें ही चूना पैकेट खरीदने के लिए भेजा जाता है। पाउडर को पॉलिथीन के पतले पैकेटों में ₹1 की कीमत पर नुक्कड़ की छोटी दुकानों में बेचा जाता है। जब बच्चों पॉलिथीन के इन पतले पैकेटों के साथ खेलते हुए घर लौट रहे होते हैं, तो वे अक्सर टूट जाती है और पाउडर उड़कर बच्चों की आंखों में चला जाता है। शंकर नेत्रालय की वरिष्ठ सलाहकार डॉ. गीता अय्यर और सम्मेलन के आयोजक सचिव कहती हैं कि अनेकों शल्यचिकित्सा के बाद भी, अधिकांश बच्चों के देखने की क्षमता सामान्य स्तर पर नहीं लौट पाती है।

चूना, जो बहुत अधिक क्षारीय होता है, अम्ल-क्षार के संतुलन को बिगाड़ देता है। यह रसायन आंख की सतह को काट कर धीरे-धीरे नष्ट कर देता है और कॉर्निया, लेंस और ऑप्टिक तंत्रिका को प्रभावित करता है। पीड़ित के अस्पताल पहुंचने तक अधिकांश नुकसान हो गया होता है। पानी में इसकी खराब घुलनशीलता के कारण पानी की अधिक मात्रा से आंख को धोने से भी चूने के कणों को आंख से निकालने में सफलता प्राप्त नहीं होती है। “यह सभी कार्य सामान्य एनेस्थीसिया देकर एक ऑपरेशन थिएटर में किया जाता है। इसके बाद हम एक अम्नीओटिक झिल्ली प्रविष्ट कराते हैं और इसे ठीक होने की प्रतीक्षा करते हैं। घाव के प्राथमिक उपचार के लिए कुछ लोगों को चार शल्यचिकित्सा की आवश्यकता होती है। फिर भी, आंखों की ज्योति केवल आंशिक रूप से ठीक हो पाती है,” उन्होंने समझाया कि इस तरह की चोट एक परिवार को समाप्त कर सकती है। यह स्कूली शिक्षा, आजीविका को बाधित कर सकती है और जीवन भर मनोवैज्ञानिक और कॉस्मेटिक प्रभाव डाल सकती है।

सरकार से अपील

अखिल भारतीय ओपथाल्मोलॉजिकल सोसाइटी, कॉर्निया सोसाइटी ऑफ इंडिया और अस्पतालों जैसे एलबी प्रसाद आई अस्पताल, हैदराबाद; अरविंद आई अस्पताल, मदुरै और एम्स, दिल्ली का प्रतिनिधित्व करने वाले नेत्र-चिकित्सकों और गिंडी के रोस्टी क्लब ने भारत के उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू, जो सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे, उनसे प्लास्टिक के पैकेट में चूना पाउडर की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। अपील में सरकार से हाइड्रोक्लोरिक, सल्फरिक, नाइट्रिक और कार्बोलिक अम्ल की बिक्री को भी प्रतिबंधित करने का भी आग्रह किया गया, जिसका उपयोग महिलाओं पर हमला करने के लिए किया जा रहा है, क्योंकि एसिड पीड़ितों में आंखों का नुकसान भी उतना ही गंभीर होता है और इसके परिणामस्वरूप उन्हें अंधापन का सामना करना पड़ सकता है अगर उनका प्रभावी ढंग से उपचार नहीं किया जाता है।

नेत्र-देखभाल सेवाओं में विशेषज्ञता के लिए डॉक्टरों की टीम को बर्धाई देते हुए नायडू ने कहा कि वह भी शंकर नेत्रालय के एक मरीज थे। “डॉ प्रेमा



चेन्नई में सम्मेलन में भारत के उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडु, तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित, राज्य स्वास्थ्य मंत्री विजय भास्कर, फिशरीस मंत्री डी जयकुमार और डॉ एस एस बद्रीनाथ, अध्यक्ष एमेरिटस - शंकरा नेत्रालया।

पद्मनाभन ने कुछ वर्ष पहले उनके मोतियाबिंद का उपचार किया था; उनकी और उनकी टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद, जिनके कारण आज मेरे नेत्रों की ज्योति लौट आई है और मैं अच्छी तरह से देख सकता हूँ।” उन्होंने गरीबों के लिए नेत्रों की देखभाल निःशुल्क करने के लिए शंकर नेत्रालय के अध्यक्ष-अवकाशप्राप्त डॉ एसएस बद्रीनाथ की भी सराहना की और कहा कि उनके नाम का शुरुआती अक्षर “एस एस” का मतलब “समाज की सेवा” करना है।

उपराष्ट्रपति ने वादा किया कि वे “इस अपील को संसद में उठाएंगे और सभी संबंधित अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करेंगे और घरेलू कार्यों के लिए चूना की बिक्री सुरक्षित पैकेजिंग में सुनिश्चित करने और अम्ल की बिक्री को नियंत्रित करने के लिए नियम बनाने के लिए जरूरी कदम उठाएंगे।” उन्होंने अम्ल का प्रतिशोधपूर्ण और अत्याचारी कार्यों के लिए इस्तेमाल करने की निंदा की।

इस अवसर पर तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारलाल पुरोहित, राज्य स्वास्थ्य मंत्री विजय भास्कर और मत्स्यपालन मंत्री डी जयकुमार भी उपस्थित थे।

रोटरी की भूमिका

गिंडी के रोटरी क्लब, मंडल 3232, शंकर नेत्रालय में ओकुलर सर्फेस विकारों के लिए डॉ जी सीतालक्ष्मी मेमोरियल क्लिनिक को सहयोग उपलब्ध कराता है और रोटरी क्लब अलोरस्टार और पेनांग, मंडल 3300, मलेशिया और टीआरएफ के साथ वैश्विक अनुदान के माध्यम से परिष्कृत उपकरणों और इस्तेमाल में आने वाले सामग्रियों के लिए 48,500 उपलब्ध कराया है। क्लिनिक चूना और अम्ल जैसे रासायनिक पदार्थों के कारण होने वाली बीमारियों के उपचार में पारंगत हैं। यह भारत के दो अस्पतालों में से एक है जो ओओकेपी (ओस्टियो-ओडेंटोक्रोटोप्रोथेसिस) नामक अत्यधिक विशिष्ट उपचार प्रदान करता है जो कॉर्नियल और ओकुलर सर्फेस विकारों के सबसे गंभीर मामलों में दृष्टि को वापस लौटने के लिए मरीज के आंखों में उसके अपने दांत का उपयोग करता है।

क्लब के एक पूर्व अध्यक्ष एल नीलाकांतन कहते हैं, “हम लंबे समय से अस्पताल के साथ निरंतर सहयोग करते रहे हैं।” रोटरी क्लब नाइल्स फ्रेमोंट, मंडल 9170, कैलिफोर्निया और टीआरएफ

के साथ एक वैश्विक अनुदान ने क्लब को 800 नेत्र के मरीजों को शल्यचिकित्सा प्रायोजित करने के लिए 97,500 डॉलर की मदद उपलब्ध कराया है। अस्पताल एक मोबाइल शल्यचिकित्सा इकाई संचालित करता है जो संपूर्ण चेन्नई की यात्रा करता है और ग्रामीणों के दरवाजे पर शल्यचिकित्सा उपलब्ध कराता है।

उन्होंने कहा कि अस्पताल में निर्धन तबके के लोगों को निःशुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है और इसलिए “यह वंचित लोगों को नेत्रों देखभाल की सुविधा प्रदान करने के प्रयासों में सहयोग करने के लिए अन्य रोटरी क्लबों के साथ भी सहयोग करने के लिए तैयार है।”

चूना कैसे आंखों को अंधा कर सकता है, इस विषय पर एक मिनट का वीडियो जागरूकता फैलाने के लिए क्लब द्वारा प्रायोजित किया गया था और सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया था। क्लब द्वारा प्रायोजित एक विज्ञापन को राज्य भर के प्रिंट मीडिया में भी बढ़ावा दिया गया ताकि नेत्रों के लिए चूना और अम्ल के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा हो सके। ■

रोटरी क्लब चांदौसी एक 60 साल पुराने नेत्र अस्पताल को पोषित कर रहा है

रशीदा भगत

एक ऐसे क्लब के रोटेरियनों के एक समूह के समर्पण के बारे में यह बात बहुत कुछ कहती है कि उन्होंने 60 वर्षों के लम्बे समय तक एक परियोजना को पोषित किया है वास्तव में क्लब को अधिकृत किये जाने के वर्ष से ही। यहाँ पर चांदौसी, यूपी में मुरादाबाद से लगभग 40 किमी दूरी पर स्थित एक छोटी सी जगह से एक कहानी है जहाँ पर 1958 में अधिकृत हुए रोटरी क्लब चांदौसी ने उसी वर्ष उसकी नेत्र अस्पताल परियोजना शुरू की थी।

साठ साल बाद, छोटे से नेत्र अस्पताल के रूप में शुरू हुई यह सुविधा अब एक बहु-विशेषता वाले अस्पताल में परिवर्तित हो चुकी है, जिसमें रेटिना सर्जरी जैसी आँखों की विशेष देखभाल के साथ, पैथोलॉजी, फिज़ियोथेरेपी, त्वचा संबंधी रोग, इत्यादि का उपचार भी किया जाता है। अपने पुराने दिनों के बारे में बात करते हुए, क्लब के पूर्व अध्यक्ष हरी शंकर

अग्रवाल कहते हैं कि यह सुविधा उस 5 एकड़ भूमि पर शुरू हुई - जो एक स्थानीय निवासी राज दुलारी देवी द्वारा अपने स्वर्गीय पति, सुन्दरलाल, जो एक स्थानीय जौहरी थे, की याद में दान की गई थी - यह लगभग 11 कि मी की दूरी पर स्थित अलीगढ़ नेत्र अस्पताल के सहयोग से शुरू हुई द्वि-मासिक सुविधा थी। “उन दिनों, मरीज अपनी आँखों की समस्याओं को लेकर आसपास के इलाकों से आते थे, मुझे एक बेहद स्वच्छ, आलीशान और विशाल अस्पताल, जो अब बरेली, बुलंदशहर, बनारस, संभल इत्यादि जिलों के 100 कि मी के दायरे से मरीजों को आकर्षित करता है,” के चारों ओर घुमाते हुए वह कहते हैं।

कुछ सालों बाद, सप्ताह में एक बार नेत्र परामर्श दिया जाता था, और 1980 के बाद यहाँ दैनिक परामर्श और उपचार सेवा शुरू हुई। लेकिन नेत्र सर्जन तब भी बाहर से आते थे। मगर अब इस नेत्र संस्थान

में चार स्थायी नेत्र सर्जन हैं; इसमें दी जाने वाली अन्य चिकित्सीय सेवाओं, जैसे त्वचा उपचार, के लिए डॉक्टर सूरत से आते हैं और त्वचा निरोपण, कॉस्मेटिक सर्जरी और अन्य त्वचा रोगों के लिए भी आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए इलाज उपलब्ध है।

क्लब के अध्यक्ष अनिल कुमार अग्रवाल कहते हैं, आँखों की देखभाल में अधिकतर मामलों मोतियाबिंद की सर्जरी के होते हैं; “हम सालभर में 6,000 मोतियाबिंद ऑपरेशन करते हैं और सर्जरी नवीनतम तकनीक - फैकोमल्लिकेशन - का उपयोग करके की जाती है। (मोतियाबिंद का दो या चार टुकड़ों में पायस बनाया जाता है और फिर चूषण के माध्यम से खींचकर आँख से बाहर निकाल दिया जाता है)।” ओपीडी में, प्रति वर्ष 65,000 मरीजों की एक बड़ी संख्या को देखा जाता है।



रोटरी सुंदरलाल नेत्र
अस्पताल, चंदौसी में
मरीज़।

3 करोड़ का सालाना बजट

क्लब के पूर्व अध्यक्ष सतीश चंद गुप्ता आगे कहते हैं कि पिछले एक साल से, इस नेत्र अस्पताल में रेटिना परामर्श और सर्जरी शुरू की गई है और हर हफ्ते एक रेटिना विशेषज्ञ दिल्ली से यहाँ पर आते हैं। इस अस्पताल में इलाज प्राप्त करने वाले “लगभग 60 प्रतिशत मरीज़ गरीब हैं और हम उन्हें रियायती दर पर उपचार देते हैं। मोतियाबिंद मरीज़ों के लिए IOL (इंट्रा ओक्युलर लेंस) हेतु हम मरीज़ की भुगतान करने की क्षमता के हिसाब से ₹2,600 से 26,000 के मध्य शुल्क लेते हैं।”

यहाँ आने वाले किसी भी मरीज़ का मेडिकल इंश्योरेंस नहीं है, वह आगे कहते हैं।

मंडल 3110 की इस प्रतिष्ठित परियोजना का सालाना बजट ₹3 करोड़ है, और लाभ का उपयोग संस्थान में उपकरण को अपग्रेड करने या रोटरी इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, इस क्लब द्वारा शुरू की गई एक अन्य महत्वपूर्ण परियोजना, में निवेश करने के लिए किया जाता है।

वह कहते हैं कि क्लब कभी भी रोटरी संस्थान के पास किसी भी तरह की निधी के लिए नहीं गया और ना ही कभी वैश्विक अनुदान के लिए कोई प्रयास किया, “क्योंकि हमें कभी भी इसकी जरूरत महसूस नहीं हुई।”

CSR निधि के बारे में क्या; क्या उनके पास कॉर्पोरेट्स को शामिल करने की योजना है, मैंने क्लब के उन रोटेरियनों से पूछा जो मुझे अस्पताल ले गए थे। वे एक सुर में कहते

प्रत्येक बाहरी मरीज़ से मात्र 50 शुल्क लिया जाता है, और यदि कोई गरीब आदमी जिसे सर्जरी की आवश्यकता है हम में से किसी से भी संपर्क करता है, तो हम अपनी जेब से पैसे जमा करते हैं और डॉक्टरों से कहते हैं: कृपया किसी को भी इलाज दिए बिना बाहर ना भेजें।

सतीश चन्द गुप्ता

पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब चंदौसी



हैं, “जरूरत नहीं है; पैसे की कभी भी समस्या नहीं रही।”

बहुत आश्चर्य की बात नहीं है कि क्लब की धर्मार्थ शाखा, जो इन परियोजनाओं को करती है, के पास ₹5 करोड़ का सावधि जमा है! और उनके पास जो ज़मीन है उसका मूल्य ₹5 करोड़ से अधिक है। एक सदस्य स्पष्ट करते हैं कि “अस्पताल या प्रबंधन संस्थान से प्राप्त लाभ से एक भी पैसा क्लब की गतिविधियों, बैठकों या साहचर्य के लिए उपयोग नहीं किया जाता है।”

मैंने एक टिप्पणी यह भी सुनी है कि क्लब के सदस्य इन दोनों प्रतिष्ठित परियोजनाओं के लिए अपना समय, ऊर्जा और विशेषज्ञता देने में इतने मशगूल हैं कि इस 30-सदस्यीय क्लब को किसी नए सदस्य को शामिल करने की वास्तव में कोई रुचि नहीं है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को वहन करने योग्य बनाया गया

प्रबंधन संस्थान, जो पुनः लगभग 7 एकड़ में फैले हुए एक स्वच्छ परिसर में स्थित है, का ब्यौरा देते

हुए, इस वर्ष के क्लब के सचिव, गुप्ता कहते हैं कि यह 2008 में शुरू हुआ था और यह करीब 700 विद्यार्थियों को बी एड, बीएससी, बीबीए, बीसीए, बीकॉम और बीए जैसे पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाता है। यह जानकर खुशी हो रही है कि 700 विद्यार्थियों में से 300 छात्राएं हैं, और वहाँ कुछ कैम्पस भर्तियाँ भी होती हैं। “हमने इस संस्थान को उस ज़मीन पर बनाया है जिसे हमने ₹50 लाख में खरीदा था और इसके लिए धन हमारे सदस्यों द्वारा एकत्रित किया गया था।”

उच्च शिक्षा लेने के इच्छुक उम्मीदवार आसपास के इलाकों से इस रोटरी संस्थान में आते हैं और योग्य गरीबों को शुल्क में छूट दी जाती है। वैसे भी, सालाना शिक्षा शुल्क नाममात्र का ₹5,000 से ₹25,000 के मध्य है।

नेत्र संस्थान को लेकर भविष्य की योजनाओं पर, पूर्व अध्यक्ष और नेत्र संस्थान के सचिव, दिनेश अग्रवाल कहते हैं, “हमने पहले से ही पिछले साल एक ऑप्टोमेट्री संस्थान शुरू कर दिया है और दो-साल के ऑप्टोमेट्री पाठ्यक्रम की पेशकश कर रहे हैं। जहाँ तक आँखों की देखभाल का सवाल है, हम इसे उसके सर्वोत्तम स्तर तक



एक नेत्र जांच प्रगती में।

अस्पताल या प्रबंधन संस्थान से प्राप्त लाभ से एक भी पैसा क्लब की गतिविधियों, बैठकों या साहचर्य के लिए उपयोग नहीं किया जाता है।

ले जाना चाहते हैं। पैसा कभी भी हमारे लिए बाधा नहीं रहेगा।”

गुप्ता गर्व के साथ आगे कहते हैं, “यह इस क्षेत्र का एकमात्र नेत्र अस्पताल है जहाँ एक दिन में 200 से भी अधिक मरीज़ देखे जाते हैं, और इस क्षेत्र के डॉक्टर भी इस बात से सहमत हैं कि इस क्षेत्र में इतनी ज्यादा जड़ भीड़ और कहीं भी देखने को नहीं मिलती। बहुत लोग मुझसे पूछते हैं कि यह अस्पताल कैसा है और मैं उनसे कहता हूँ कि जब तक आप खुद वहाँ जाकर उसे नहीं

देखोगे, तब तक आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि इतना आधुनिक और शानदार सफाई वाला अस्पताल चांदौसी जैसी जगह पर मौजूद भी हो सकता है।”

“प्रत्येक बाहरी मरीज़ से मात्र 50 शुल्क लिया जाता है, और यदि कोई गरीब आदमी जिसे सर्जरी की आवश्यकता है हम में से किसी से भी संपर्क करता है, तो हम अपनी जेब से पैसे जमा करते हैं और डॉक्टरों से कहते हैं: कृपया किसी को भी इलाज़ दिए बिना बाहर ना भेजें।”

“यहाँ तक कि हमारे प्रबंधन संस्थान में भी, हम केवल बीबीए और बीसीए पाठ्यक्रमों के लिए ₹25,000 का सालाना शुल्क लेते हैं। बीकॉम के लिए, शुल्क मात्र 6,000 है, बीएससी के लिए ₹5,000 और बीए के लिए ₹4,000 है। यहाँ पर अनेक रोटेरियन योग्य विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रायोजित करते हैं।”

मात्र 30 सदस्यों वाले इस छोटे क्लब द्वारा की जा रही अद्भुत मानवीय सेवा के विस्मय के

साथ में चांदौसी से जाती हूँ। यूपी जैसे राज्य में वे स्वास्थ्य देखभाल के लिए जो भी कर रहे हैं वह अद्भुत और सराहनीय हैं। लेकिन इससे भी ज्यादा जो सराहनीय है वह है रोटरी प्रबंधन संस्थान में पेश की जा रही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा। विशेषरूप से तब जब आप देखते हैं कि नजदीकी सरकारी कॉलेज में, बीकॉम के पाठ्यक्रम की कक्षाएं एक दशक से भी अधिक समय से आयोजित नहीं की गई हैं। लेकिन दाखिले होते हैं; विद्यार्थी अपने लिए जुगाड़ करते हैं, परीक्षाएं देते हैं और पास होते हैं।

इन रोटेरियनों के समर्पण पर, पीडीजी अखिलेश कोटीवाल टिप्पणी करते हैं: “हालाँकि एक साल से भी अधिक समय से हमारा मंडल पूर्ण रूप से अविभाजित है, फिर भी रोटरी क्लब चांदौसी के रोटेरियन उनकी दोनों परियोजनाओं को उसी जूनून और समर्पण के साथ कर रहे हैं, और वे रोटेरियन डॉक्टरों की मदद से नियमित पोलियो शिविरों को आयोजित करते हैं।”

चित्र: रशीदा भगत

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोटरी इंटरनेशनल दक्षिण एशिया कार्यालय, पुल्मैन/नोवोटेल् कमर्शियल टॉवर,
प्रथम तल, एसेट न. 2, आतिथ्य मंडल, एरोसिटी (आईजीआई हवाई अड्डे के निकट), नई दिल्ली 110037

रोटरी वर्ष 2017-18 की झलकियाँ

भारत में अनुदान संचयन 19.1 मिलियन यूएस डॉलर (बिना जाँचा गया आंकड़ा) के कुल योगदान के साथ भारत ने दुनियाभर के शीर्ष देने वाले देशों में अपना दूसरा स्थान बरकरार रखा।

- मंडल - 3141 कुल देने के मामले में दुनियाभर में नम्बर 2 पर है।
- कुल योगदान में सात मंडलों ने 1 मिलियन डॉलर के आंकड़े को पार किया।
- 15 नए AKS सदस्य जोड़े गए।
- 69 प्रतिशत क्लबों ने रोटरी संस्थान में योगदान दिया।
- मंडल 3080, 3131, 3132 और 3212 से योगदान में 100 प्रतिशत क्लब भागीदारी रही।
- कुल सूची में 535 नए मुख्य दानकर्ताओं (स्तर परिवर्तन सहित) को जोड़ा गया।

- भारत से 22 प्रतिशत सदस्यों ने योगदान दिया। 64 प्रतिशत दाता संख्या के साथ मंडल 3060 प्रथम स्थान पर रहा उसके बाद मंडल 3000 (52%) और मंडल 3142 (51%) रहे।

Top 5 Giving Clubs from India			
Zone	District	Club Name	2017-18 Total Contribution
5	3231	Gudiyatham, Tamil Nadu	\$457,065.19
6A	3292	Central Butwal, Nepal	\$301,000.00
4	3054	Mehsana, Gujarat	\$244,384.67
4	3141	Bombay North, Maharashtra	\$243,779.31
4	3141	Mumbai Downtown Sea Land, Maharashtra	\$232,504.46

एक रोटरी दिवस की मेजबानी कैसे करें



रोई अध्यक्ष बेरी रेसिन ने सभी क्लबों और रोटारियनों को 2018-19 में *ग्रेण्ड बनने* के लिए चुनौती दी है। जिन तरीकों से अध्यक्ष

रेसिन क्लबों को ऐसा करते हुए देखना चाहते हैं उनमें से एक तरीका है रोटरी दिवस की मेजबानी करना। कोई भी क्लब चाहे छोटा हो या बड़ा एक रोटरी दिवस की मेजबानी कर सकता है, और विभिन्न क्लब विचारों, प्रतिभा और संसाधनों को साझा करने के लिए गठबंधन कर सकते हैं। सुझावों के लिए, कृपया यह लिंक देखें <http://www.rotaryleader-en.org/rotaryleader-en/en201807?pg=3#pg3>

हैम्बर्ग सम्मेलन

जर्मनी के हैम्बर्ग में होने वाले 2019 रोटरी सम्मेलन के लिए दिसंबर 15, 2018 तक पंजीयन करें और पैसे बचाएं। पंजीयन लिंक है: <http://www.riconvention.org/en/hamburg/register> पर पंजीयन करें

My Rotary पर पंजीकरण करें

क्लब अधिकारियों को सदस्य संसाधनों तक पहुँचने, रोटरी सम्मेलन के लिए पंजीयन करने और ईमेल सब्सक्रिप्शन का प्रबंधन करने हेतु My Rotary पर पंजीकरण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। क्लब के नेतृत्वकर्ता निम्न चीज़ें भी कर सकते हैं:

- रोटरी क्लब सेंट्रल के माध्यम से क्लब के लिए लक्ष्य निर्धारित करें और उपलब्धियों की सूचना दें।
- क्लब की सदस्यता के रिकार्ड्स और क्लब बैठकों की तारीख या समय को अपडेट करें।

- 31 दिसम्बर तक अगले वर्ष के अधिकारियों की सूची जमा करें।
- क्लब के सदस्यों के ईमेल एड्रेस ऑनलाइन अपडेट करें।
- ऑनलाइन आधिकारिक निर्देशिका को खोजें।

रोटरी-सीएसआर साझेदारी

रोटरी संस्थान अक्टूबर 2016 से अब तक भारत से 1.4 मिलियन डॉलर की CSR निधि प्राप्त कर चुका है।

वर्तमान कॉर्पोरेट दानकर्ता निम्न हैं



Vajpayee...

orator, economic reformer, affable politician



Shakti Sinha

It was an irony of fate that a communicator par excellence as Atal Bihari Vajpayee had to spend almost the last decade of his life in virtual silence. If irony has a macabre element, this was it. Fortunately for Atalji, as he was

popularly known, history and succeeding generations would remember him for his myriad achievements. And for his eloquence. It was often said that the Goddess Saraswati had stationed herself on his tongue because what he spoke was genuine wisdom and not just fine words.

The conventional opinion about him is that he was a conciliator, which he was, but that's not the full picture. On key issues, once he had come to a conclusion, there was no going back. His infinite capacity was to listen, try and understand different points of view and try and



With Pakistan Prime Minister Nawaz Sharif. Also seen in the picture (from R) Jaswant Singh, Sartaj Aziz and Mushahid Hussain.

arrive at a consensus, not at the lowest common denominator. This meant that even junior officers in the course of official briefing could speak up. Because he used to be so absorbed in listening, he gave the impression that he had wandered off. But ever so often, he would ask for a clarification, linking something said to an earlier statement. That meant that no loose statements could be made.

For me, it was doubly difficult as I had to also pay close attention as he would sometime wonder why X had said Y! The mind, ever alert, was sifting information, analysing it and coming to a conclusion. It was normally not instantaneous, but once a decision was made, there was no going back. I remember after the Kargil war he told Yashwant Sinha, the then Finance Minister, to go ahead with taking tough

He was generous and far sighted. When Mulayam Singh as Defence Minister announced the successful conclusion of the Sukhoi deal, Atalji broke parliamentary tradition and praised the government, surprising everyone.



With L K Advani.

decisions, if required, to pay for the war. He was clear that people would understand, if a case was made out.

The empathy factor

I would attribute part of his success as a statesman to the empathy factor. Once, when advised to put greater pressure on Nawaz Sharif, his reply was classic — put yourself in Nawaz Sharif's shoes. There was silence and the issue was not raised again.

To give a further example of his capacity for empathy, once there was a stormy discussion in Parliament over Deve Gowda's decision to hike the price of urea or some other fertiliser. Atalji's reaction was classic. Though he himself had spoken against the hike, he told me in private that

Deve Gowda would not roll back the hike despite the near universal demand. He recognised Deve Gowda's obstinacy, but more than that revealed his astute understanding that the latter was asserting his leadership over his coalition partners.

But he was also very generous and far-sighted. When, during the tenure of the same government, Mulayam Singh as Defence Minister made a statement in the Lok Sabha about the successful conclusion of the Sukhoi deal, he got up, broke parliamentary tradition and praised the government for concluding the deal, which was in the national interest. This praise took not just the members but also the minister by surprise. I remember that a senior BJP parliamentarian

expressed surprise, even bewilderment, to me as to why Atalji had to praise Mulayam Singh's actions! The answer, I guess, was that some things were above party politics.

Economic reformer

After Atalji formed the government in 1998, we had a series of meetings on what should be the priorities of the government on the economy front. India was then facing the adverse effect of the Asian crisis and something concrete had to be done. While we struggled and were thinking of some big announcement that would catch the national imagination, he felt that better roads were the need of the hour.

We were five or six in the room, some with much greater exposure

to economics, but he was the one who recognised the importance of roads as the minimum requirement for solid economic development. That led to the launching of the Golden Quadrilateral and the North-South East-West national highway development programme. Later, the Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana was added to it so that the rural areas did not get left out of the connectivity network. Today we take decent roads for granted and aspire for world-class access-controlled highways that are now coming up. This was unimaginable prior to 1998. This initiative's contribution to the Indian growth story cannot be over-estimated. At that meeting he resisted the populist impulse that we, the less-experienced, offered.

Pokhran blast

The attainment of India's nuclear status was something that he had long dreamed of, and managed



At Pokhran after the successful nuclear tests in 1998. Also in the picture: George Fernandes and former Indian President Abdul Kalam who was then Scientific Advisor to the Prime Minister.

Part of his success as a statesman is attributed to the empathy factor. Once, when advised to put greater pressure on Nawaz Sharif, his reply was classic — put yourself in Nawaz Sharif's shoes.

to succeed too. I remember clearly the tense waiting for the message to come from Pokhran. Adverse winds delayed the tests for a few hours. But when the call came, the room burst into whoops of joy and tears. These were senior leaders in charge of the country — Atalji, L K Advani, George Fernandes, Jaswant Singh, Pramod Mahajan and Brajesh Mishra. When calm settled, it was decided

to call the press. The late Pramod Mahajan scripted it perfectly. A single podium in the middle of the lawns with a national flag next to it. We prepared a short matter-of-fact announcement, Atalji, Pramod Mahajan, a few SPG men and I came out of the house and onto the verandah. The rest of us stayed back, Atalji strode to the podium and very solemnly announced

that India had carried out nuclear tests. It was a moment that he had been waiting for, at least since 1957.

The writer was private secretary to Prime Minister A B Vajpayee and is currently Director of the Nehru Memorial Museum and Library.

Designed by
Krishnapratheesh

इलाहाबाद रोटरी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि वर्ष मना रहा है

वी मुत्तुकुमारण

इलाहाबाद, मंडल 3120 के रोटरी क्लब के प्लेटिनम जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी ने रोटरी व्हील वाले एक कैंसलड स्टैप के साथ एक विशेष डाक कवर जारी किया। समाज के कमजोर वर्गों तक पहुंचने के लिए दशकों से, क्लब ने अनेकों परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करता रहा था।

रोटरी क्लब लखनऊ के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ बैजनाथ व्यास के आह्वान के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ ए एन झा ने एक बैठक बुलाई जिसके परिणामस्वरूप अप्रैल 1943 में क्लब का गठन किया गया। क्लब के प्रारंभिक वर्षों में चार्टर्ड अध्यक्ष न्यायमूर्ति मोहम्मद इस्माइल की मदद उपाध्यक्ष जी एम हार्पर और सचिव कसान भागवत दयाल ने की।

उल्लेखनीय परियोजनाओं में से एक, रोटरी विकलांग केंद्र की स्थापना डॉ जे बी बनजी के नेतृत्व वाली एक टीम ने दो दशक पहले किया था, जिसका उद्देश्य शारीरिक रूप से विकलांग लोगों को अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान करना था। कृत्रिम अंगों फिट करने

के अलावा, केंद्र संपूर्ण उत्तर प्रदेश से आने वाले लाभार्थियों को फिजियोथेरेपी सहित पुनर्वास सेवाओं की संपूर्ण श्रृंखला उपलब्ध कराता है। क्लब के पूर्व सचिव संजीव गोयल कहते हैं, “यह एक दिन में 150 से अधिक लोगों की सेवा करता है।” हालांकि, चार वर्ष पहले, बनजी के निधन के उपरांत, उनके परिवार ने केंद्र की देखभाल के लिए एक सोसाइटी का गठन किया।

गत वर्ष छह नेत्र देखभाल शिविर आयोजित किए गए थे जिसमें 120 से अधिक ग्रामीण मरीजों के मोतियाबिंद का उपचार किया गया था। हाल ही में, सार्वजनिक उपयोग के लिए ₹3 लाख की लागत से दो फ्रीजर दान में दिया गया ताकि मृतक के अवशेषों को दफनाएं जाने तक संरक्षित रखा जा सके।

रोटरी ट्रेफिक पार्क

क्लब के गर्व का प्रतीक, इलाहाबाद में रोटरी ट्रेफिक पार्क का पूर्णरूपेण कार्यालय किया जाएगा क्योंकि इलाहाबाद विकास प्राधिकरण (ADA) ने आगामी

कुंभ मेले के लिए शहर में विभिन्न सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए ₹25 करोड़ की परियोजनाओं को निष्पादित करने का निर्णय लिया है। गोयल कहते हैं, “बच्चों को यातायात के नियमों से परिचित कराने के लिए ₹67,000 की लागत से, हमारे क्लब द्वारा सन 1972 में एक नाले (जल निकासी मार्ग) को एक सुंदर पार्क में विकसित किया गया था।”

गोयल कहते हैं, अभी, ADA ने चार एकड़ में फैले हुए पार्क को अपने कब्जे में लिया है ताकि उसके चारों ओर एक नई चहारदीवारी और सड़क का निर्माण तथा सोलर लाइट स्थापित किया जा सके और एक आधुनिक सिग्नलिंग सिस्टम स्थापित करने के साथ सुरक्षित ड्राइविंग के संबंध में युवाओं को जागरूक बनाने के लिए अनेक छोटी मोटर कारों को शुरू किया जा सके। परियोजना के पूरा होने के बाद, इसे वापस क्लब को सौंप दिया जाएगा। अब तक, ट्रेफिक पार्क ने हजारों स्कूली बच्चों को आधुनिक ट्रेफिक की अवधारणाओं और ट्रेफिक के नियमों मानदंडों का उल्लंघन किए बिना सड़क पार करने के लिए प्रशिक्षित किया है। ■

रोटरी क्लब इलाहाबाद के प्लेटिनम जयंती समारोह में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरी नाथ त्रिपाठी।



ईच बिन अंय हैम्बर्गर

जैनी लाकमनी

जर्मनी में दुनिया के प्रवेश द्वार पर लंगर डाल दें, जहां स्थानीय
महसूस करना सहज और सरल है - जैनी लाकमनी

हैम्बर्ग शहर में पहले दिन मुख्य रेलवे स्टेशन पर घूमते हुए, मेरे पति एंटोन की नज़र एक छोटे से बार में बैठे बियर और धूम्रपान का आनंद ले रहे एक आदमी पर पड़ी। उसके पहनावे से - काली कॉर्डरॉय जैकेट, बनियान, बैल - बोटम पैट और एक मुचड़ा हैट - वह अलग ही दिख रहा था। वह जर्मनी के *वंदगेलेन* में से एक है, एक घुम्मकड़ कारपेंटर है, जो केवल कुछ कपड़े, यूरो और अपने कौशल के बूते पर मध्य युग की

परिपाटी के अनुसार, दो से तीन वर्षों तक दुनिया की यात्रा करता है।

हमारी ही तरह, वह भी हैम्बर्ग में एक आगंतुक है। एक स्वाभाविक व्यक्ति-स्वाभाविक शहर में, एक शहर, हमें अहसास हुआ, कि यही वो शानदार जगह है, हम नहीं जानते थे, जिसकी हम यात्रा करना चाहते थे।

ऐसे समय में जब हर गंतव्य पर्यटकों को लुभाने के लिए अपनेआप को बदलता रहता है, हैम्बर्ग

दृढ़ता से अपने में ही खुश रहता है। निर्विवाद रूप से प्रामाणिक, ये शहर आगंतुकों का स्वागत एक दोस्ताना अहो के साथ करता है! और फिर अपने काम में लग जाता है - और काम ही हैम्बर्ग का व्यवसाय है - इसके आकर्षणों का आनंद उठाना, वो आप पर छोड़ता है।

एल्बे नदी पर स्थित, उत्तरी सागर को जाता शहर का रास्ता, हैम्बर्ग - जो 2019 के रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन की मेजबानी करेगा - यूरोप



का तीसरा सबसे बड़ा बंदरगाह, वैश्विक व्यापार का एक समृद्ध केंद्र है। विशाल बंदरगाह से नदी के उस पार पुल और नहरों के साथ आमंत्रित करता शहर, स्थानीय लोगों का दावा है कि यहां पुल और नहर एम्स्टर्डम और वेनिस से भी अधिक हैं और एक सुरम्य झील जो शहर के खेल के मैदान के रूप में काम आती है। मनोरंजन के विकल्प के साथ, मार्केटप्लाज़ में दुनिया भर के सामान की शॉपिंग भी भरपूर होती है। शनिवार की रात, हर उम्र के लोग, रेपरबेन पर एकत्र होते हैं, जो कभी वेश्यावृत्ति के लिए कुख्यात रहा था, जहां 1960 के दशक की शुरुआत में बीटल्स, द बीटल्स बने थे। और नदी से बाहर निकलते हुए समुद्री यात्रा पर कूच करते जहाज की तरह खड़ा - एल्फिहार्मोनी (एल्फी), ईट और शीशे से बना नया कन्सर्ट हॉल है जिसका प्रभावशाली बाह्य स्वरूप और भीतर बारीकी से किया गया इंटीरियर हैम्बर्ग में महत्वपूर्ण प्रदर्शन की विरासत स्थापित करने के उद्देश्य से बनाया गया, महाद्वीप में किसी की भी अपेक्षा बेहतर प्रमाणित होता है।

ईट और शीशे से बने स्पेइचरस्टड डिस्ट्रिक्ट के गोदाम के पीछे शहर का नया ऐतिहासिक स्थल - एल्फिहार्मोनी।

हमारे मेहमान बने

मोय, मोय- हैम्बर्ग में हैलो कहने का पारंपरिक तरीका है, और आपका स्वागत करने के लिए शहर के रोटेरियन बेताब हैं। आन्द्रेय वॉन मोलर और होलार नाक की अध्यक्षता में हैम्बर्ग एचओसी ने सम्मेलन की हर रात सांस्कृतिक कार्यक्रम की योजना बनाई है, आपको हैम्बर्ग के विभिन्न पहलू दिखाने और स्थानीय रोटेरियनों से परिचय कराने के लिए। अधिक जानकारी और टिकट खरीदने के लिए - ric2019.rotary.defen पर जाएं

शनिवार: शहर के बीचोंबीच स्थित ऐतिहासिक हैम्बर्ग चेम्बर ऑफ कॉमर्स बिल्डिंग में सम्मेलन में आने वालों 2,000 अतिथियों के लिए स्वागत पार्टी की मेजबानी हैम्बर्ग के रोटेरियन करेंगे।

रविवार: प्रसिद्ध राष्ट्रीय युवा बैले, जिसके जनरल निदेशक, जॉन न्यूमियर, अपने 80 वें जन्मदिन और राज्य के ओपेरा ऑफ हैम्बर्ग बैले कंपनी के साथ 46 वें सत्र का जश्न मना रहे हैं, अगले साल सम्मेलन में आने वालों के लिए प्रदर्शन करेंगे (बैलेटोमेनस, ध्यान दें: 45 हैम्बर्ग बैले दिवस 16 जून को सम्मेलन समाप्त होने के कुछ ही समय बाद शुरू होता है।)

सोमवार: एचओसी ने शास्त्रीय संगीत के दो प्रदर्शनों के लिए हैम्बर्ग के शो-स्टॉपिंग नए

लैंडमार्क, एल्फी हॉर्मनी को आरक्षित किया है। अपने वास्तुशिल्प के साथ-साथ इसके ध्वनि-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध, इस इमारत से शहर और इसके बंदरगाह के विस्मयकारी दृश्य भी दिखाई देते हैं।

मंगलवार: स्थानीय क्लब आतिथ्य कार्यक्रम आयोजित करेंगे। जर्मन *गस्तफोएनशाफ्ट* (भय मेहमानवाजी) का लुप्त लें!

सार्वजनिक कार्यक्रम: एचओसी कई मुफ्त सार्वजनिक कार्यक्रमों की भी योजना बना रहा है, 14 दिनों के साइकिल दौरे सहित जिसमें ऑस्ट्रिया से जर्मनी होते हुए हैम्बर्ग तक 200 से अधिक साइकिल सवार होंगे। प्रत्येक दिन, यह समूह पोलियो के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक कार्यक्रम के लिए रुकेगा। हैम्बर्ग और आसपास के रोटेरियन अंतिम 20 किलोमीटर में शामिल हो सकते हैं, यह दौरा शनिवार, 1 जून को राथौस (सिटी हॉल) पहुंचने के बाद संपन्न होगा। राइडर्स को पहले से पंजीकरण की आवश्यकता होगी, लेकिन राथौस स्कायर में, इस दौरे के अंत का जश्न मनाने के लिए हर किसी का स्वागत है। इस बीच, शहर के प्रमुख मार्गों में से एक पर, जनता के सामने बूथ लगा कर, रोटर की छह प्रमुख क्षेत्रों को बताया जाएगा।

इतना सब एक छोटे से शहर में जहां आसानी से पैदल, बाइक से, पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर और - संभवतः विशेषकर - नाव द्वारा घूमना आसान है।

शहर कैसे चलता है यह समझने के लिए हैम्बर्ग के जलमार्गों से परिचित होना ही इस की कुंजी है। कन्वेन्शन की 'मेजबान संगठन समिति' के सह-अध्यक्ष और मंडल 1940 के भूतपूर्व अध्यक्ष होलार नाक ने संक्षेप में कहा: "हैम्बर्ग पानी है, हर जगह।" यहां तक कि हैम्बर्ग का हैम एक पुराने

सैक्सन शब्द से आता है जिसका अर्थ है "भार्शलैंड" यानी दलदली जगह।

अल्स्टर, इस समुद्री शहर का जलीय दिल है, जो 800 साल पहले एक छोटी नदी का प्रवाह रोक कर बनाई गई झील है। इसे दो भागों में बांटा गया है: बिच्चेन अलस्टर, या इनर अलस्टर, और बड़ा औबेनअलस्टर, या बाहरी अलस्टर। इस के बीच, एल्बे, शहर की धड़कन जीवनेरेखा है: हालांकि हैम्बर्ग उत्तरी सागर से 65 मील दूर है, लेकिन शहर के बीच

यह नदी और उसकी नहर अभी भी ज्वार भाटों के साथ ऊपर नीचे होती हैं।

यॉगफर्नस्टीग, एक सीढ़ीदार गलियारा, जो इनर अल्टर के साथ - साथ चलता है, यहां हैम्बर्ग के रईस व्यापारी एक बार अपनी अविवाहित बेटियों के साथ सैर करने आये थे। यह अभी भी शहर के निवासियों का एक ठाठ, वैभव और फैशन का प्रदर्शन स्थल है। एंटोन और मैं एक ओपन-एयर कैफे में बैठ जाते हैं और लाल और सफेद दूर नौकाओं को देखते हैं जो बाहरी अल्टर, शहर की नहरों और एल्बे की ओर जाने से पहले यहां खड़ी होती हैं।

हम बाहरी अल्टर के चारों ओर बने फुटपाथ पर चलने का फैसला करते हैं। लोग मछली पकड़ रहे

हैं, पढ़ रहे हैं, कुत्ते घुमा रहे हैं, धूप स्नान, बाइकिंग और नौकायन कर रहे हैं। यहां निजी मोटरबोट की अनुमति नहीं है, आंद्रेयस वॉन मोलर ने कहा, “जो यहां के निवासी है और कई पीढ़ियों से रह रहे हैं, झील पर नौकायन एक सपना है।” पीडीजी वॉन मोलर, मंडल 1890, नाक के सहयोगी और एचओसी अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।

चार मील से थोड़ा अधिक दूर, झील के किनारे पर कैफे और रेस्तरां छितराये हुए हैं। अल्टरपेले में, एक स्वयं सेवी कैफे बनाया गया है जो पूर्व में एक सार्वजनिक शौचालय था, - सुनने में जितना लगता है यह उससे कहीं अधिक आकर्षक है - हम आगे की योजना बनाने के लिए अपना नक्शा निकालते

हैं। हमारी बगल की टेबल पर बैठी महिला पूछती है कि हम कहां से आये हैं। हमने जवाब देना शुरू ही किया था की हमारे पास एक और व्यक्ति आया और पूछा, “क्या, आपने क्या कहा, आप शिकागो से हैं? मुझे शिकागो से प्यार है।” हमारे नए दोस्तों के पास हमारे लिए सुझाव हैं सेंट जॉर्ज के पड़ोस में: हमें पता चलता है कि ली मेरिडियन होटल के शीर्ष पर बने बार से अल्टर का सबसे अच्छा दृश्य दिखता है, जबकि होटल जॉर्ज की छत सूर्यास्त का आनंद लेने के लिए एक शानदार जगह है। ऐसे दोस्तों का साथ हो तो फिर नशे की आवश्यकता किसे है?

हालांकि इसे जलमार्गों द्वारा परिभाषित किया गया है, हैम्बर्ग पुनरुत्थान की वजह अग्निकांड है। दो प्रमुख अग्निकांड - पहली बार 1842 में, दूसरी बार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान संयुक्त हवाई हमले द्वारा आग - शहर तबाह हो गया था, अपने मध्ययुगीन उत्पत्ति के कुछ निशान छोड़ कर। 13 वीं शताब्दी में तटबंध पर बनाई गई एक छोटी सी सड़क दिश्रासे पर पहली आग लगी; इसके बावजूद, आज इस सड़क पर, पुरानी हैम्बर्ग वास्तुशिल्प शैली में बनी इमारतों का एकमात्र समूह है। उनमें से एक इमारत दिश्रासे 25 में, *जूमब्रैंडनफ्रैंग* नामक एक रेस्तरां है, जिसका अर्थ है वो जगह जहां से आग शुरू हुई; ओल्ड टाउन के दूसरी तरफ एक सड़क है जिसका नाम है ब्रांसेन्डे, या आग की समाप्ति।

युद्ध के द्वारा किया गया विनाश अलग पैमाने का था। जुलाई 1943 में बम विस्फोट के 10 दिनों के दौरान, कम से कम 40,000 लोग मारे गए क्योंकि पूरे क्षेत्र को मिटा दिया गया था। यह समझने के लिए कि क्या हुआ था, हम सेंट निकोलाई स्मारक जाते हैं। हैम्बर्ग के पांच प्रमुख चर्चों में सबसे ऊँचा, सेंट निकोलाई सभी युद्ध पीड़ितों के स्मारक के रूप में अपने बमबारी की स्थिति में यथावत है। इसके तहखाने में एक छोटा लेकिन जबरदस्त संग्रहालय है, जिसके हवाई हमले का विवरण न केवल हैम्बर्ग के लोगों के अनुभवों के दृष्टिकोण के बारे में बताता है, बल्कि स्वयं बम डालने वाले समूह का भी।

जैसे-जैसे हम शहर में घूमते हैं, द्वितीय विश्व युद्ध का एक और अनुस्मारक हमारे सामने पैरों में आता है: *स्टॉलपरस्टाईन*, या मलुदकते पत्थरफा पीतल की ये प्लेटें इमारतों के सामने फर्श पर पत्थरों में गढ़ी हैं जहां यहूदी, रोमा, समलैंगिक, असंतुष्ट और नाज़ियों

जब आप हैम्बर्ग में हैं...

शहर में स्थानीय लोग शौक पूरे करने के लिए निम्न लिखित साझा भी करते हैं

“बाहरी एल्टर पर नौकायन; इल्बचौसी के बगल से मिशेलिन-तारांकित रेस्तरां लैनहौस शेर और ल कैनाई नूवो गाडी से जाना; और नदी किनारे बसे ब्लैकेन गांव के आस पास खोज बीन।”

आंद्रेयस वॉन मोलर

एचओसी सह-अध्यक्ष

“शहर के केंद्र में कैफे पेरिस। उनके पास एक स्वादिष्ट चॉकलेट टार्ट है जो मेरे पिता को पसंद है। मेरी पसंद है शैंपेन के साथ दो का नाश्ता। नार्थ सी और बाल्टिक दोनों एक या दो घंटे की दूरी पर हैं। लुबेक, बाल्टिक पर एक खूबसूरत पुराना शहर है।”

इवेट ग्रेव

रोटरी क्लब ऑफ हैम्बर्ग - विंटरहुड

“बाहरी एल्टर के चारों ओर घूमना; वास्तव में अच्छा है, और आप को बहुत सारे हैम्बर्ग नज़र आते हैं। प्रत्येक 500 मीटर पर एक रेस्तरां या कैफे है। सबसे अच्छा है

पोटोनोवो, एक इतालवी रेस्तरां, झील के शानदार दृश्यों के साथ। हैम्बर्ग एक बंदरगाह शहर है, और मछली हर जगह अच्छी है। फिशरहाइफेन, जर्मनी में सबसे प्रसिद्ध रेस्तरां में से एक है।”

आंद्रेयस वेंडे

एचओसी मार्केटिंग चेयर

“फिशमार्केट रविवार की सुबह लगने वाला एक ओपन एयर बाजार है, यहां मछली, फल, फूल, स्मृति चिन्ह और भोजन इत्यादि मिलते हैं। पार्टी करने का उचित तरीका है शनिवार की रात को सेंट पॉली में और फिर सीधे *फिशफ्रीकेडेलेन* (एक ब्रेड रोल पर फिशबर्गर) के लिए फिशमार्क पर जाएं।

यदि आप बढ़िया जर्मन ब्रेड की तलाश में हैं, तो यूरोपा पैसेज में बैकरगॉस पर जाएं। एक और बेकरी, डाटा बैकहस, एक श्रृंखला है लेकिन यह भी काफी अच्छी है। दालचीनी और चीनी के साथ बने एक मीठ हैम्बर्ग की दावत के लिए *फ्रांज़ब्रोचैन* के बारे में पूछें।”

गुन्डलीमायथक

रोटरी क्षेत्रीय संचार विशेषज्ञ



द्वारा पीड़ित अन्य लोगों ने आखिरी दिन गुजारे थे। प्रत्येक प्लेट को एक व्यक्ति के नाम से उत्कीर्ण किया किया गया है और ज्यादातर मामलों में, जिस वर्ष वह पैदा हुआ या हुई, जब उसे यातना शिविर में भेजा गया और मृत्यु हुई। 1996 में बर्लिन कलाकार गुंटर डेमनिंग द्वारा संकल्पित, ऐसे पत्थर अब पूरे यूरोप के शहरों में पाए जाते हैं।

दिश्रासे से, हम व्यापारीयों के घरों की ऐतिहासिक पंक्ति के पीछे एक संकीर्ण गलियारे से हो कर नहर के लिए चलते हैं। यहां, दुनिया भर के बंदरगाहों से आने वाले सामान नाव से पहुंचाए जाते थे और जिन्हें घर के निचले तल पर संग्रहीत किया जाता था; दूसरी मंजिल पर परंपरागत रूप से कार्यालय और ग्राहकों के लिए एक बड़ा स्वागत कक्ष था, जबकि परिवार ऊपरी मंजिलों पर रहता था। नहरों ने *स्याइशरस्टेड* नामक नज़दीकी जिले को भी परिभाषित किया है जहां ईंट से बने ऊंचे गोदामों या स्याइशर के बीच संकीर्ण

जलमार्ग से, उत्तरी जर्मनी-वेनिस का भावनात्मक मिलन प्रतीत होता है।

स्याइशरस्टेड की 19वीं शताब्दी की समरूपता ने निकट ही स्थित हाफनसिटी की बनावट को प्रभावित किया है। 2030 में समाप्त होने पर, इस नदी किनारे की विकास परियोजना - जिसमें पुराने और नए दोनों तरह के भवनों में स्थित, दुकानें, रेस्तरां, अपार्टमेंट और कार्यालय- रेन्जो पियानो, रेम कुल्हा, फिलिप स्टार्क व अन्य द्वारा डिजाइन किए गए हैं - जिसका आकार सिटी सेन्टर से लगभग दोगुना है।

हाफनसिटी की वास्तुशिल्पीय विशिष्टता पहले से ही विद्यमान है: दो वर्ष पुराना 26 मंजिला एल्फिहार्मो नी कन्सर्ट हॉल। (हैम्बर्ग की कोई भी इमारत शहर के प्रमुख चर्च की मीनारों से ऊंची नहीं है।) भवन का आधार, एक पुनर्निर्मित ईंटों से बना गोदाम, और कांच से निर्मित भवन की बनावट प्रभावशाली रूप से ऊपर उठती लहरों का आह्वान करती लगती है।

इसके मध्य भाग में स्थित छत से शहर की भिन्न भिन्न प्रकृति दिखती है : एक दिशा में, एल्बे का दृश्य जो नदी के दूसरी तरफ 17,500 एकड़ भूमि और पानी पर काबिज, विशाल बंदरगाह पर कतार में खड़ी हुई महाकाय क्रेन हैं; और दूसरी दिशा में, मुकम्मल शहर अपने राथौस (सिटी हॉल), सेंट निकोलाई, माइकलिस, पेट्री, जैकोबी और कैथरीन की मीनारों के साथ।

“हैम्बर्ग एक खास शहर है , बहुत खुला शहर, जर्मनी के आधुनिकतम शहरों में एक,” वास्तुशिल्प और स्वभाव दोनों से नाक कहते हैं। इसका विश्वव्यापी दृष्टिकोण इसीलिये है क्योंकि यह 800 वर्षों तक एक स्वतंत्र बंदरगाह रहा है - और न सिर्फ एक शहर बल्कि एक स्वतंत्र शहर-राज्य। शहर का आधिकारिक नाम, *फ्रेय हनसस्टैड हैम्बर्ग* - हैम्बर्ग का मुक्त और हनसीएटिक शहर - हनसीएटिक लीग में हैम्बर्ग की सदस्यता को याद दिलाता है, हनसीएटिक लीग

Hamburg on the page

Hamburg: A Cultural History by Matthew Jefferies

Every great city deserves a book like this. Concise and full of interesting tidbits, it reaches back to the city's earliest history and covers the waterfront of its neighbourhoods and landmarks, its values and customs, and its people.

Buddenbrooks by Thomas Mann

This 1901 family saga is set in nearby Lübeck, Nobel laureate Mann's native city and, like Hamburg, a Hanseatic port peopled with merchants and traders.

Inferno: The Fiery Destruction of Hamburg, 1943 by Keith Lowe

This deeply researched history describes the Allied firebombing of Hamburg during World War II and its aftermath from the point of view of both the city's residents

and the men who carried out the bombing.

The End: Hamburg 1943 by Hans Erich Nossack

This eyewitness report, written three months after the bombing, reflects with heartbreaking clarity on the event itself and how it reverberated through the survivors' souls.

The World That Summer by Robert Muller

Hamburg in 1936 is the setting for this semi-autobiographical story of a boy whose life is shaped by that time and place.

Baby's in Black: Astrid Kirchherr, Stuart Sutcliffe, and the Beatles by Arne Bellstorf

Fans of the Fab Four can go back in time to the early 1960s, when a group of Hamburg art students befriended the still-unknown lads from Liverpool.

उत्तरी यूरोपीय शहरों का एक संघ, जिसने 1200 से 1500 तक उत्तर और बाल्टिक क्षेत्र के समुद्री व्यापार पर प्रभुत्व बनाये रखा था।

“हम बंदरगाह की वजह से रहते हैं,” वॉन मोलर कहते हैं। “वह जगह है जहां हैम्बर्ग सांस लेता है। यह दुनिया का प्रवेश द्वार है।”

विशाल कार्गो जहाजों को नज़दीक से देखने के लिए नाक और वॉन मोलर, सेंट पाउली के पड़ोस में, एक अस्थायी बंदरगाह से निकलते जहाजों में से एक - लैंड्सब्रॉक देखने की सलाह देते हैं। नाव हमें नदी के छोर पर स्थित ओवलगोन के उपनगर तक ले जाती है, जहां पहाड़ी पर बने हुए विला लोकप्रिय समुद्रतट की ओर देख रहे हैं। हम अल्टोना फिशमार्केट के और यू - 434, एक रूसी पनडुब्बी के नज़दीक से गुजरते हैं जिसे एक संग्रहालय में परिवर्तित किया गया है। वापस नदी की तरफ चलते हुए हमारा सामना सूखी गोदी में खड़े जहाजों से होता है और हम देखते हैं कि अतिविशाल जहाजों पर 20,000 तक कंटेनर लदे हुए हैं। अंततः हम रिकमर रिकमर्स, एक और जहाज संग्रहालय के पास से सरकते हुए और एल्फी के नीचे से घूम कर वापस बंदरगाह की ओर बढ़ते हैं।

सेंट पॉली में, रेपरबेन - एक लंबा आम रास्ता जहां रूसी निर्माता किसी ज़माने में अपना जूट फैलाया करते थे - और एक समय में नाविकों के लिए यहां पब्स बने हुए थे, एक शताब्दी से भी अधिक समय तक; 1848 में जिले में 19 विधिसम्मत वेश्यालय थे। चूंकि 60 के दशक की शुरुआत में बीटल्स यहीं रहते थे और रात्रि क्लब कैसरकेलर और स्टार में बजाया करते थे, इसलिए यह ज़्यादा सम्मानजनक हैं।

“मेरी पत्नी और मैं शनिवार की रात नियमित रूप से रेपरबेन जाते हैं, हम थिएटर जाते हैं,” कहते हैं आन्ड्रे वेंडे, एचओसी के मार्केटिंग अध्यक्ष और रोटरी क्लब अरेंसबर्ग के एक सदस्य। “यहाँ 20 से 40 वर्ष की उम्र के युवा लोगों के लिए शुक्रवार और शनिवार की शाम रेपरबेन जाना एक आदर्श है। वे शनिवार की रात को 10 या 11 बजे निकलते हैं, 5,6 बजे तक पार्टी करते हैं। फिर रविवार की सुबह फिशमार्क जाते हैं- एक तरह से परिश्रमी दिन वाली रात के बिलकुल उलट।”



स्टम्बलिंग स्टोनज़ - युद्ध की मानव लागत का एक और अनुस्मारक जो शहर में कई जगह सन्निहित हैं।

हैम्बर्ग की कुशल सार्वजनिक पारगमन प्रणाली द्वारा हैम्बर्ग शहर में घूमना एक और शानदार तरीका है; हैम्बर्ग सम्मेलन के पंजीकरण में इसके पास भी शामिल होंगे। कन्वेंशन चेयर जॉन ब्लॉट कहते हैं, “आपके पास ट्राम, फेरी, सबकी पहुंच होगी।”

एक ऐसा शहर जो खुद वैश्विक प्रवेश द्वार होने में गर्व महसूस करता है - और जर्मनी के पहले रोटरी क्लब का घर भी यहीं है - दुनिया भर से रोटेरियनों को एक साथ इकट्ठा करने के लिए हैम्बर्ग एक आदर्श स्थान है। सम्मेलन की थीम, *कैप्चर द स्पिरिट*, “आपके जीवन और दुनिया में रोटरी की शक्ति और क्षमता और बल के सन्दर्भ में है। ब्लॉट कहते हैं, हम देखना चाहते हैं कि - रोटरी - एक संगठन के रूप में और क्लबों के रूप में, हम कहां हैं और क्या कर सकते हैं, इस की क्या संभावनाएं हैं। हम चाहते हैं कि आप इसे यहां आ कर अनुभव करें।”

सम्मेलन केंद्र, मेस्सी, शहर के केंद्र में स्थित है - प्रमुख सम्मेलन होटलों से पैदल 10 मिनट की दूरी पर और यहां सार्वजनिक वाहनों से आसानी से पहुंचा जा सकता है। आस पास के इलाके रेस्तरां, कैफे, दुकानों से भरपूर हैं और पार्क भी नज़दीक हैं: बोहेमियन करोलिनेविरल; भव्य रोदरबाम; ऐतिहासिक ज्यूइश ग्रिंडेल, हरियाली से भरा विश्वविद्यालय का इलाका; और हिप शेंजेविरल युवा रोटेरियन और रोटेरेक्टर के लिए एक ज़बरदस्त आकर्षण होंगे।



सेंट निकोलाई चर्च के खंडहार।

ब्रेक आउट सत्र

हैम्बर्ग सम्मेलन दुनिया भर से लोगों को आकर्षित करेगा। रोटरी को एक ब्रेकआउट प्रोग्राम बनाने में मदद करें जो हमारी विविधता का उत्सव मनाये। हम अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इतालवी, पुर्तगाली और स्पेनिश में सत्र की संभावना तलाश रहे हैं। अधिक जानने और अपना प्रस्ताव जमा करने के लिए on.rotary.org/IC19sessions पर जाएं। सभी प्रस्ताव 30 सितंबर तक ऑनलाइन जमा हो जाने चाहिए।

ऐलस्टेड (ओल्ड टाउन) में वापस, मॉन्कबर्गस्ट्रास, जो मुख्य ट्रेन स्टेशन से लगभग राथौस तक चलता है, पूरी तरह से, शहर में खरीदारी का प्रमुख रास्ता है। ऊंचे दर्जे के भव्य बुटीक नेस्टाड कतार में आच्छादित हैं, और यूरोपा पैसेज के पांच मंजिलों में 100 से अधिक दुकानें और रेस्तरां स्थित हैं। इतना कुछ है हैम्बर्ग में की हमारी पांच दिन की यात्रा की समाप्ति पर हमने इसका सिर्फ थोड़ा सा स्वाद चखा है।

जैसे ही एंटोन और मैं शहर से बाहर निकलते हैं, लौटने की रूप रेखा बनाते हुए, आखिरकार हम हैम्बर्ग के आकर्षण को समझ जाते हैं। वो हैं हैम्बर्गर्स, जैसा की यहां के नागरिकों को बुलाते हैं, और ये शहर उन्होंने अपने स्वयं के आनंद और खुशी के लिए बनाया है - हाँ, अपने संग्रहालयों और पार्कों, इसके सिनेमाघरों, रेस्तरां और कैफे के लुत्फ और आनंद को पर्यटक के साथ वे खुशी खुशी बाँटते हैं।

वॉन मोलर कहते हैं, “यह एक आकर्षक और मनमोहक शहर है, लेकिन यहां के लोग संकोची और विनम्र हैं। हम दिखावा नहीं करते। हम कहते हैं, मभगवान कसम, हो सकता है आपको यह पसंद आ जाए, एक नज़र देखिये तो सही।”

जून 2019 आ रहा है, मैं भी आपको यही सलाह दूंगा।

(लेख के नाम का अर्थ है ‘मैं दिल से हैम्बर्ग वासी हूँ।’)

**2019 रोटरी कन्वेंशन (जून 1-5)
के लिए पंजीकरण
www.riconvention.org पर करें।**

चित्र : सैमुएल जुडर

© The Rotarian

उन्हें चलने योग्य बनाना

जयश्री

जब मैंने उनसे पूछा कि उन्हें पुनः अपने पैरों पर खड़े होकर कैसा महसूस हो रहा है तो कुप्पुसामी (70), जो उनकी पत्नी के साथ थे, का झुर्रियों वाला चेहरा एक प्यारी सी मुस्कराहट के साथ खुशी से एकदम चमक उठा। अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए, वह कहते हैं, “अब मुझे इसे और अधिक परेशान नहीं करना पड़ेगा। अब उसे भी राहत मिलेगी क्योंकि अब मैं अपने सभी कार्य खुद कर सकता हूँ।” कुप्पुसामी रोटरी क्लब कोयम्बटूर मिडटाउन, मंडल 3201, द्वारा चलाए जाने वाले कृत्रिम

अंग केंद्र पर अपना बायाँ पैर फिट करवाने के लिए आए थे। नारियल तोड़ते वक्त पेड़ से गिरकर बुरी तरह से घायल होने के कारण उन्होंने अपना पैर खो दिया था।

यह केंद्र, जिसे रोटरी मिडटाउन श्री गोपालदास किकाणी कृत्रिम अंग केंद्र कहा जाता है और जिसकी स्थापना 2004 में हुई थी, एक विशाल परिसर है जहाँ पर मरीज की जरूरत के अनुसार अंग तैयार किये जाते हैं और तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और पांडिचेरी में जरूरतमंदों को मुफ्त में उपलब्ध कराए जाते हैं।

1985 में एक तीन-दिवसीय पोलियो सुधारात्मक सर्जरी शिविर में 300 बच्चों के इलाज के बाद इस केंद्र का उदय हुआ। “हमने बच्चों को कैलिपर्ज़ प्रदान किये थे और तब हमें एहसास हुआ कि इस तरह के केंद्र की कितनी अधिक आवश्यकता है,” इस 45-वर्ष पुराने क्लब के चार्टर सचिव सुरेश गोकुलदास कहते हैं।

अन्य रोटरी क्लबों, गैर सरकारी संगठनों और कॉर्पोरेटों के सहयोग से, शिविरों को नियमित रूप से आयोजित किया जाता है और क्लब अब तक 18,500 अंग वितरित कर चुका है।

बाएं से : सुरेश गोकुलदास, प्रगाश अंगप्पन,
सी के त्यागराजन, वल्लल, केतन देसाई और बाबु
कण्णन कृत्रिम अंग केन्द्र में एक लाभार्थी के साथ।



“हम में से प्रत्येक को बहुत अधिक सुकून मिलता है जब हम इतने सारे पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को देखते हैं जो अब तक केवल एक व्हीलचेयर या बिस्तर तक ही सीमित थे, और जो धीरे-धीरे चलते या रेंगते हुए आए थे, अब स्वतंत्र रूप से बिना किसी सहारे के चलने में सक्षम हैं और सबसे अधिक महत्वपूर्ण, इससे उनकी गरिमा उन्हें पुनः प्राप्त हो गई,” रोटेरियन बाबू कचन कहते हैं। उन्होंने 2005 में भारत से बाहर फिलीपींस और श्रीलंका में, संबंधित सरकारों के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करके वहाँ भी ऐसे केन्द्रों की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

परियोजना - वॉक अगेन - एक न्यास, जिसके अध्यक्ष गोकुलदास हैं, के माध्यम से पूरी तरह से क्लब के सदस्यों द्वारा निधिबद्ध की जाती है, और इसका संचालन एक 12-सदस्यीय समिति द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष वीरेंद्र चोपड़ा हैं, प्रगाश अनगप्पन इसके सचिव हैं और एस. राजशेखर शिविरों के आयोजन में समन्वय करते हैं। तत्कालीन जिला कलेक्टर एन. मुरुगानंदम ने शहर के बाहरी भाग में 22 सेंट जमीन स्वीकृत की थी, और गोपालदास किकाणी ट्रस्ट ने इसके प्रबंध निदेशक तुषार किकाणी की देखरेख में इस केंद्र के लिए इमारत के निर्माण को प्रायोजित किया जिसमें एक विनिर्माण इकाई, एक चाल प्रशिक्षण और प्रतीक्षा कक्ष और एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र शामिल हैं।

रोटेरियन और आम जनता जन्मदिन, सालगिरहों आदि जैसे विशेष अवसरों पर कुछ कृत्रिम अंगों को प्रायोजित करते हैं। “यह कहने में अच्छा महसूस होता है कि आपने पांच लोगों को उनके पैरों पर खड़ा कर दिया या दस लोगों को उनके पैरों पर खड़ा कर दिया बजाए यह सुनने के कि आपने इतना सारा पैसा दान दिया है,” अनगप्पन कहते हैं। एक जैन परिवार द्वारा एक अंग दान कार्यक्रम को प्रायोजित करने और उसमें भाग लेने के एक अवसर को याद करते हुए उन्होंने कहा कि वे बहुत भावुक हो गए थे जब एक लाभार्थी उसका पैर फिट होने के बाद जाँच करने के लिए कुछ कदम चला, और दानकर्ता के पैरों में गिर गया।

“अंगों के निर्माण के लिए हम हैदराबाद से मंगवाई गई निर्यात गुणवत्ता वाली HDPE ट्यूब्स का इस्तेमाल करते हैं। यह मजबूत है और यदि अच्छी

यह कहने में अच्छा महसूस होता है कि आपने पांच लोगों को उनके पैरों पर खड़ा कर दिया या दस लोगों को उनके पैरों पर खड़ा कर दिया बजाए यह सुनने के कि आपने इतना सारा पैसा दान दिया है।

प्रगाश अंगप्पन

सचिव, मोबाईल कृत्रिम अंग परियोजना

तरह से उपयोग किया जाए तो यह कम से कम चार सालों तक चलती है। यह बेहतर लचीलापन प्रदान करती है और वजन में हल्की होती है,” अंग की कार्यप्रणाली को समझाते हुए रोटेरियन केतन देसाई कहते हैं। जिन्हें पूर्ण पैर की आवश्यकता होती है उनके लिए घुटनों के जोड़ों पर लॉक की व्यवस्था है। इससे व्यक्ति को लॉक खोलकर पालथी मारकर बैठने में सुविधा होती है और जब उसे खड़े रहना या चलना हो तब पुनः लॉक लगा सकता है। “इन अंगों की सुन्दरता यह है कि यह एक व्यक्ति को कोई भी गतिविधि करने से नहीं रोकती। बल्कि वह साइकिल भी चला सकता है,” एक लाभार्थी कचैयाह को याद करते हुए कचन कहते हैं, जिसने पांडिचेरी से लेकर चेन्नई तक कृत्रिम पैर की मदद से साइकिल चलाई थी।

केंद्र पर तीन साल की छोटी उम्र तक के बच्चों को भी कृत्रिम अंग लगाए गए। यह जन्म के समय विकृति के कारण या गंभीर दुर्घटना के कारण हो सकता है, वह समझाते हैं। अब यह केंद्र प्रमस्तिष्क पक्षाघात के मरीजों को सहायक उपकरण और गति प्रशिक्षण प्रदान करने एवं जरूरतमंदों को ऊपरी कृत्रिम अंग, कैलीपर्ज और अन्य सहायक उपकरणों को प्रदान करने में विविधता प्राप्त कर चुका है, वह आगे कहते हैं।

विकलांग व्यक्तियों के संयोजन पर वह कहते हैं कि दो वर्ष पहले तक मधुमेह रोगी अधिक थे, लेकिन बाद में, उन्हें पैरों की आवश्यकता वाले कई दुर्घटनाग्रस्त लोग मिले।

क्लब द्वारा निष्पादित छह मिलान अनुदानों में से, 85,000 डॉलर के चार अनुदान, विशेषरूप से विभिन्न जगहों पर कृत्रिम अंग प्रदान करने के लिए निष्पादित किये गए थे। उनके रोई अध्यक्ष रहने के दौरान विल्फ विल्किंसन द्वारा किए गए केंद्र के दौरों को याद करते हुए कचन कहते हैं कि “वह



प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, मनीला में एक लाभार्थी के साथ।

हमारी परियोजना की व्यापक पहुँच से अभिभूत थे। झंझर देखकर बहुत खुशी हुई कि रोटरी शारीरिक रूप से विकलांग सैकड़ों लोगों को पुनः उनके पैरों पर खड़ा कर सकी। बधाईयाँ, यह उन्होंने हमारी आगंतुकों की पुस्तक में लिखा था।” कई वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं ने केंद्र पर उनके दौरों को दर्ज किया है।

कचन ने फिलीपीन्स में क्लब के केंद्र पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरों पर प्रकाश डाला और कहा कि उन्होंने हाल ही में इस प्रयोजन के लिए 200,000 डॉलर दिए हैं।

हालाँकि यहाँ प्रत्येक अंग बनाने की लागत ₹3,000-4,000 आती है, जबकि फिलीपींस में परिवहन लागत शामिल होने के कारण इसकी लागत ₹50,000 पड़ती है। फिलीपींस में कृत्रिम अंगों की मांग बहुत अधिक है इसलिए हमें सुझाव दिया गया है कि जब भी हम वहाँ पर शिविर आयोजित करें तो उसका प्रचार ना करें। “हम सरकारी अस्पताल के रिकॉर्ड देखते हैं और वहाँ एक लंबी प्रतीक्षा सूची होती है। हर जगह लोगों को अंग मुफ्त में दिए जाते हैं और हम उनसे कोई भी पंजीयन या मरम्मत



हरिहरन (7) 18,500 वॉ और उम्र में सब से छोटा लाभार्थी।

शुल्क नहीं लेते,” गोकुलदास कहते हैं, जो अब तक देश में 7,000 अंग वितरित कर चुके हैं। यह केंद्र श्रीलंका में युद्ध और खान में पीड़ित हुए लोगों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है और अब यह कम्बोडिया भी पहुँच रहा है।

व्यावसायिक समर्थन

क्लब के सदस्य स्वयं को केवल कृत्रिम अंग प्रदान करने तक सीमित नहीं रखते, वे यह भी सुनिश्चित करते हैं कि लाभार्थी लाभप्रद रूप से नियोजित भी हो। वे नौकरी के अवसरों के माध्यम से आर्थिक पुनर्वास प्रदान करते हैं और उन्हें माइक्रो-क्रेडिट देते हैं। इन लाभार्थियों में से कई चौकीदार, द्वारपाल और मुंशी के रूप में नियुक्त किये जाते हैं। “छत्तीसगढ़ में सेना के एक जवान, जिसने एक खदान विस्फोट में अपना पैर गंवा दिया था, ने एक कृत्रिम पैर फिट हो जाने के बाद हमें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। वह

आत्मनिर्भर होकर बहुत खुश है। वह एक पहरेदार के रूप में कार्यरत है। इसके पहले उसके परिवार ने ही उसके साथ दुर्व्यवहार किया था,” कण्णन ने बताया। यहाँ तक कि उनमें से कुछ साइकिल चलाते हुए दूध, समाचारपत्र भी वितरित करते हैं।

अन्य परियोजनाएं

1973 में अधिकृत किया गया यह क्लब अन्य विभिन्न परियोजनाओं में व्यस्त है जिनमें जराचिकित्सा सेवा, बच्चों के लिए न्यूरो सर्जिकल पुनर्वास कार्यक्रम जिसके अंतर्गत क्लब द्वारा तंत्रिका संबंधी विकारों का इलाज करना, मादक द्रव्यों के व्यसन से मुक्ति शिविरों का प्रायोजन करना, जनजातीय गाँवों में एकल विद्यालय स्कूलों को गोद लेना और बच्चों में कुपोषण को संबोधित करने के लिए पौष्टिक दलिये का प्रायोजन करना शामिल है। क्लब 2004 से भारतीय चिकित्सा संस्थान के सहयोग से महावीर ब्लड बैंक भी चला रहा है। ■

केरल को आपकी मदद की आवश्यकता है

रेखा शेड्री

अगस्त में, भगवान के अपने देश के सुंदर तटीय प्रदेश केरल में सौ वर्षों में सबसे अधिक वर्ष होने की वजह से गंभीर बाढ़ आई गई थी। गंभीर समुद्री कटाव के कारण बहुत अधिक क्षति हुई है। इस प्राकृतिक आपदा में 600 से अधिक घर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए और अनेक घर बाढ़ की पानी में डूबे हुए हैं। बाढ़ के कारण डूबने से अनेक लोगों की मौत हो गई और प्रदेश में सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है।

बाढ़ की वजह से केरल के चावल का कटेरा कहे जाना वाले कुन्ननाद के निचले इलाकों में अनेक घर जल-प्लावित हो गए। पहाड़ी क्षेत्र में स्थिति इडुक्की में भूस्खलन होने की भी सूचना प्राप्त हुई है, जहाँ इडुक्की बांध का पानी बांध के ऊपर से बह रहा है।

वैक्कोम और कोट्टयम में रोटैरियन बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए पहुंचे। वे बाढ़ प्रभावित लोगों तक पहुंचने वाले पहले बचाव कार्यकर्ता थे और उन्होंने वास्तविक राहत और बचाव कार्य के दौरान, बाढ़ के



बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री वितरित करने के लिए रोटैरियन एक नाव पर सवारी करते हुए।

पानी से होकर बाढ़ से घिरे लोगों तक पहुंचने, उन्हें स्वच्छ पेयजल भोजन, दवाएं और अन्य बुनियादी जरूरत की वस्तुएं उपलब्ध कराने के लिए नौकाओं और वैनो का इस्तेमाल किया।

रोटरी क्लब वैक्कोम के अध्यक्ष राजू थॉमस याद करते हुए कहते हैं: “जब बाढ़ आई, तो लोग अस्थायी शिविरों में चले गए। हमारे क्लब ने पहल की और उन्हें जरूरत की वस्तुएं तत्काल उपलब्ध कराईं। बाढ़ के कारण लोग काम पर जाने में असमर्थ हैं, और दैनिक मजदूरी कर अपनी आजीविका चलाने वाले लोगों के समक्ष स्थिति अत्यंत गंभीर है। हमें चावल, गेहूं और

दालें जैसे खाद्य पदार्थों और दवाइयों को उपलब्ध कराने के लिए मदद की आवश्यकता है।”

कृपया उदारतापूर्वक योगदान करें; मंडल 3211 के गवर्नर, ई के ल्यूक से 9895045650 ; rtn.ekluke@outlook.com पर संपर्क किया जा सकता है। योगदान डीजी ए वेंकटाचलपति, मंडल 3201 को भी भेजने के लिए : 9443069686 ; ईमेल : pathy.av28@gmail.com या डीजी ई के उम्मेर, मंडल 3202: 9847025578; ईमेल : dr.ckummer@gmail.com पर संपर्क करें।

लेखक मंडल 3232 की पूर्व DG हैं।

रोटरी ने कैंसर धर्मशाला को सुदृढ़ बनाया

टीम रोटरी न्यूज़



चित्र में कैंसर रोगियों को भोजन परोसा जा रहा है।

दादर में श्री गजगे महाराज कैंसर धर्मशाला के पांच मंजिले भवन में आवासीय सुविधा की बहुत अधिक कमी ने रोटरी क्लब बॉम्बे क्लिन सिटी, मंडल 3141 का ध्यान अपनी ओर खींचा, और इसके परिणामस्वरूप क्लब ने ₹4.5 करोड़ की लागत से 30 कमरों वाले दो और उपरी मंजिलों का निर्माण करवाया गया।

धर्मशाला में टाटा मेमोरियल अस्पताल में लंबे समय से उपचार करवाने वाले मरीजों और उनके देखभाल करने वालों को आवासीय सुविधा प्रदान करता है। क्लब के

पूर्व अध्यक्ष मुरारी अग्रवाल कहते हैं, सुविधाओं के विस्तार के परिणामस्वरूप अब धर्मशाला 60 और अधिक मरीजों और 120 रिश्तेदारों आवासीय सुविधा प्रदान करने में सक्षम है।

वी केयर फाउंडेशन की वंदना गुप्ता ने कैंसर केंद्र का विस्तार करने का विचार दिया। विस्तार कार्य के लिए अनुमति प्राप्त करने के अलावा, क्लब को भवन के लिए संपत्ति कर और नगर पालिका बकाये राशि के मद में कुल मिलाकर ₹1.5 करोड़ के भुगतान सहित अनेकों चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

रोटेरियन रमेश पोद्दार और सियाराम सिल्क मिल्स के पवन पोद्दार ने निर्माण कार्य के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराया, वहीं सामाजिक समूह श्री शंकर हिंदू मिशन और हरि ओम गुप ऑफ फ्रेंड्स, घाटकोपर ने नगर पालिका के बकाये और लेवी का भुगतान किया। हरि ओम गुप के जयेश बोटदरा और अरुण गारोडिया ने क्लब को भवन के विस्तार के लिए आवश्यक स्वीकृतियां और अनुमतियां प्राप्त करने में मदद की। रोटेरियन सेलेश माहिमतुरा, जो एक

स्ट्रक्चरल इंजिनियर है, ने निर्माण कार्य शुरू किया।

ऑडिट रिपोर्ट से यह स्पष्ट हुआ कि 30 वर्षीय भवन के कॉलम और बीम कमजोर थे और दो और मंजिलों का भार सहन करने में सक्षम नहीं थे, इसके बाद पोद्दार बंधुओं ने भवन की संरचनात्मक शक्ति को मजबूत करने के लिए ₹65 लाख की अतिरिक्त लागत को संभालने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लिया।

अग्रवाल कहते हैं, सितंबर तक मरीजों के लिए विस्तारित भवन खोल दिया जाएगा। ■

मंडल 3150 का WASH युद्ध

किरण जेहरा



रोटरी की स्कूलों में थ-डक लक्ष्य चुनौती पहल के अंतर्गत, मंडल 3150 के दस स्कूलों में अब स्वच्छ शौचालय और स्वस्थ अध्ययन परिवेश है। “जहाँ भी WASH पहल लागू की गई है वहाँ छात्राएं अब नियमित रूप से स्कूल जाने लगी हैं,” पीडीजी रवि वाडलामानी कहते हैं, आगे यह कहते हुए कि, मंडल ने TRF और अंतर्राष्ट्रीय रोटरी क्लबों के साथ साझेदारी में, पूरे आंध्रप्रदेश के

सरकारी स्कूलों में 60,000 डेस्क और बेंच वितरित किये हैं।

स्कूलों में WASH लक्ष्य चुनौती कार्यक्रम के माध्यम से, पांच पायलट देशों - बेलीज़, ग्वाटेमाला, होंडुरास, भारत, और केन्या - के रोटेरियन स्कूलों, रोटरी क्लबों और दुनियाभर के मंडलों के साथ बुनियादी शिक्षा, जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य में प्रमुख उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए साझेदारी में कार्य कर रहे हैं।

रोटरी क्लब पाचुर संद्रल द्वारा आंध्रप्रदेश के उप्पुतूर और वीरन्नापालेम गाँवों के दो स्कूलों में थ-डक परियोजना लागू की गई। प्रत्येक स्कूलों में 200 विद्यार्थी हैं। क्लब ने दोनों स्कूलों में लिंग-पृथक शौचालय खण्डों का निर्माण किया, और स्कूल प्रबंधन समिति को शिक्षण गुणवत्ता को बेहतर करने हेतु प्रशिक्षित किया। एक स्कूल में रिवर्स ऑस्मोसिस प्लांट स्थापित किया गया। “स्कूल में बच्चे व्यावहारिक परिवर्तन और पर्यावरणीय मुद्दों के

प्रति अति संवेदनशील होते हैं। एक ही समय में जिम्मेदारी का एहसास करवाने और व्यावहारिक परिवर्तन की शुरुआत करने में WinS हमारी मदद करता है,” क्लब के पूर्व अध्यक्ष पी चंद्रशेखर राव कहते हैं।

पंडारीपुरम के रोटरी क्लब के रोटेरियनों ने गणपावरम गाँव के SKBR हाई स्कूल में शौचालय और सामूहिक हाथों की धुलाई के स्टेशन स्थापित करने, पानी की टंकी की मरम्मत करने और स्कूल को पेंट करने हेतु स्कूल के साथ मिलकर काम किया। इस स्कूल में कुल 900 बच्चे हैं, जिसमें से 465 लड़कियाँ हैं। क्लब के पूर्व अध्यक्ष एस भास्कर रेड्डी कहते हैं कि शौचालय खण्डों के



निर्माण के बाद, बहुत सी लड़कियाँ जो स्कूल में एक अच्छे शौचालय की कमी होने के कारण स्कूल छोड़कर चली गई थी वे अब वापस लौट रही हैं। “यही हमारे लिए महत्व रखता है।”

अन्य क्लब जिन्होंने मंडल 6920 और TRF की मदद से शौचालय खण्डों का निर्माण किया और क्षेत्र में स्कूलों को बेहतर बनाने हेतु कार्य कर रहे हैं, वे पिडुगुरल्ला, ऑंगोले सेंट्रल, चिमाकूर्थी, इन्कोलू, गुंदूर आदर्श और चिलाकालुरिपेट के रोटरी क्लब हैं।

इस परियोजना को सभी स्कूलों में दीर्घकालिक बनाने हेतु क्लब एक साल के लिए साबुन और डिटर्जेंट



PDG रवि वड्लमणी, एक स्कूल में छात्रों के साथ।



झारखण्ड राज्यलक्ष्मी वड्लमणी (दाएं) और उमरछ पांडी शिवनारायण राना (बाएं से दूसरे), रोटरी क्लब गुंदूर आंध्रप्रदेश और पर्वूर सेंट्रल के सदस्यों के साथ, एक स्कूल के शौचालय ब्लॉक के उद्घाटन समारोह में।

जहाँ भी WASH पहल
लागू की गई है वहाँ
छात्राएं अब नियमित रूप
से स्कूल जाने लगी हैं।

प्रदान कर रहे हैं और उन्होंने प्रत्येक स्कूल में शौचालय प्रबंधन के लिए कार्यवाहकों की नियुक्ति की है। जल्द ही स्टार क्लब लीग में शामिल होने की उम्मीद के साथ, क्लबों ने इन स्कूलों में महत्वपूर्ण व्यावहारिक परिवर्तन लाने के साथ-साथ, जल और स्वच्छता सुविधा उन्नयन, स्वास्थ्य शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण में एक मानदण्ड स्थापित किया है।

रोटरी वन स्टार प्रोजेक्ट के सफलतापूर्वक समापन से क्लब मंडल-स्तर पर सम्मान प्राप्त करेंगे; रोटरी की दो और तीन सितारा आवश्यकताओं की पूर्ती के बाद रोटरी अंतर्राष्ट्रीय और यूनिसेफ से सम्मान प्राप्त होगा। ■



Our Esteemed Guest

Rtn Barry Rassin & Ann Esther
RI President 2018-19



Rotary Institute 2018
Chennai | 5-7th October
Zone 4, 5 & 6A

Convener's Message



RID Basker Chockalingam
Ann Malathi

Dear Rotary Leaders,

Rotary Zone Institutes give opportunity to Rotary leaders, past, present and future, to meet and greet each other, exchange ideas and debate on how to take Rotary forward. **Malathi & I** deem it a privilege and pleasure, to invite you and your spouse, to Rotary Institute 2018, to be held during October 5-7, 2018, at **Hotel Leela Palace, Chennai**. With a set of wonderful speakers and world class entertainment, this will be truly an Institute with a difference. We will have the rare opportunity of having with us the Rotary senior leadership, who will make the event a memorable one for us. The dynamic Institute Chairman PDG ISAK Nazar and his wonderful team are making every effort, to ensure that, we all have a grand Rotary Institute 2018 — **Passion To Serve** — at Chennai.

With warm regards,

RID Basker Chockalingam, RI Director (2017-19)



Chairman's Message



Ann Afzalunnisa
PDG ISAK Nazar

Dear Rotary Leaders,

Greetings from Team — Rotary Institute 2018.

It's a great opportunity given by Director / Convener Rtn C Basker to have our **Rotary Institute 2018** at Chennai, at the grand venue — **Hotel Leela Palace, Chennai** — on 5th, 6th and 7th October 2018. Please be ready to witness one of the most memorable Rotary Institute at Chennai. We are all set to deliver an outstanding and memorable Institute. With a galaxy of eminent speakers, a new experience in entertainment and all that a successful Rotary Institute can be remembered for, awaits you. On behalf of Rotary Institute 2018 Team, I welcome you to **Passion to Serve, Rotary Institute 2018**. Please register immediately.

PDG ISAK Nazar

Chairman — Rotary Institute 2018

Please send this form duly filled by post / courier to:

Rtn PDG ISAK Nazar, Chairman, Rotary Institute 2018

Manna Foods, 129, Z Block, 6th Avenue, Anna Nagar, Chennai – 600 040, Phone: 044 2683991, Mobile: 94449 76846
e-mail: rotaryinstitute.chennai2018@gmail.com, nazarisak@gmail.com

REGISTRATION DATA SHEET



Name: Rtn. Call / Badge Name:.....

Classification:

Address:

City: Pin Country

Mobile: e-Mail:

(Note: Include country and area code for Telephone / Fax Number)

☐ PDG ☐ IPDG ☐ DG ☐ DGE ☐ DGN ☐ DRFC ☐ DMC ☐ DRC

Home Club: RI District:

Name of Spouse: Call Name:

Food Preference			Collar size				
	Rotarian	Spouse					
Veg	☐	☐	☐ 38	☐ 40	☐ 42	☐ 44	☐ 46
Non Veg	☐	☐					

REGISTRATION			Couple	Single	Amount
Institute Registration	Couple	Single			
Upto 30th June 2018	INR 25000	INR 15000			
After 30th June 2018	INR 26000	INR 17000			
GETS (Couple)	2,3,4 October 2018	INR 60000			
DGs Training Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
DGN Training Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
Dist Trainers Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
COL Seminar	4th October 2018	INR 5000 per Person			
TRF Dinner	4th October 2018	INR 5000 per Couple INR 3000 per Single			
TRF Seminar	5th October 2018	INR 5000 per Couple INR 3000 per Single			

HOTEL ACCOMODATION

The Leela Palace	Double Executive	INR 10000 Per Nite			
	Single Executive	INR 9000 Per Nite			
Ramada Plaza	Double Deluxe	INR 8000 Per Nite			
	Single Deluxe	INR 7000 Per Nite			
The Savera Hotel	Double Deluxe	INR 7000 Per Nite			
	Single Deluxe	INR 6000 Per Nite			
Total					

*Kindly tick whichever is applicable.

*Please note that the Accomodation is purely on first come first serve basis.

The cheque and draft shall be in favour of "Rotary Institute 2018" payable at Chennai.	Online payment details: Account Name: Rotary Institute 2018 Bank: Karur Vysya Bank Branch: Saidapet, Chennai - 15 Account No.: 1651155000067299 IFSC Code: KVBL0001651
---	---

The Institute registration covers the following:

- Inaugural plenary on Friday, Oct 5, 2018 followed by dinner.
- Lunch and dinner on Saturday, Oct 6, 2018.
- Lunch on Sunday, Oct 7, 2018.

The other events such as GETS (Couple), DG Seminar, Membership Seminar, DGN Seminar, COL, TRF Seminar, Foundation Dinner have additional registration as mentioned above.

Date:

Signature:



ग्रामीण गरीबों की सेवा करना उनकी प्राथमिकता

विश्व बंधु दीक्षित, त्वचाविशेषज्ञ, रोटरी क्लब भिवानी, रो ई मंडल 3090

एक डॉक्टर होने के नाते वह स्वास्थ्य देखभाल के निरोधक पहलुओं के फायदों के बारे में जानते हैं। इसलिए इन डीजी की प्राथमिकताओं में से एक है जल एवं स्वच्छता। मेरे वर्ष के दौरान मेरी प्राथमिकता स्कूलों में कम से कम 200 से 300 सामूहिक हाथों की धुलाई के स्टेशन स्थापित करने, एवं किशोरियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता पर काम करने की होगी।”

पेशे से एक डॉक्टर, वास्तव में एक त्वचाविशेषज्ञ और एक एचआईवी विशेषज्ञ, वी. बी. दीक्षित 1995 में रोटरी से जुड़े। “मैं एक सरकारी अस्पताल में काम कर रहा था और एक दिन मेरे एक वरिष्ठ मेरे पास आए और कहा: तुम्हें रोटरी से जुड़ना चाहिए, क्योंकि वहाँ तुम बहुत से शीर्ष पेशेवरों, कारोबारियों इत्यादि से मिल पाओगे। वहाँ तुम्हें बहुत से लोगों की मदद करने का अवसर मिलेगा और समाज की जितनी सेवा तुम अभी कर रहे हो उससे बेहतर एवं बड़े स्तर पर समाज की सेवा कर पाओगे।”

दीक्षित के मंडल 3290 में 76 क्लब हैं जिनमें 2001 सदस्य हैं। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को बढ़ावा देने के अलावा, उनकी अन्य दो प्राथमिकताएँ सदस्यता को बढ़ाना है, जिसमें ध्यान महिलाओं पर होगा। वर्तमान में उनके मंडल में महिला सदस्यता केवल 13 प्रतिशत है और डीजी इस आंकड़े को बढ़ाना चाहते हैं। वह उनके मंडल के सभी रोटरेक्टर्स को रोटेरियन बनाना चाहते हैं।

संस्थान को देने के मुद्दे पर, वह कहते हैं, टीआरएफ को देने के मामले में “पिछला वर्ष हमारे मंडल के लिए अच्छा नहीं रहा, अन्यथा हम सामान्य तौर पर 70,000 से 80,000 डॉलर इकट्ठा करते हैं। इस वर्ष मेरा लक्ष्य इस आंकड़े को 1,00,000 डॉलर तक ले जाने का है।”

यह पूछे जाने पर कि रोटरी ने उन्हें क्या दिया, वह तुरंत जवाब देते हैं: “ओह, रोटरी ने मुझे बहुत सारी संतुष्टि प्रदान की है। हमारा मंडल एक ग्रामीण मंडल है, और भले ही मैंने पहले ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्य किया हो, रोटरी ने मुझे ग्रामीण इलाकों में लोगों की एक बड़ी संख्या तक पहुँचने का एक मंच प्रदान किया है। रोटरी के माध्यम से ग्रामीण लोगों को सर्वाधिक लाभ पहुँचाना मेरी प्राथमिकता है।”

आपके गवर्नरों से मिलें

रशीदा भगत और जयश्री

वह “सेवा के साथ आनंद और साहचर्य को संतुलित” करना चाहते हैं

रवि किरण कुलकर्णी, चार्टर्ड अकाउंटेंट, रोटरी क्लब संगली, मंडल 3170

गवर्नर के रूप में उनके वर्ष के दौरान, यह डीजी वैश्विक अनुदानों की मदद से सामुदायिक सेवा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं। “रोटरी, जिससे मैं 1987 में जुड़ा, से जुड़ने का मेरा मुख्य लक्ष्य समाज के लिए कुछ करना था और चूंकि जब मुझे एक अवसर मिला है, मैं दूरस्थ इलाकों में बसे लोगों तक पहुँचना चाहता हूँ और उन्हें वित्तीय साक्षरता प्रदान करने की दिशा में कार्य करना चाहता हूँ,” रवि कुलकर्णी कहते हैं।

128 क्लबों और 5500 विलक्षण रोटेरियनों के साथ मंडल का नेतृत्व करते हुये, वह रोटरी की “वर्तमान दशा से दुखी है। इन दिनों हम रोटरी कम और मज़ा अधिक कर रहे हैं। एक समय जो सही प्रशिक्षण हमें रोटरी में मिला था वह धीरे-धीरे फीका होते जा रहा है। मैं उसे फिर से बहाल करना चाहूँगा।”

वेशक यह एक बुलंद लक्ष्य है, परंतु वह इसे कैसे करेंगे?

“कुछ कड़ी कार्यप्रणालियों को अपनाकर जैसे प्रत्येक बैठक की शुरुआत में रोटेरियनों को सही प्रकार की रोटरी जानकारी देकर; सदस्यों को सेवा गतिविधियों के साथ आनंद एवं साहचर्य को संतुलित करने के लिए कहकर,” वह उत्तर देते हैं।

टीआरएफ में देने पर, वह कहते हैं कि उनके मंडल का इस मामले में अच्छा रिकॉर्ड रहा है; “पिछले वर्ष हमने संस्थान के लिए एक AKS सदस्य के साथ 816,000 डॉलर एकत्रित किए थे। मेरा लक्ष्य उस आंकड़े को 1 मिलियन डॉलर तक ले जाने का है।”

सदस्यता के मोर्चे पर कुलकर्णी का ध्यान अधिक महिला सदस्यों को शामिल करने पर होगा। “हमारे पास तीन अखिल महिला क्लब हैं और हमारे सदस्यों में लगभग आठ प्रतिशत सदस्य महिलाएं हैं। मैं उस संख्या को बढ़ाना चाहता हूँ,” वह आगे कहते हैं।



मजबूत क्लबों का निर्माण

रमेश वांगला, लेखा परीक्षक, रोटरी क्लब अमीरपेट, मंडल 3150

वह रोटेरियनों की बेहतर व्यस्तता को प्रोत्साहित करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि “सदस्य रोटरी को केवल तब ही छोड़ते हैं जब उनके लिए इसमें कुछ रोचक नहीं होता। उनके लिए रोटरी को मजेदार बनाना हमारा काम है।” रमेश वांगला चाहते हैं कि सभी सदस्य कम से कम एक गतिविधि करें। “यह उनके घर पर दोपहर के खाने, चाय या रात्रिभोज का निमंत्रण भी हो सकता है,” वह कहते हैं। इस मंडल में हैदराबाद-सिकंदराबाद, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश को मिलाकर बहुत बड़ा क्षेत्र आता है और इसलिए वह क्लबों को संयुक्त परियोजनाएं करने के लिए प्रेरित करते हैं जो कि बेहतर सम्बन्धों को स्थापित करने में उनकी मदद करेंगी।

छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों और एक पर्यावरण देखभाल कार्यक्रम हेतु पूरे मंडल के लिए उन्होंने सात निर्दिष्ट तारीखों को तय किया है। इसमें स्कूली बच्चों में स्वच्छता एवं सफाई को बढ़ावा देने के लिए पानी की बोतलों एवं साबुन को प्रदान करना; महिलाओं के लिए सिलाई मशीन का वितरण; महिलाओं एवं बच्चों के लिए स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन और हैदराबाद में आयोजित होने वाला एक बहु-मंडलीय शांति सम्मेलन शामिल है। “हमने सरकारी स्कूलों को 5,000 बेंच और डेस्क दान किए हैं और 170 एंबुलेंस में AED स्थापित किए हैं,” वह कहते हैं।

अपने पिता के नक्शे कदम पर चलते हुये जो 50 सालों तक रोटरी क्लब वांगल के सदस्य रहे, वांगला 2001 से एक रोटेरियन हैं। एक GSE दल प्रमुख के रूप में 2013 में उनके फिनलैंड दौरे को वह याद करते हैं। मेजबान क्लब के अध्यक्ष ने हमें जंगलों में उनकी कुटिया में रहने के लिए आमंत्रित किया था। वह ठंड का मौसम था और हमें शाम के समय अंदर ही रहना पड़ता था। हमने आई-पैड पर किए गए अनुवादों के माध्यम से बातचीत की, क्योंकि हमें फिनिश नहीं आती थी और उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी। हमने तीन दिन इसी प्रकार बिताए।”

100 महिला रोटेरियनों को मिलाकर, उनकी 600 नए सदस्यों द्वारा मंडल की सदस्यता को बढ़ाने एवं आठ नए क्लबों को जोड़ने की योजना है। रोटारेक्टर्स के अभिभावकों को रोटरी में आने के लिए मनाने के विचार का उनके दल ने स्वागत किया। “मंडल में बहुत से रोटारेक्ट क्लब कार्यात्मक नहीं हैं। उनमें से केवल 44 ही सक्रिय हैं, वह अफसोस जताते हैं,” आगे कहते हुये कि वर्ष के अंत तक वह इस आंकड़े को 100 तक ले जाएंगे। इसके लिए, वांगला की योजना है कि जब भी एक रोटरी क्लब द्वारा एक रोटारेक्ट क्लब की स्थापना की जाएगी तो DRCC और DRR के साथ समन्वय किया जाएगा।

उनका लक्ष्य संस्थान के लिए 750,000 डॉलर इकट्ठा करने का है। “इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है क्योंकि एक पूर्व गवर्नर, जो एक AKS सदस्य बनने वाले हैं, से उन्हें 69,000 डॉलर का योगदान प्राप्त हुआ था और पहले माह का संग्रह 200,000 डॉलर था,” वह मुस्कुराते हैं।





एक लियो से एक रोटेरियन तक

पी रोहीनाथ

सुरक्षा सेवाएँ, रोटरी क्लब मैंगलोर
नॉर्थ, मंडल 3181

उनके कॉलेज के दिनों में वह एक लियो थे और फिर एक लायन। एक दोस्त द्वारा एक रोटरी बैठक में हिस्सा लेने के लिए मजबूर किए जाने के बाद वह 1999 में रोटरी से जुड़े। “मुझे रोटरी की सदस्यता पसंद आई। उस समय हम में से चार लोग एक ही क्लब से जुड़े थे,” रोहीनाथ कहते हैं, “जो 2008 में क्लब अध्यक्ष बनने के बाद एक सेवाभावी रोटेरियन के रूप में परिवर्तित हुये।” वह उनके बचपन को याद करते हैं जब उन्हें एक दूरस्थ गाँव, जहाँ वह पले-बढ़े, से 8 कि मी पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। “मैंने नजदीक से लोगों की गरीबी एवं तकलीफें देखी हैं। इस बात ने मुझे एक ऐसे सेवा संगठन का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया।”

मंडल नेतृत्वकर्ता और क्लब अधिकारी प्रभावी रूप से कार्य कर सकें इसके लिए अनेक प्रशिक्षण संगोष्ठियों का आयोजन करने के लिए वह रोई निदेशक सी. भास्कर की प्रशंसा करते हैं।

उनके अध्यक्षीय वर्ष में बच्चों के लिए आंगनवाड़ियों में चिकित्सा शिविरों के आयोजन के दौरान उनकी दयनीय स्थिति को देखने के बाद, रोहीनाथ की मंडल में 7,600 आंगनवाड़ियों को उन्नत बनाने की योजना है। “उनमें से बहुत सी आंगनवाड़ियों में मूलभूत सुविधाओं जैसे स्वच्छ पेयजल और बिजली की कमी, खराब फर्श और टपकती छतें थी। इसलिए प्रत्येक क्लब पाँच आंगनवाड़ियों को गोद लेगा और उनके नवीनीकरण पर ध्यान केन्द्रित करेगा,” वह कहते हैं।

सदस्यता के लिए उनका लक्ष्य उसे 10 प्रतिशत से बढ़ाना है और टीआरएफ के लिए, वह 300,000 डॉलर इकट्ठा करना चाहते हैं, यद्यपि मंडल से पिछले दो वर्षों का योगदान संतोषजनक नहीं रहा।

हाल ही में केरल एवं तटीय कर्नाटक को प्रभावित करने वाली मूसलाधार बारिश के संदर्भ में, गवर्नर ने कहा कि उनका दल बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री पहुँचा रहा है।

एक जमीनी पोलियो कार्यकर्ता

मुकुल सिन्हा,

वकील, रोटरी क्लब कलकत्ता न्यूटाउन, मंडल 3291

रोटरी मेरे लिए जिंदगी है। इसने मुझे सब कुछ दिया और सिखाया है कि जीवन क्या है, मुकुल सिन्हा कहते हैं। 1993 से एक रोटेरियन, सिन्हा उन वर्षों को याद करते हैं जब वह पोलियो टीकाकरण के लिए घर-घर जाकर अभियान चलाया करते थे। “2010 में मुर्शिदाबाद में पोलियो के छः मामले सामने आने के बाद बच्चों को पोलियो की वूँटें पिलाकर मुझे अत्यंत संतुष्टि मिली थी।”

उन्हें रोटरी के एक बहु-विशिष्ट अस्पतालों और पुरलिया में दो नेत्र अस्पताल पर गर्व है जो माओवादी प्रभावित जंगल महल क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी समुदाय की सेवा करते हैं।

सिन्हा ने उनके क्लबों से ग्रीवा कैंसर की जाँच और टीकाकरण करने, स्वच्छ पेयजल की सुविधा प्रदान करने, महिलाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम और पौधारोपण जैसी परियोजनाएँ करने की अनुशंसा की है। वर्तमान में वह केरल के बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री पहुँचा रहे हैं। “सभी क्लब धन और वस्तुओं के रूप में योगदान कर रहे हैं और हम

उन्हें मंडल 3211 के गवर्नर ल्यूक के पास भेजेंगे,” वह कहते हैं।

सदस्यता वृद्धि के लिए उनका लक्ष्य संख्या को 4,000 तक बढ़ाने का है और वह कमजोर क्लबों का विलय करने के लिए उत्सुक है। अवरोधन एक बड़ी चुनौती है, वह कहते हैं, आगे कहते हुये कि इस मुद्दे से निपटने के लिए उनके पास एक समिति है।

टीआरएफ योगदान के लिए, उनका 500,000 डॉलर इकट्ठा करने का लक्ष्य है, जिसके लिए उन्होंने प्रत्येक सदस्य से दिल खोलकर योगदान देने के लिए कहा है। उनका ध्यान ‘योगदान ना करने वाले क्लबों’ पर है और वह “अपने मंडल को 100 प्रतिशत योगदान देने वाला मंडल” बनाना चाहते हैं।

सिन्हा उनकी पत्नी राखी की प्रशंसा करते हैं, जो उनका सभी रोटरी गतिविधियों में समर्थन करती है, हालाँकि वह एक रोटेरियन नहीं हैं।



एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

नेत्र शिविरों के साथ दिल्ली के ग्रामीणों तक पहुंचने का प्रयास

वी मुत्तुकुमारण

पिछले वर्ष जब राजेंद्र सिंघल ने रोटरी क्लब दिल्ली रीजेंसी, मंडल 3011 के अध्यक्षीय पद के लिए अपने कार्यकाल की शुरुआत की, तो उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी के आसपास और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में नेत्रों की देखभाल सेवाओं को बढ़ाने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया। इस प्रकार, दिल्ली से 120-180 किलोमीटर दूर गांवों में दो-दिवसीय मासिक नेत्र जांच शिविरों की परियोजना का जन्म हुआ और यह इस वर्ष भी जारी है।

सिंघल ने अपने कार्यालय में एक विशेष रोटरी डेस्क स्थापित किया जिससे कि प्रत्येक महीने एक नेत्र-देखभाल शिविर आयोजित करने के लिए समन्वय

और योजना निर्माण किया जा सके। एक ऐसे क्षेत्र में एक आंख शिविर आयोजित करने के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया जाता है जहां बहुत कम या कोई चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। उन्होंने समझाया कि, “हम पहले क्षेत्र की पहचान करते हैं, पंचायत अधिकारियों से मिलते हैं और शिविरों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न करते हैं जहां वे आसानी से अपना पंजीयन करवा सकते हैं और बूथ पर जांच करवा सकते हैं।”

क्लब ने वेणु आई इंस्टीट्यूट और रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली के साथ गठबंधन किया है, जो डॉक्टरों की छः सदस्यीय टीम को नियुक्त करता है, जो जांच

काउंटर पर प्रति दिन कम से कम 300 मरीजों की जांच करते हैं। रोगियों के आंखों की पूरी तरह से जांच की जाती है और जिन्हें आगे परीक्षण या मोतियाबिंद ऑपरेशन की आवश्यकता होती है उन्हें अस्पताल ले जाया जाता है।

प्रत्येक महीने क्लब ग्रामीण शिविरों को व्यवस्थित करने में मदद के लिए अस्पताल को ₹2.5 लाख का भुगतान करता है। “फंड हमारे सदस्यों द्वारा एकत्र किया जाता है जिनमें से कुछ हमारे कॉर्पोरेट प्रायोजक हैं। वर्ष 2002 में, हमने वैश्विक अनुदान के अंतर्गत अस्पताल में एक आई बैंक स्थापित किया था। सिंघल जी कहते हैं, मृत दाताओं से लगभग 400 अंग प्राप्त होते हैं, जिनमें से 75 प्रतिशत पुनः इस्तेमाल करने के लिए उपयुक्त होते हैं।” अस्पताल शिविरों के आयोजन के लिए अपने 45 सीटों वाले बस का इस्तेमाल करता है।

सूक्ष्म-योजना निर्माण

“हमारे शिविरों से 5,000 से अधिक लोग लाभान्वित हुए हैं, जिनमें से लगभग 720 मरीजों के मोतियाबिंद का उपचार किया गया है। सिंघल जी कहते हैं, औसतन 55 मरीजों को हर महीने मोतियाबिंद के उपचार के लिए वेणु अस्पताल ले जाया जाता है।” इस वर्ष क्लब ने अपने मासिक शिविरों के लिए ₹30 लाख की व्यवस्था की है और अगले छह महीनों के लिए कार्यक्रम और लौजिस्टिक्स की व्यवस्था पहले से ही की जा चुकी है।

दिल्ली से 140 किमी दूर उत्तर प्रदेश के मुज़ाफर नगर जिले के एक गांव के प्रधान चौधरी करतार सिंह कहते हैं कि उनके गांववासी “वरिष्ठ नागरिकों को चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए हमेशा रोटरी के आभारी रहेंगे और दूर-दराज के इलाकों में रहने वाले आय अर्जित करने में अक्षम लोग हैं जहां कोई भी इस तरह के स्वास्थ्य-देखभाल सेवा उपलब्ध कराने की उम्मीद नहीं करता है।” पिछले वर्ष, उत्तर प्रदेश के मुज़फ्फरनगर और हरियाणा के रोहतक और मेवाट इलाके में नेत्र-देखभाल शिविरों का आयोजन किया गया था, जिससे इन क्षेत्रों में रहने वाले गांववासियों को बहुत लाभ हुआ।

रोटेरियन द्वारा अनुशंसित मरीजों के लिए निःशुल्क मोतियाबिंद का उपचार भी उपलब्ध कराया जाता है। ■



रोटेरियनों राजेंद्र सिंघल (बाएं) और दिलिप दद्या (दाएं) मोतियाबिंद की सर्जरी के बाद मरीजों के साथ।

कुचिपुड़ी के राग

सीता रत्नाकर

मुझे पहली नज़र में इससे प्यार हो गया था जब मैंने कुचिपुड़ी को पहली बार तब देखा था जब मैं बमुश्किल दस साल की रही होंगी। मेरी माँ मुझे इस नृत्य शैली को सीखने के लिए प्रख्यात गुरु, वेमपति चिन्ना सत्यम के पास ले गई थी जिन्होंने नृत्य प्रदर्शित करते हुए अपनी आकर्षक हरकतों और प्रतीकात्मक मुद्राओं से मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। वह एक महान स्वप्नदर्शी थे जो सिर्फ दो रूप और साथ में ढेर सारे सपने लेकर अपने कुचिपुड़ी गाँव से मद्रास आए थे और चेन्नई में कुचिपुड़ी के लिए उत्कृष्टता का एक केंद्र स्थापित करने में सफल रहे। 1963 में कुचिपुड़ी आर्ट अकेडमी शुरू करने से पूर्व, शुरुआत में उन्होंने मेरे घर के पास वाली गली में दो छोटे कमरों में नृत्य सिखाया। मैं उनके शुरुआती छात्रों में से एक थी क्योंकि मेरी माँ को एक उम्मीद थी कि मैं आंध्र संस्कृति को कुछ तो आत्मसात करूँगी। मुझे संदेह है कि मेरी माँ का अभिप्रेरण मुझे एक नृत्यांगना बनाने से अधिक एक संघर्षरत कलाकार को प्रोत्साहित करने का था क्योंकि मुझे नृत्य सिखाने की उनकी पूर्व की कोशिशें विफल रही थी। लेकिन इस बार, कुचिपुड़ी के मेरे दीक्षा संस्कार ने मेरी जिंदगी बदल दी; नृत्य के साथ मेरा प्रेम संबंध तब शुरू हुआ जब मैंने अपने अंदर की नर्तकी की खोज की।

कुचिपुड़ी आंध्र प्रदेश की एक सजीव नृत्य परंपरा है और कृष्णा जिले, जो 17वीं शताब्दी में कुचिपुड़ी नर्तकों का घर बन चुका था, के कुचेलापुरम या कुसिलावा पुरम (अभिनेताओं/सफ़री कलाकारों का गाँव) गाँव के नाम पर इसका नाम पड़ा। आंध्र में नृत्य का विकास तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से शुरू हुआ और 15वीं और 16वीं शताब्दी की शुरुआत में विजयनगर शासकों के शासनकाल के दौरान यह अपनी महिमा के चरम

बिंदु पर पहुँचा। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद निरंतर आक्रमणों के कारण इस नृत्य शैली की लगातार अवनति होती गई और संगीतकार एवं नर्तक जीवित रहने के लिए दक्षिण में जा बसे। उनमें से कुछ को अच्युथप्पा नैक्कर द्वारा तंजावुर में ज़मीन दी गई जहाँ वे मेलातुर भागवत मेला के नाम से लोकप्रिय हुए। नृत्य मंडली में पारंपरिक रूप से पुरुष नर्तक होते थे जो गाँव-गाँव जाकर मंदिरों के समीप बने अस्थायी रंगमंचों पर धार्मिक विषयों पर आधारित नृत्य-नाट्य की प्रस्तुति देते थे।

एक नवाब का तोहफ़ा

17वीं शताब्दी में, गोलकोंडा के नवाब, हबुल हुसैन कुतुब तानिष, ने एक नृत्य प्रस्तुतीकरण देखा जिसने उन्हें पूर्णतया प्रभावित किया। तानिष ने तुरंत उन सफ़री कलाकारों को कुचेलापुरम गाँव में ज़मीन दी इस शर्त पर कि वे प्रस्तुतियाँ देना जारी रखेंगे और अपने वैभवशाली नृत्य की परंपरा को प्रसारित करेंगे। इस भाव प्रदर्शन ने भाषाई और धार्मिक बंधनों के परे जाकर कुचिपुड़ी नृत्य की दिशा परिवर्तित कर दी। उदार संरक्षण के कारण नर्तक इस शानदार नृत्य शैली को आबाद और केंद्रीकृत कर सके एवं इसे संगठित कर आगे विकसित कर सके।

ऐसा माना जाता है कि यति नारायण तीर्थ और उनके शिष्य सिद्धेन्द्र योगी वे प्रवर्तक थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन इस वैभवशाली नृत्य शैली का इसके संपूर्ण वास्तविक सौन्दर्य के साथ पुनरुत्थान करने और इसका प्रचार करने में समर्पित कर दिया। सिद्धेन्द्र योगी एक अग्रदूत थे जिन्होंने समुदाय को प्रत्येक लड़के को नृत्य के देवता को समर्पित करने हेतु राज़ी किया और

इस तरह कुचेलापुरम को एक नृत्य ग्राम कुचिपुड़ी में परिवर्तित कर दिया। *भामा कलापम* जैसी उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन करके उन्होंने नए कलात्मक भावों का संचार किया और वो शक्ति बन गए जिसने कुचिपुड़ी को अमरत्व प्रदान किया।

राष्ट्र में ऐतिहासिक परिवर्तनों के साथ इस



नृत्य प्रारूप में भी कई परिवर्तन हुए। मध्य युग की शुरुआत में जब वीर शैव पंथ का आंध्र में प्रभाव था, तब शिव की लीला पर आधारित ऊर्जस्वी और जोशपूर्ण नृत्य-नाट्य लोकप्रिय रूप से यक्षगान शैली में प्रस्तुत किये जाते थे। बाद में, वैष्णव भक्ति आन्दोलन ने लोकप्रियता प्राप्त की और भागवत मेला परंपरा से नजदीकी से जुड़ा हुआ नृत्य-नाट्य प्रारूप विकसित हुआ। पुरुष नर्तकों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले विष्णु लीला ओपेरा को कुचिपुड़ी भागवाथुलु के नाम से जाना जाता था। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में तीन प्रख्यात कलाकारों - वेदांतम लक्ष्मीनारायण शास्त्री, वेमपति वेंकटनायण शास्त्री और चिंता वेंकटरमैय्या - ने इस नृत्य के संवर्धन में ज़बरदस्त योगदान दिया।

बाद में इस नृत्य शैली ने एकदम नयी दिशा ले ली जब वेदांतम लक्ष्मी नारायण शास्त्री ने महिला नर्तकियों को सिखाने का साहसिक कदम उठाया और भविष्य के गुरुओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

वेमपति चिन्ना सत्यम ने आज़ाद भारत में कुचिपुड़ी के पुनर्जागरण की शुरुआत की और दुनिया के नृत्य के मानचित्र पर इसे दृढ़ता के साथ रखने के लिए वह प्रमुख रूप से जिम्मेदार है। वह एक शानदार

अदाकार, शिक्षक और नृत्य-निर्देशक थे, जिन्होंने इस नृत्य शैली को इसकी शुद्धता की कुरबानी दिए बिना ही सुव्यवस्थित किया और बड़ी संख्या में वैश्विक दर्शकों द्वारा इसे पसंद किये जाने हेतु इसे अधिक परिष्कृत बनाया। वैजयंतीमाला बाली, राधा, लक्ष्मी विश्वनाथन, रत्ना (पापा) कुमार, हेमामालिनी जैसी और भी कई प्रख्यात भरतनाट्यम नर्तकियों ने कुचिपुड़ी कला अकादमी में उस्तादों के संरक्षण में कुचिपुड़ी सीखा। उनकी वरिष्ठ शिष्याओं में से एक रत्ना (पापा) कुमार, ने विलक्षण वेमपति 'बानी' शैली को लोकप्रिय बनाने और उसका प्रचार करने के लिए 1975 में यूएस में पहला कुचिपुड़ी नृत्य संस्थान स्थापित किया। यह बताते हुए कि कुचिपुड़ी कैसे उनकी ज़िंदगी में आया, रत्ना कहती है, "जब मैं कहती हूँ कि कुचिपुड़ी ने मेरी ज़िंदगी बदल दी, तो मैं बस प्रभावित करने के लिए ऐसा नहीं कह रही हूँ। जब मैं करीब आठ साल की थी तब मैंने वेदांतम जगन्नाथ शर्मा से थोड़ा कुचिपुड़ी सीखा था, लेकिन इससे मुझपर इतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना प्रभाव वेमपति पेद्दा सत्यम के साथ थोड़े वक्त के प्रशिक्षण से और एक साल बाद वेमपति चिन्ना सत्यम के अंतर्गत उन्नत प्रशिक्षण



से पड़ा। उस समय मैं अपने जीवन की अतिसंवेदनशील स्थिति में थी क्योंकि मैं तब ही तब चेचक से बुरी तरह जूझकर स्वस्थ हुई थी, जिसने मेरे पूरे शरीर को कमज़ोर कर दिया था, मेरी दृष्टि को खराब कर दिया था, और मेरे आत्मविश्वास को कम कर दिया था।"

मैं 14 वर्ष की थी और दुखी थी। और फिर चमत्कार हुआ! मेरा कुचिपुड़ी से परिचय हुआ। यह रोमांचक और अप्रत्याशित था, इसकी हरकतें और हाव-भाव भरतनाट्यम, जिसे मैं दस वर्षों से कर रही थी, से काफी भिन्न थे। "मुझे इसकी लहरदार हरकतों, छलांगों, प्रवण ऊर्जा और नृत्य शैली की जीवंतता से प्रेम हो गया था और इसे सीखने हेतु मैं स्वयं को जितना तल्लीन कर सकती थी उतना कर लिया था। उस समय,

मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन यह मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन जाएगा!"

भारत के सभी शास्त्रीय नृत्य रूपों की तरह, कुचिपुड़ी की जड़े भी कला पर लिखे गए प्राचीन लेख, नाट्यशास्त्र में मिलती हैं और इसमें एवं भरतनाट्यम में काफी समानताएं हैं। लेकिन इसे परिभाषित करने वाली प्रत्येक शैली की विशिष्ट विशेषताओं के साथ रंगपटल काफी भिन्न होता है। पारंपरिक कुचिपुड़ी नृत्य नाट्य प्रारूप में कथा को प्रस्तुत करने से पहले एक संक्षिप्त प्रारंभिक नृत्य जिसे प्रवेश धरावू कहते हैं, के माध्यम से प्रत्येक पात्र का परिचय दिया जाता है। पिछली शताब्दी तक, महिलाओं के सभी पात्र महिलाओं की वेशभूषा में पुरुषों द्वारा किये जाते थे। उनमें से कुछ उनके उत्कृष्ट चित्रण द्वारा

17वीं शताब्दी में, गोलकोंडा के नवाब, हबुल

हुसैन कुतुब तानिष, ने एक नृत्य प्रस्तुतीकरण

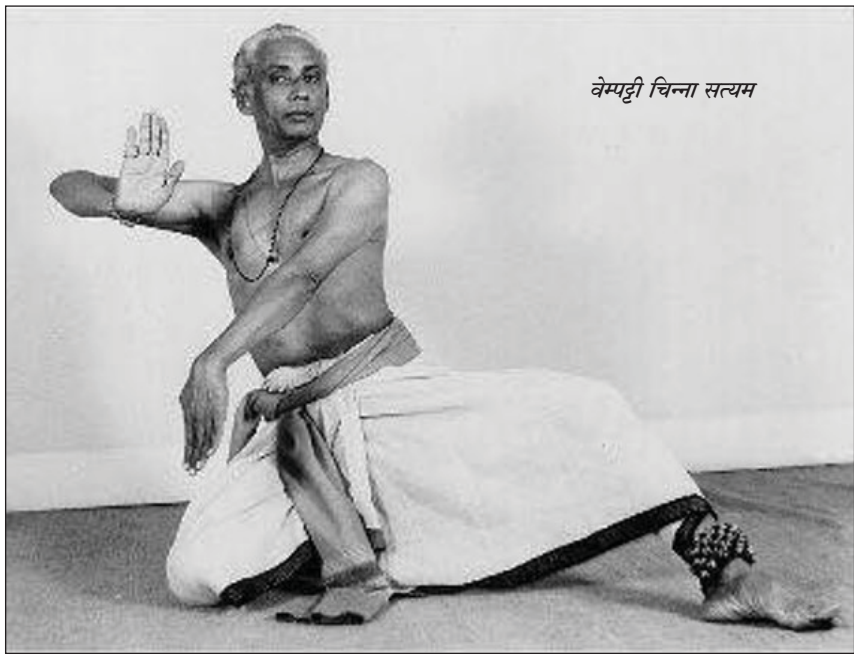
देखा जिसने उन्हें पूर्णतया प्रभावित किया।

इस शानदार पारंपरिक प्रारूप को जीवित रख रहे हैं। स्वर्गीय वेदांतम सत्यनारायण शर्मा अपने नृत्य-नाट्यों में महिला नायिकाओं का चित्रण करने के लिए जाने जाते हैं जैसा उन्होंने भामा कलापम में सत्यभामा, उषा परिणयम में उषा, मोहिनी रुक्मंगदा में मोहिनी, ससिरेखा परिणयम में ससिरेखा और गोलाकलापम में गोलाभामा के रूप में किया था। नर्तक कला कृष्ण कहते हैं कि उन्हें सत्यभामा का मेक-अप करने और उसकी तरह पोशाक पहनने में दो घंटे से भी ज्यादा का समय लगता है लेकिन जब वह अपनी प्रस्तुति देते हैं तो लोग उनकी उम्र और उनका लिंग पूरी तरह से भूल जाते हैं। वेमपति चिन्ना सत्यम ने श्री कृष्ण पारिजातम, क्षीर सागर मधनम, श्रीनिवास कल्याणम, विप्रानारायण और शकुंतलम जैसे कई नृत्य नाट्यों के लिए नृत्य निर्देशित करके उनका मंचन कर पारंपरिक रंगपटल को और अधिक समृद्ध बनाया।

यति नारायण तीर्थ ने एक नृत्य नाट्य के संगीतिका पाठ के रूप में कृष्ण लीला तरंगिनी की रचना की और गीत के अंत में तालबद्ध नृत्य शब्दांशों की शुरुआत की। इसके उद्धरण अक्सर एकल कलाकारों द्वारा तरंगम के रूप में प्रदर्शित किए जाते हैं जहाँ वे कृष्ण की कथाओं का विस्तृत वर्णन करते हैं और इसे पीतल की थाली पर संतुलन बनाते हुए शुद्ध नृत्य प्रस्तुति की समाप्ति तक करते रहते हैं। कुछ नर्तक घड़े में पानी भरते हैं और फिर इसे सर पर रखकर संतुलन बनाते हुए तालबद्ध रूप

मुझे इसकी लहरदार हरकतों, छलांगों,
प्रवण ऊर्जा और नृत्य शैली की
जीवंतता से प्रेम हो गया था और इसे
सीखने हेतु मैं स्वयं को जितना तल्लीन
कर सकती थी उतना कर लिया था।

रत्ना पापा कुमार
कुचिपुड़ी कलाकार



वेम्पट्टी चिन्ना सत्यम

से नृत्य प्रस्तुति देते हैं। नृत्य के माध्यम से स्मरक बिखेरता हुआ लोकप्रिय कथाओं के प्रतिपादन का संयोजन तरंगम को सबसे मजेदार नृत्य अनुभव बनाता है। सिद्धेन्द्र योगी द्वारा रचित भामा कलापम, एक नाटकीय नृत्य अभिव्यक्ति जिसे प्रबंध नर्तनम कहा जाता है, भावपूर्ण भावनाओं एवं जटिल नृत्य रूपों से परिपूर्ण एक सर्वोत्कृष्ट नृत्य है। कुचिपुड़ी कावुत्वम्स स्पष्ट रूप से भिन्न है, और इसके जोड़ीदार भरतनाट्यम से विशिष्ट है। विनायक, मयूर या सिम्हन्दिनी कवुत्वम में नर्तक द्वारा मंच पर रंगीन चावल का पाउडर फैलाया जाता है और फिर उसे सफ़ेद कपड़े या कागज़ से ढंककर पूर्व निर्धारित संगीत पर नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। इस अनुभाग के अंत में, प्रत्येक नृत्य के नियत रूप के हिसाब से कलाकार द्वारा कदमों से ही विनायक, मोर या शेर की खूबसूरत तस्वीर बनाई जाती है।

बहु-प्रतिभावान गुरु स्वर्गीय नरसिंहचारी की पत्नी और नृत्य साझेदार, वसंतलक्ष्मी नरसिंहचारी, कहती हैं, “यदि किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा जाए जिसने अपने जीवन और कला को अभिन्न रखा तो, वह है मेरे पति और गुरु श्री एम. वी. नरसिंहचारी। अपने पिता से नृत्य और संगीत की बारीकियों को आत्मसात करने के बाद, उन्होंने शिवलीला, सुभद्रा अर्जुनीयम और रावण मंदोदरी

जैसी कई उत्कृष्ट सुन्दर रचनाओं के माध्यम से कुचिपुड़ी के रंगपटल को समृद्ध बनाया। अब हमारी बेटियाँ, लावण्या और लास्या सौन्दर्यपरकता से कला के क्षितिज का विस्तार करते हुए हमारे काम को आगे ले जाने में सहायनीय कार्य कर रही हैं।”

कुचिपुड़ी आज भारत और विदेश में बहुत ही सम्मानित और लोकप्रिय नृत्य शैली है। यह नृत्य जो कुचिपुड़ी गाँव में पहले केवल ब्राह्मण लड़कों को सिखाया जाता था 20वीं शताब्दी में समावेशी हो गया और इसने जाती या पंथ की परवाह किये बिना कला के प्रत्येक उपासक के लिए अपने दरवाजे खोले। आज पुरुष नर्तकों के मुकाबले महिला नर्तकियों की अधिकता ने इस नृत्य कला पर केवल पुरुषों का आधिपत्य नहीं रहने दिया, बल्कि अब तो महिलाएँ पुरुषों की वेशभूषा धारण करके पुरुष पात्रों की भूमिका भी निभा रही हैं।

जब कला अधिक लचीली और अनुकूलनीय हो जाती है, तो यह एक व्यापक नृत्य परिधि तक पहुँचती है। जहाँ कला का विकास होता है, वहाँ जीवन का विकास होता है और जैसा कि हेवलॉक कहते हैं: “नृत्य सबसे शानदार, सबसे गतिशील और कला में सबसे सुन्दर है, क्योंकि यह जीवन का रूपांतरण या कल्पना मात्र नहीं है; यह स्वयं जीवन है।” ■

Top 10 Districts from India Total Contributions

India Rank	District	Total Contribution (USD)
1	3141	2,157,938
2	3000	1,271,692
3	3131	1,215,843
4	3190	1,134,867
5	3231	1,115,668
6	3060	1,097,666
7	3232	1,048,630
8	3011	880,295
9	3201	856,750
10	3142	679,954



Rotary at a glance

Rotarians : 12,04,289

Clubs : 35,712

Districts : 538

Rotaractors : 2,58,198

Clubs : 11,226

Interactors : 5,28,701

Clubs : 22,987

RCC members: 2,28,597

RCC : 9,939

Membership Summary

As on August 1, 2018

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	113	4,681	219	64	229	170
2982	68	2,919	130	65	112	46
3000	127	5,074	436	297	671	195
3011	80	3,424	713	58	110	25
3012	85	3,421	664	41	128	56
3020	78	3,992	229	117	466	351
3030	88	4,686	542	84	304	164
3040	96	2,132	224	62	124	140
3053	69	2,776	456	20	56	95
3054	128	5,874	939	96	319	469
3060	100	4,176	496	64	123	137
3070	103	2,913	282	68	158	57
3080	77	3,220	218	74	216	108
3090	76	2,017	55	32	37	122
3100	71	1,709	84	11	72	146
3110	114	3,866	322	51	49	104
3120	74	3,177	384	38	61	52
3131	129	5,201	1,103	115	284	90
3132	97	3,650	357	66	211	150
3141	90	5,153	1,104	120	254	83
3142	94	3,236	552	72	196	65
3150	98	3,525	335	93	234	109
3160	71	2,408	123	30	48	81
3170	125	5,393	467	62	310	161
3181	73	3,073	241	35	181	105
3182	83	3,153	230	37	275	95
3190	131	4,892	605	155	359	51
3201	141	5,287	332	104	132	49
3202	129	4,792	232	105	436	46
3211	139	4,445	273	14	89	124
3212	98	4,004	356	114	280	142
3231	78	3,054	220	56	203	239
3232	107	4,325	641	150	321	80
3240	88	2,985	339	65	151	154
3250	98	3,830	657	51	209	183
3261	70	2,567	343	17	102	42
3262	90	3,294	398	48	73	75
3291	145	3,686	683	82	132	596
India Total	3,721	1,42,010	15,984	2,833	7,715	5,157
3220	66	1,824	240	86	199	76
3271	81	1,416	249	54	16	13
3272	161	2,859	401	46	37	38
3281	205	5,545	803	237	92	187
3282	143	4,055	441	134	48	41
3292	117	4,386	639	124	117	108
S Asia Total	4,494	1,62,095	18,757	3,514	8,224	5,620

Source: RI South Asia Office



प्रत्येक स्टाम्प की एक कहानी होती है

प्रदीप जैन

क्या आप जानते हैं कि 150 से अधिक देश विभिन्न अवसरों पर रोटरी को सम्मानित करने के लिए 1,000 से अधिक स्टैम्प जारी कर चुके हैं। यह किसी देश द्वारा किसी भी संगठन को दिया गया सबसे बड़ा सम्मान है। सबसे पहला रोटरी डाक टिकट ऑस्ट्रिया में विएना में आयोजित हुये 1931 के रोई सम्मेलन की याद में जारी किया गया था। छह डाक टिकटों के एक सेट का अधिमुद्रण करके इस अवसर पर जारी किया गया था। रोटरी को सबसे अधिक महत्व 1955 में मिला जब 27 देशों ने 80 से अधिक डाक टिकट जारी किए। रोटरी की 50वीं वर्षगांठ स्मारक डाक टिकटों को जारी करने वाला पहला देश बेल्जियम था।

शब्द इफिलैटलीफिक रचना 1864 में एक फ्रेंच पुरुष जॉर्ज हर्पिन द्वारा की गई थी जिन्होंने दो यूनानी शब्दों *फिलोस* (प्यार) और *एटलिक* (कर मुक्त) का इस्तेमाल यह दर्शाने के लिए किया था कि एक डाक टिकट लगे पत्र का शुल्क प्राप्तकर्ता द्वारा नहीं दिया जाना है, और इसलिए यह उसके लिए कर मुक्त है।

डाक टिकटों का अध्ययन फिलैटली कहलाता है और टिकटों का अध्ययन करने वाला फिलैटलिस्ट। आकस्मिक टिकट एकत्रित करने वाले व्यक्तियों और

एक फिलैटलिस्ट में अंतर होता है। फिलैटलिस्ट प्रत्येक टिकट का अध्ययन करता है, उसकी डिजाइन की जांच करता है, मुद्रण में हुई त्रुटियों, गलतियों एवं परिवर्तनों को ढूँढता है, जिस कागज पर उसका मुद्रण हुआ, उसका वॉटरमार्क, उसका छिद्रण, इत्यादि को देखता है। वह अध्ययन और व्यवस्थित संग्रहण है जो फिलैटली को टिकट संग्रहण से और फिलैटलिस्ट को टिकट एकत्रित करने वाले से अलग करता है।

ऐसा अक्सर कहा जाता है कि टिकट संग्रहण अन्य किसी शौक की तुलना में अधिक लाभप्रद होता है। टिकट संग्रहण आपको इतिहास, कला, संस्कृति, भूगोल, विज्ञान, वनस्पति, संस्थान-संगठन जैसे सभी विषय सिखाता है। यह युवा एवं वृद्ध दोनों के लिए एक मानसिक थेरेपी है। यह एक किफायती शौक है, और एक ऐसा निवेश जिसका प्रतिफल मिलता है।

टिकटों के एक संग्रह को एकत्रित करने में गर्व एवं उपलब्धि की भावना होती है। सभी रोटरी स्मारक टिकट हमारे संगठन को सलाम करने के लिए जारी हुये - जिसका वह समर्थन करता है और जिसे करने का वह प्रयत्न कर रहा है। वे खूबसूरती, दुर्लभता, और आकर्षक रुचि की वस्तुएँ हैं, और वे केवल अंतराष्ट्रीय



संगठन को याद नहीं कर रहे हैं, बल्कि दुनिया भर में उसकी सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को भी दर्शा रहे हैं।

वापस रोटरी पर आते हुये, रोई के पास 75 मैत्री समूह हैं जिनकी विभिन्न क्षेत्रों में रुचि है। 'रोटरी ऑन स्टैम्प्स (RoS)' 'मनोरंजक एवं व्यावसायिक फैलोशिप' का सबसे सक्रिय क्षेत्र है। रोटरी ऑन स्टैम्प्स उन टिकट संग्राहकों का समूह है जिनकी रो ई, उसके मंडलों, स्थानीय क्लबों और दुनिया भर में सेवा परियोजनाओं की स्मृति में जारी की गई टिकटों में रुचि है, और यह रो ई नीति के अनुसार संचालित होता है। रो ई के प्रकाशनों में से एक में, उसने कहा था: "जिन रोटेरियनों की लाभप्रद मनोरंजक या व्यावसायिक गतिविधियों में सामान्य रुचि है उन्हें स्वयं की जान-पहचान एवं मैत्री को आगे बढ़ाने के लिए एक समूह के रूप में संगठित होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।"

भारत में भी रोटरी टिकट जारी हुये हैं; 1987 में नई दिल्ली में आयोजित हुये एशिया



रोटरी में मेरी यात्रा रोटारेक्ट से शुरू हुई जिससे मैं 1974 में जुड़ा था, और 1977 में, मुझे 'फिलैटली' वर्गीकरण के तहत रोटरी से जुड़ने हेतु आमंत्रित किया गया था।

एक दिन मैंने रोटरी ऑन स्टैम्प्स और उसकी सदस्यता पर दी रोटेरियन पत्रिका में एक दिलचस्प लेख पढ़ा। मैं जल्द ही ठेड का एक सदस्य बन गया। ठेड एक त्रैमासिक सूचनापत्र प्रकाशित करता है। प्रत्येक रोई सम्मेलन में ठेड

एक बूथ लगाता है, जहाँ रोटेरियन उनका संग्रह प्रदर्शित करते हैं और घनिष्ठता से एक दूसरे के साथ वार्तालाप करते हैं।

मैंने 1986 में लास वेगास में आयोजित हुये रोई सम्मेलन के मेरे पहले दौर के दौरान ठेड की बैठक में हिस्सा लिया था, और तब से, अब तक मैं सिंगापुर, बैंकॉक और 2009 में बर्मिंघम (यू के) के रोटरी शताब्दी सम्मेलन को मिलाकर तीन सम्मेलनों में सम्मिलित हुआ हूँ।



क्षेत्रीय सम्मेलन की स्मृति में और 1998 में रोटरी के पोलियो टीकाकरण की स्मृति में दो डाक टिकट का एक सेट जारी किया गया था। 12 जनवरी, 1998 में नई दिल्ली में आयोजित हुई रोटरी विधान परिषद की बैठक की स्मृति में, और 2005 में रोटरी सेवाओं के शताब्दी अंक

की स्मृति में भारत ने पुनः 8 का एक टिकट जारी किया।

राष्ट्रीय प्रयासों द्वारा क्लबों एवं मंडलों के माध्यम से, रोटेरियनों से एक बार व्यक्तिगत रूप से "अच्छाई का इतिहास लिखने का आग्रह" किया गया था; पिछले कुछ वर्षों में रोटेरियनों ने ऐसे ही इतिहास को

डाक टिकटों पर लिखा एवं चित्रों द्वारा समझाया है। चलिये इन संदेशवाहकों को उपलब्धि के एक रिकॉर्ड के रूप में खड़ा होने दें। अधिक जानकारी के लिए <http://www.rotaryonstamps.org> पर जाएं।

*लेखक रोटरी क्लब पाटलीपुत्र,
मंडल 3250 के सदस्य हैं।*

मंडल 3131 ने एक गिनीज रिकॉर्ड बनाया

टीम रोटरी न्यूज

अंग दान के लिए 23,181 प्रतिज्ञाओं के साथ, पुणे गांधी भवन के रोटरी क्लब, मंडल 3131 ने 'आठ घंटों में अंग दान के लिए अधिकतम संख्या में लोगों को ऑनलाइन साइन अप करके एक नया गिनीज रिकॉर्ड स्थापित किया है।' संपूर्ण देश में 950 शहरों के लोग इस महत्वपूर्ण अभियान के लिए साइन अप किया।

क्लब के अध्यक्ष अमृता देवगांवकर कहते हैं, "गुर्दे की विफलता के कारण एक निकटतम रिश्तेदार की मृत्यु ने मुझे इस पहल को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया।"

एक वेबसाइट, www.giftlife.co.in का निर्माण अंग दान करने की प्रतिज्ञा के लिए एक मंच के रूप में किया गया और पुणे में सहाद्री अस्पताल को हेल्थकेयर पार्टनर के रूप में नियुक्त किया गया। इस पुनीत कार्य में क्षेत्रीय प्रत्यारोपण समन्वय केंद्र के मुख्य समन्वयक आरती गोखले ने मार्गदर्शन प्रदान किया। प्रचार का कार्य सोशल और प्रिंट मीडिया के माध्यम से किया गया था। डीजी शैलेश पालेकर ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर इस पुनीत अभियान को बढ़ावा दिया, जिसे स्थानीय चैनलों और रेडियो चैनलों पर प्रसारित किया गया। 300 से अधिक स्वयंसेवकों ने लोगों को



DG शैलेश पालेकर और रोटरी क्लब पुणे गांधी भवन की अध्यक्ष अमृता दियोगांवकर, गिनीज प्रमाण पत्र के साथ।

प्रतिज्ञा पंजीकृत करने के लिए शहर में 40 कंपनियों और संस्थानों में विशेष कियोस्क स्थापित किया।

उत्साह से दहकते हुए, अमृता ने कहा, रोटेरियन को महाराष्ट्र राज्य में बंद और कुछ क्षेत्रों में नेटवर्क विफलता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन "दिन के अंत में गिनीज प्रमाणपत्र प्राप्त कर मैं रोमांचित थी।"

डॉ विमल कुमार भंडारी, एनओटीटीओ के निदेशक गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अधिनिर्णायक थे।

नेत्र, गुर्दे, हृदय, फेफड़ें, यकृत और अग्नाशय के दान के लिए प्रतिज्ञा प्राप्त की गई थी। अमृता कहती हैं कि चार दाता 100 साल से आयु के थे, जिसमें एक दाता की आयु 101 वर्ष है। ■

क्या आपका प्रशिक्षक आपके लिए उपयुक्त है?

डॉ शीला नम्बियार

जब आप आपकी फिटनेस यात्रा आरंभ करते हैं, या आप उसमें पहले से ही सम्मिलित हैं, तो आप शायद स्वयं के प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के लिए एक निजी प्रशिक्षक रखना चाहेंगे। बहुत से लोगों को उस अतिरिक्त प्रेरणा की आवश्यकता होती है जिसके मिलने की उम्मीद वे अपने प्रशिक्षक से करते हैं। तो आप एक उपयुक्त प्रशिक्षक को कैसे नियुक्त करते हैं और कैसे यह निश्चय करते हैं कि वह आपके लिए सही मायनों में उपयुक्त है या नहीं?

प्रशिक्षकों को प्रमाणित करने वाले अनेक निकाय हैं। यह IFAA - भारत, (इंटरनेशनल फिटनेस एंड एरोबिक अकैडमी), ACE (अमेरिकन कॉलेज ऑफ़ एक्सरसाइज), ACSM (अमेरिकन कॉलेज ऑफ़ स्पोर्ट्स मेडिसिन) या नेशनल अकैडमी ऑफ़ स्पोर्ट्स मेडिसिन या और भी अन्य हो सकते हैं। आपका प्रशिक्षक अहर्ता अनुसार एक फ़िज़ियोथेरेपिस्ट हो सकता है जो किसी विशेष क्षेत्र जैसे ताकत प्रशिक्षण या पिलाटीज में माहिर हो। कई प्रशिक्षक जो शायद एथलीट या खिलाड़ी होते हैं, या बाँड़ी बिल्डर रह चुके होते हैं, एक फिटनेस सुविधा द्वारा नियुक्त किए जाते हैं और अपने ग्राहकों के साथ कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किए जाते हैं। जब आप एक प्रशिक्षक के साथ कार्य करना प्रारंभ करें तो उसकी पृष्ठभूमि की जाँच करें।

यद्यपि आपके प्रशिक्षक का कौशल और ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन उसका अंतर्वैयक्तिक कौशल, भावनात्मक और सामाजिक समझ एवं मार्गदर्शन करने और प्रेरित करने की क्षमता इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। हो सकता है वह बहुत योग्य और ज्ञानवान हो मगर उसमें सहानुभूति और ग्राहकों की जरूरतों की समझ की कमी हो।

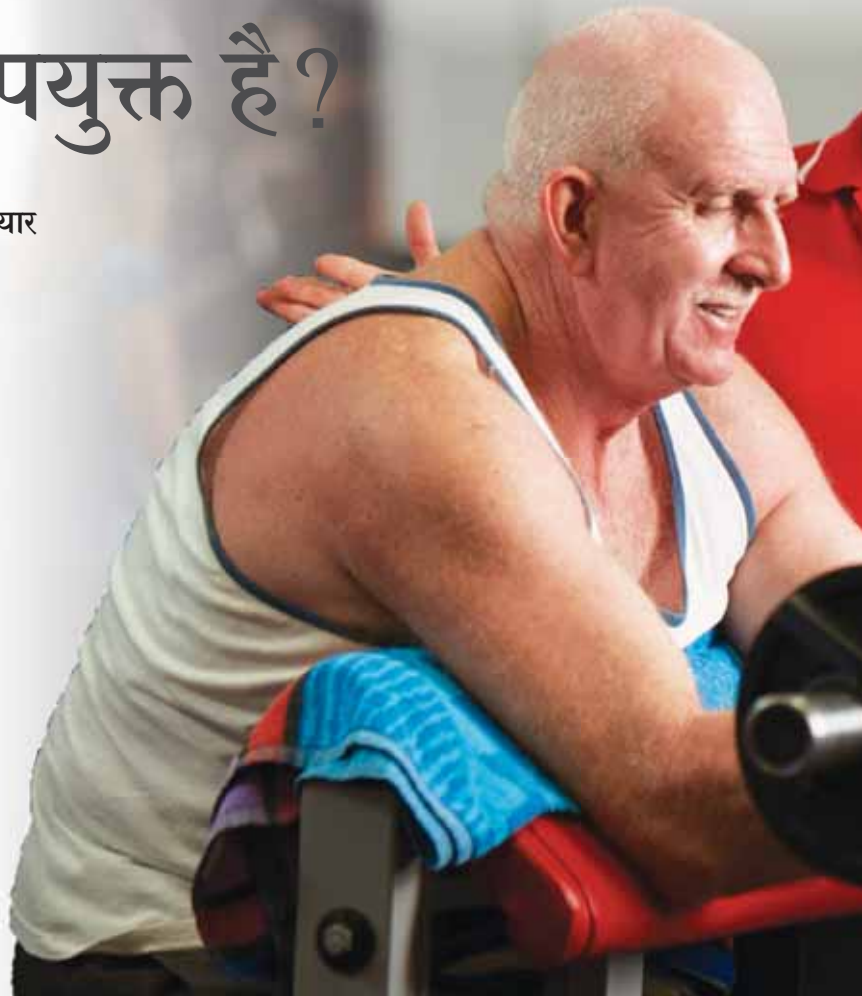
आपके प्रशिक्षक का फिटनेस सिद्धांत क्या है?

अपने प्रशिक्षक से उसके फिटनेस के विचार के बारे में पूछना उचित है। क्या यह केवल छरहरा या दुबला दिखने के बारे में है, या यह अधिक समग्र है, जिसमें पोषण, प्रेरणा और संपूर्ण कल्याण का संयोजन है? क्या वह अपने ग्राहकों की जरूरतों को समझता है या पूरी तरह से अपने दृष्टिकोण से कार्य करता है? क्या वह दूसरों की उनके लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करने में विश्वास करता है?

यहाँ पूछने के लिए कुछ प्रश्न हैं -

- क्या वह समझता है कि एरोबिक्स, बल, लचीलापन आदि, जैसे फिटनेस के विभिन्न पहलुओं को आप पर कैसे लागू किया जाना चाहिए?

- क्या वह आहार के महत्व को समझता है और क्या वह आपको उचित आहार की सलाह दे सकता है या वह आपको एक आहार विज्ञ के पास भेजता है? क्या वह आपसे आपकी आहार संबंधी आदतों के बारे में बात करता है?
- क्या उसके पास आपकी स्वास्थ्य स्थिति को संभालने के लिए पर्याप्त जानकारी है? मान लीजिए आप मधुमेह रोगी हैं और आपका इलाज चल रहा है, क्या वह व्यायाम करते समय आपको संभालने हेतु पर्याप्त जानकारी रखता है? क्या वह आपके द्वारा ली जा रही दवाइयों के बारे में पूछता है? या, यदि आप एक वरिष्ठ व्यक्ति हैं, तो क्या वह एक वृद्ध ग्राहक को संभाल सकता है? क्या उसने पहले कभी वृद्ध ग्राहकों के साथ कार्य किया है?





- क्या वह प्रोत्साहित भाषा का प्रयोग करता है और जब आप छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं तो क्या अक्सर आपकी प्रशंसा करता है या वह आपको यह महसूस करवाता है कि आप कुछ खास प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं?
- क्या वह उचित लक्ष्यों को निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने में आपकी मदद करता है?
- क्या वह आपको आपके व्यायाम सिखाता है, उन्हें आपको समझाता है, आपको यह समझने में मदद करता है कि आप उन व्यायामों को क्यों कर रहे हैं और वे शरीर के किन हिस्सों को संबोधित करते हैं आदि?

प्रत्येक व्यक्ति अलग होता है और उसके साथ अलग ढंग से बरताव किए जाने की जरूरत है। आपके द्वारा स्वयं के लिए निर्धारित किये गए लक्ष्यों को आपके लक्ष्य होना चाहिए ना कि आपके प्रशिक्षक के। आपका प्रशिक्षक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो आपका आपके विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शन करें। उसे आपको आपके फिटनेस रूटीन के बारे में भी शिक्षित करना चाहिए। उद्देश्य यह होना चाहिए कि जरूरत पड़ने पर आप स्वतंत्र रूप से व्यायाम करने के कबिल हो और जीवनभर आपको वास्तव में क्या करना है और कैसे करना है इन सब के लिए किसी प्रशिक्षक पर निर्भर ना होना पड़े। प्रेरित होने के लिए किसी की जरूरत होने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन एक समय ऐसा भी आना चाहिए जब प्रेरणा आपके अंदर से आए।

अंत में, एक प्रशिक्षक जो चाहता हो कि आप उस पर निर्भर रहे वह वास्तव में उसके मन में आपका सर्वोत्तम हित सोचकर कार्य नहीं कर रहा है। यदि आपके पास एक बढ़िया प्रशिक्षक है, तो अंत में आपको अपने आप व्यायाम करना आना चाहिए, इसके बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए और इस बात की समझ होनी चाहिए कि जो आप कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं। आपको अपने स्वयं के फिटनेस रूटीन को संभालने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वासी होना चाहिए और शायद आप दूसरों को भी प्रेरित कर सकें।

लेखिका : एक आब्स्ट्रिक्शन और स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं और फिटनेस और जीवनशैली परामर्शदाता भी हैं। उन्होंने दो किताबें : Get Size wise,

Gain to Lose लिखि हैं।

वेबसाइट - www.drsheelanambiar.com

- क्या वह आपकी जीवनशैली को समझने के लिए विस्तार में प्रश्न पूछता है? उदाहरण के लिए क्या आपकी नौकरी अधिक बैठे रहने वाली है, क्या आप अधिक यात्रा करते हैं, क्या आप अधिक सामाजिक है, आप कहाँ खाते हैं, क्या आपने पहले भी प्रशिक्षण लिया है, आपको किस तरह का व्यायाम अधिक रुचिकर लगता है और भी बहुत कुछ।
- क्या वह आपको दिनभर कुछ करने के लिए प्रेरणात्मक सुझाव देता है (केवल जिम के वक्त ही नहीं)।
- वह आपको कैसे प्रेरित करता है और चुनौती देता है? क्या वह नकारात्मक तर्कों का इस्तेमाल करता है (यह कहकर - तुम मोटे हो और तुम्हें

वज़न कम करने की आवश्यकता है) या फिर वह अपने दृष्टिकोण से सकारात्मक है (कुछ इस तरह से कहकर कि वज़न को कम करना आपको स्वस्थ, अधिक आनंददायक जीवन जीने में मदद करेगा और जब आप बेहतर प्रदर्शन करते हैं तो क्या वह आपकी प्रशंसा करता है?)

- क्या वह जानता है कि आप पर कितना शारीरिक दबाव डालना है और आपको कितनी चुनौती देनी है या वह आपको आपकी क्षमताओं के परे थकने और चोटिल होने तक दबाव डालने के लिए जोर देता है?
- क्या वह लगातार आपकी अन्य ग्राहकों के साथ तुलना करता है?
- क्या आप उससे प्रेरित है?



संयोग से मिली किताबें

संध्या राव

परिस्थितियाँ पाठन को अजीब और आश्चर्यजनक
अनुभवों में परिवर्तित करती हैं।

कुछ माह पहले, मेरे बेटे ने बताया कि उसने हाल ही में सॉमरसेट मौघम की किताब *द रेज़र्स एज* को पढ़ा और उसका आनंद लिया। हालाँकि मुझे याद नहीं आया कि यह किताब किस बारे में थी, लेकिन मुझे खुशी हुई कि उसने मौघम, एक शानदार लेखक जो 1930 के दशक में सबसे अधिक कमाई करने वाले लेखक माने जाते थे, को पढ़ने की कोशिश की। उनकी किताब *द मून एंड सिक्स्पेंस* जो हमने कॉलेज के दिनों में पढ़ी थी, चित्रकार पॉल गॉगिन के जीवन पर आधारित थी; यह एक पसंदीदा किताब थी भले ही अर्ध-आत्मकथा *ऑफ़ ह्यूमन बाँडेज* सबसे मशहूर थी।

कुछ हफ्तों बाद, मुझे तमिलनाडू के चेन्नई के दक्षिण में बसे एक शहर तिरुवन्नामलाई जाने का अवसर मिला जो उसके मंदिरों और अरुणाचल की पहाड़ियों, जिसे पावन जगह माना जाता है, के चारों तरफ आश्रम स्थापित करने वाले 'धर्मात्मा' व्यक्तियों के लिए मशहूर है। इन संतों में सबसे अधिक पूजनीय है रमणा महर्षि; हम उन्हीं के आश्रम गए थे। जब मैंने मणि सर को बताया कि मेरे परदादा रमणा महर्षि के भक्त थे और महर्षि को देखने आने वाली डॉक्टरों की पैल में भी थे, तो उन्होंने मुझे वहाँ पर अभिलेखागार में काम करने वाले जॉन से मिलवाया। जॉन ने उदारतापूर्वक वो सारी तस्वीरें निकाली जिसमें मेरे परदादा, डॉ श्रीनिवास राव, मौजूद थे। जब हमने रमणा महर्षि और एक कोकेशियाई सज्जन के साथ उनकी कुछ तस्वीरें देखी, तो जॉन ने कहा, “वह गाइ हेग है। ऐसा माना जाता है कि मौघम की किताब *द रेज़र्स एज* में मुख्य किरदार गाइ हेग पर आधारित था; और उस किताब में वर्णित संत व्यक्ति निश्चित रूप से रमणा महर्षि ही हैं।”

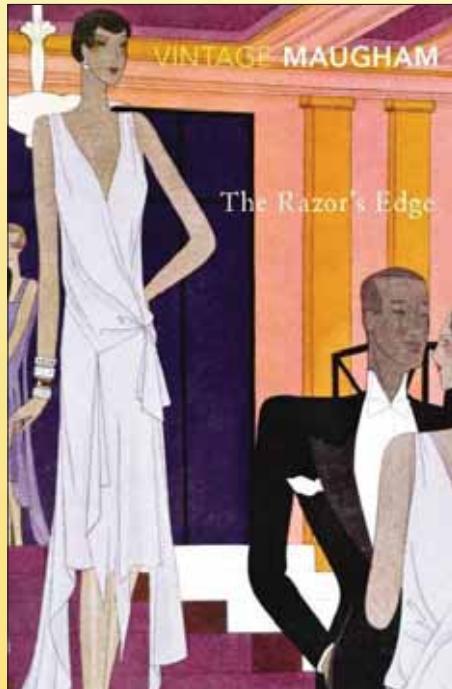
इस जानकारी को अनदेखा नहीं किया जा सकता था, और ना ही इसे एक संयोग समझकर भुलाया जा सकता था। यह एक संकेत की तरह लग रहा था: किताब पढ़ो! और अधिक जानो! इसी बीच, आश्रम की किताबों की दुकान पर, मुझे किसी पॉल ब्रंटन द्वारा लिखी एक किताब मिली जिसका शीर्षक बहुत ही लुभावना था: *द सर्च इन सीक्रेट इंडिया*। पुस्तक के पीछे “उन्हें बीसवीं सदी के पूर्व की आध्यात्मिक परम्पराओं के सबसे महानतम खोजकर्ताओं में से एक” के रूप में वर्णित किया गया था। “मगर मैंने इसलिए किताब खरीदी क्योंकि महत्वपूर्ण निष्पक्षता और सामान्य ज्ञान के लिए उनके मन में सम्मान होने के साथ-साथ

वह एक पत्रकार भी थे।” मैं पढ़ना शुरू करने के लिए गेस्टहाउस लौटने तक का इंतज़ार नहीं कर सकी, और चेन्नई लौटते समय टैक्सी में भी पढ़ने से नहीं रुकी।

मैंने कभी ब्रंटन के बारे में नहीं सुना था, लेकिन हमेशा की तरह, इंटरनेट ने कई जवाब दे दिए थे। आरंभकों के लिए, पॉल ब्रंटन, रफेल हर्स्ट का कल्पित नाम था और यह किताब, जो 1934, वह साल जब मेरी माँ पैदा हुई थी, में पहली बार प्रकाशित हुई थी, एक बेस्टसेलर किताब थी और कई बार पुनः प्रकाशित की गई थी। कहा जाता है कि, उन्हीं ने भारतीय अध्यात्म और योग अभ्यास का परिचय पश्चिम से करवाया था। किताब प्रारंभ

होती है: “पहले के यात्री भारतीय फकीरों की विचित्र कहानियों के साथ अपने घर यूरोप लौटे बल्कि आधुनिक यात्री भी कभी-कभी समान प्रकार की कहानियाँ लिखते हैं। उन दिव्य चरित्रों... पुरुषों का रहस्यमय वर्ण जिन्हें कुछ लोग योगी बुलाते हैं और कुछ फकीर, से संबंधित पीछे की सच्चाई क्या है? इन अनियमित संकेतों के पीछे की सच्चाई क्या है जो हमें यह बताते हैं कि भारत में एक पुराना ज्ञान है जो इसका अभ्यास करने वालों से मानसिक शक्तियों के सबसे असाधारण विकास का वादा करता है? मैंने इसका पता लगाने के लिए एक लंबी यात्रा हेतु प्रस्थान किया और निम्नलिखित पन्ने मेरी रिपोर्ट का सार प्रस्तुत करते हैं।”

अपने बचपन और जिज्ञासा और उन घटनाओं जिन्होंने उन्हें एक यात्रा आरंभ करने हेतु प्रेरित किया, के बारे में बात करके





रमणा महर्षि

प्रसंग स्थापित करने के बाद, वह बहुत से लोगों के बारे में लिखते हैं जैसे बॉम्बे में मिस्त्र का एक जादूगर और सोच को पढ़ लेने वाला; अहमदनगर के पास फ़ारसी मूल के एक स्वयंघोषित 'मसीहा' मेहर बाबा, जिनका ब्रंटन के साथ एक वर्णमाला पटल के माध्यम से पहला 'संवाद' यह था: "मैं दुनिया का इतिहास बदलूँगा;" मद्रास के एक योगी एवं 'अड्यार नदी के सन्यासी' ब्रमसुगानन्दाह जिनकी साँस नियंत्रण करने की प्रवीणता मृत्यु पर विजय प्राप्त करती हुई प्रतीत होती है; और यहाँ तक कि वह कांचीपुरम के शंकराचार्य के बारे में भी लिखते हैं। वह शंकराचार्य ही थे जिन्होंने, ब्रंटन को किसी ऐसे मास्टर के बारे में पूछने पर जो "मुझे उच्च योग की वास्तविकता का प्रमाण देने में सक्षम हो, रमणा महर्षि के पास भेजा था।"

संत की उपस्थिति में मौजूद शांति में ब्रंटन के अनुभव का वर्णन बहुत लोगों के समझ में आ जाएगा: "इस आदमी में कुछ तो बात है जिसने मेरे ध्यान को इस तरह पकड़ रखा है जैसे चुम्बक स्टील के चूरे को पकड़कर रखता है। मैं उनसे नज़रें नहीं हटा पा रहा हूँ। मेरी प्रारंभिक हैरानी, पूर्ण रूप से उपेक्षित होने पर मेरी परेशानी, धीरे-धीरे गायब हो गई क्योंकि इस अद्भुत आकर्षण ने मुझे और अधिक मजबूती के साथ जकड़ना शुरू कर दिया है। लेकिन उस असामान्य दृश्य के छटने से पूर्व ही मैं मेरे दिमाग के अंदर चल रहे एक शांत, प्रतिरोधविहीन परिवर्तन से अवगत हुआ। एक के बाद एक, जो प्रश्न इतनी कुशल सटीकता के साथ

मैंने ट्रेन में तैयार किये थे वे सब दिमाग से निकल गए... मैं बस इतना जानता हूँ कि शांति की एक स्थिर नदी मेरे अंदर बहती प्रतीत हो रही है, एक विचित्र सी शांति मेरे अस्तित्व के आंतरिक भागों में प्रवेश कर रही है, और विचारों की यातनाओं से ग्रस्त मेरे मस्तिष्क को कुछ आराम मिलने लगा है।"

हालाँकि, *द रेज़र्स एज* को लेकर मेरा दिमाग व्याकुल था और चूँकि मैं इसे पढ़ने के लिए अधीर थी, मैंने *द सर्च इन सीक्रेट इंडिया* के साथ-साथ इसे भी उत्सुकता से पढ़ना शुरू कर दिया। लैरी डेरल उन कई पात्रों में से एक है जिनकी जिंदगियाँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और *द रेज़र्स एज* में जिनकी कहानियाँ बहुत ही विस्तार में बताई गई हैं; मौघम उपन्यास में स्वयं के रूप में ही प्रकट होते हैं। युद्ध में सेवा देने के बाद, लैरी उस समाज में लौटता है जो दुनिया के साथ शांति से रहता हुआ प्रतीत होता है। लेकिन जैसा कि उपन्यास में वर्णित है, उसकी कुछ बनने की कोई अभिलाषा नहीं है, वह एक आंतरिक तलाश में है। यह यात्रा उसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में और विभिन्न अनुभवों के मध्य ले जाती है; अंत में वह स्वयं को एक पुण्यात्मा के आश्रम में पाता है जो केवल एक धोती पहनते हैं और कम बोलते हैं, लेकिन वह लैरी की अंतरात्मा से बात करते हैं। यह एक शानदार उपन्यास का अपर्याप्त और गलत सारांश है, परंतु यह केवल विचारार्थ विषयों को इंगित करता है।

जब, उपन्यास के अंत में, लैरी मौघम से कहता है कि "सबसे बड़ा आदर्श जो एक व्यक्ति स्वयं के समक्ष रख सकता है वह है आत्म-परिपूर्णता का," तो मौघम संशयपूर्ण प्रतिक्रिया देते हुए कहते हैं, "क्या तुम एक पल के लिए कल्पना कर सकते हो कि तुम, एक अकेला व्यक्ति, अमेरिका के लोगों

ऐसा लगता है कि मौघम ने

रमानाश्रम का दौरा किया

था और संक्षिप्त में महर्षि से

मुलाकात की थी।

पॉल ब्रंटन, रफेल हर्स्ट का

कल्पित नाम था। उन्होंने ने

भारतीय अध्यात्म और योग

अभ्यास का परिचय पश्चिम

से करवाया था।

की तरह इतने बेचैन, व्यस्त, स्वेच्छाचारी, तीव्र व्यक्तिपरक लोगों पर कोई प्रभाव डाल सकता है?"

"मैं कोशिश कर सकता हूँ," लैरी जवाब देता है। "वह एक आदमी था जिसने पहिये का आविष्कार किया था। वह एक आदमी था जिसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की थी... यदि आप तालाब में एक पत्थर फेंकते हैं तो ब्रह्माण्ड संपूर्ण रूप से वैसा नहीं होता जैसा पहले था... हो सकता है कि मैं वैसा जीवन जियूँ जैसी मैंने अपने लिए योजना बनाई थी तो यह दूसरों को प्रभावित कर सकता है, हो सकता है कि वह प्रभाव उस छोटी लहर से बड़ा ना हो जो तालाब में पत्थर फेंकने से उत्पन्न होती है, लेकिन एक लहर दूसरी लहर को बनाती है, और वह तीसरी को; यह संभव है कुछ लोग देखेंगे कि मेरे जीने का तरीका खुशियाँ और शांति प्रदान करता है, और बदले में जो उन्होंने सीखा वह उसे दूसरों तक पहुँचाएंगे।"

लैरी के जीने का तरीका क्या है, यह जानने के लिए उपन्यास पढ़ने की आवश्यकता है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि ब्रंटन के कुछ पात्रों ने ऐसी लहरों को जन्म दिया है जो अभी तक चल रही हैं। ऐसा लगता है कि मौघम ने रमानाश्रम का दौरा किया था और संक्षिप्त में महर्षि से मुलाकात की थी। निश्चित रूप से वह ब्रंटन के कार्य से प्रभावित थे; आखिरकार उन्होंने *द सर्च इन सीक्रेट इंडिया* के कुछ दस सालों बाद अपना उपन्यास प्रकाशित किया था। जिस तरह से दोनों किताबें मेरे लिए एक साथ आई वह किसी चमत्कार से कम नहीं था।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका

और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

असमी बच्चों के लिए जीवन का उपहार

किरण ज़ेहरा

हमारे लिए उन्हें इस बात के लिए राजी करना बहुत मुश्किल था कि वे सुरक्षित होंगे और हमारा कोई छिपा हुआ मकसद नहीं है। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई ऐसा जो दूर का रिश्तेदार भी नहीं है इतनी महंगी सर्जरी के लिए पैसे देगा।”

उनका विश्वास जीतने और परिवारों को मनाने के बाद, ग्रामीण असम के 8 बच्चों जिनमें तपोशी भी शामिल थी, को दिल की सर्जरी के लिए दिल्ली भेजा गया। प्राथमिक जांच एवं परीक्षण, और मरीज एवं उसके साथ जाने वाले एक सदस्य की यात्रा के खर्च हेतु क्लब ने ₹1,50,000 का योगदान किया। दिन में तीन वक्त के भोजन के साथ रहने की व्यवस्था का प्रबंध दिल्ली के एक गैर-सरकारी संगठन मानव आश्रय द्वारा किया गया था।

रोटरी क्लब दिल्ली ईस्ट एंड, मंडल 3011, और टीआरएफ द्वारा गिफ्ट ऑफ लाइफ परियोजना के लिए एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से सर्जरी की लागत और सर्जरी के बाद की देखभाल का खर्च उठाया गया।

सभी 8 बच्चों का सफलतापूर्वक इलाज किया गया। “मेरी बच्ची स्वस्थ और प्रसन्न होकर घर लौटी है,” तपोशी की माँ कहती है आगे यह कहते हुए कि “रोटेरियन ना मेरे परिवार वाले थे ना मित्र, ना ही मेरी

नन्हें एकबाल हुसैन का जन्मजात हृदय विकार का इलाज प्रगति में।

हमें नहीं पता था कि हांफना और दिल का तेज़ी से धड़कना जन्मजात दिल की बीमारी के लक्षण है,” असम के अंदरूनी इलाके में स्थित बिलपुराई गांव की मणिका बरूआ कहती है। वह उनकी 1 वर्षीय बेटी तपोशी बरूआ को स्थानीय हेल्थ केयर सेंटर में लेकर गईं परंतु कोई आराम नहीं मिला जब तक की बच्ची 1 दिन खेलते हुए बेहोश हो गई और उसे तेजपुर के एक

अस्पताल में ले जाना पड़ा। जब डॉक्टर ने कहा कि तपोशी की जन्मजात दिल की बीमारी को ठीक करने के लिए उसके दिल की सर्जरी करने की आवश्यकता है, मणिका हैरान एवं बेबस हो गई। “हम एक सर्जरी का खर्चा नहीं उठा सकते थे,” वह आगे कहती है। दिल के डॉक्टर ने उस परिवार को रोटरी की गिफ्ट ऑफ लाइफ पहल के बारे में बताया जो 18 वर्ष तक के बच्चों की मुफ्त दिल की सर्जरी करवाने में मदद करती

है, और उनका संपर्क रोटरी क्लब ऑफ ग्रेटर तेजपुर, मंडल 3240, से करवाया।

चिंतित मणिका, शिवानी तिवरवाल से मिली जो क्लब की गिफ्ट ऑफ लाइफ पहल की समन्वयक है। शिवानी कहती है कि सर्जरी की आवश्यकता वाले बच्चों के परिवार अत्यंत गरीब हैं और “वे दूरस्थ/छोटे गाँवों से आते हैं। वे लोग कभी कहीं नहीं गए और अपनी मातृभाषा के अलावा कोई भी भाषा अच्छे से नहीं बोल पाते हैं।

जान-पहचान के लोग। लेकिन, उन्होंने मेरे पास आकर मेरी बच्ची को एक नया जीवन दिया। धन्यवाद, शिवानी मैडम, और धन्यवाद रोटरी।”

स्वयं जन्मजात दिल की बीमारी से पीड़ित रही शिवानी कहती है, “मैं बच्चों और अभिभावक दोनों के दर्द से जुड़ सकी, और मैं मेरे क्षेत्र के इन बच्चों की मदद करना चाहती थी।” वह रोटरी क्लब शिलांग, मंडल 3240, की रोटेरियन किरण जोशी का धन्यवाद करती है कि उन्होंने पिछले साल उनके मंडल सम्मेलन में उनका परिचय इस परियोजना से करवाया। “यह परियोजना बंधन, जाति, संप्रदाय, धर्म, नस्ल और रंग से परे है। क्योंकि हर हफ्ते भारत और विदेश के

कम से कम तीन बच्चों का गिफ्ट ऑफ लाइफ के अंतर्गत ऑपरेशन किया जाता है,” वह आगे कहती है।

“गिफ्ट ऑफ लाइफ परियोजना का मकसद जन्मजात दिल की बीमारी से पीड़ित बच्चों के परिवारों का आर्थिक एवं शारीरिक बोझ कम करना और बच्चों की एक सुखद एवं स्वस्थ जीवन जीने में मदद करना है, गिफ्ट ऑफ लाइफ परियोजना के राष्ट्रीय समन्वयक” ए सी पीटर कहते हैं। मुख्य जांच से लेकर अस्पताल के निर्धारण और “रोटरी मरीज” की पहचान को गुप्त रखने तक, “बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने” के लिए गिफ्ट ऑफ लाइफ सब कुछ करता है। ■



तपोशी बरुआ अस्पताल में अपने पिता के साथ।

जयपुर रोटरी द्वारा एकजुटता का प्रदर्शन टीम रोटरी न्यूज



RIDE भरत पांड्या, जयपुर के पांच रोटरी क्लबों के नये अध्यक्षों के साथ।

एकजुटता और साहचर्य का दुर्लभ प्रदर्शन करते हुए, मंडल 3054 के पांच रोटरी क्लबों - जयपुर मेट्रो, जयपुर ईस्ट, जयपुर हाइट्स, जयपुर महानगर और जयपुर सिटी - ने मुख्य अतिथि आरआईडीई डॉ भरत पांड्य के देखरेख में संयुक्त संस्थापन का आयोजन करते हुए नव निर्वाचित अध्यक्षों और सचिवों को उनके पद की शपथ दिलाने का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया।

इस अवसर पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ 250 से अधिक रोटेरियन उपस्थित थे। डॉ पांड्य ने अपने संबोधन में, रोटेरियन से “सेवा परियोजनाओं को शुरू करने और समाज की सेवा

करते हुए सभी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बनने का आग्रह किया।” उन्होंने क्लबों की ऐसी आपसी एकता और एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए प्रशंसा की और विश्वास व्यक्त किया कि वे भविष्य में भी ऐसे संयुक्त आयोजनों को दोहराएंगे।

मंडल 3054 के सबसे वरिष्ठ रोटेरियन के एल जैन, कार्यक्रम के सभापति थे जबकि रोटरी क्लब जयपुर मेट्रो के चार्टर अध्यक्ष डी एस भंडारी ने सह-संयोजक के रूप में कार्यक्रम को निष्पादित करने में उनकी सहायता की। इस अवसर पर पांच क्लबों द्वारा पच्चीस नए सदस्यों को शामिल किया गया और कुछ सेवा परियोजनाओं की भी घोषणा की गई।

डॉ पांड्य ने रोटरी क्लब जयपुर मेट्रो द्वारा शुरू की गई एक परियोजना के अंतर्गत 300 स्कूल बच्चों के मध्य यूनिफार्म और स्कूल किट वितरित किया। रोटरी क्लब जयपुर महानगर ने बनी पार्क में एक मंडल न्यायालय में एक वॉटर कूलर स्थापित किया।

रोटरी क्लब जयपुर हाइट्स और श्याम नगर विकास समिति ने ₹2 लाख की लागत से एक फिजियोथेरेपी और डायलिसिस सेंटर स्थापित करने के लिए एक एमओयू पर हस्ताक्षर किया। रोटरी क्लब जयपुर सिटी ने इस रोटरी वर्ष के दौरान द्रव्यवती नदी के दोनों किनारों पर वृक्षारोपण अभियान शुरू करने का वादा किया। ■



रोटरी क्लब कुम्बाकोनम सेंट्रल - मंडल 2981

सेक्रेड हार्ट अस्पताल में कुछ रोग के मरीजों को ₹50,000 की लागत से विशेष रूप से तैयार किये गए जूते दिए गए। अस्पताल में 200 मरीजों को दोपहर का भोजन प्रदान किया गया।

रोटरी क्लब तिरुचेंगोडे हाई-टेक - मंडल 2982

क्लब ने विभिन्न सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों के लाभ हेतु स्टेनलेस प्लेटों, स्टेशनरी इत्यादि जैसी विभिन्न प्रकार की उपयोगी वस्तुएं प्रदान की। बच्चों के लिए एक दंत जाँच शिविर भी आयोजित किया गया।



रोटरी गोदावरी पालाकोल - मंडल 3020

तटीय आंध्र प्रदेश के एक शहर, पालाकोल के आसपास के 35 गाँवों के 600 लोग क्लब द्वारा आयोजित एक चिकित्सीय जाँच शिविर से लाभान्वित हुए। जरूरतमंदों को ₹50,000 की दवाइयाँ वितरित की गई।

रोटरी क्लब मदुरई - मंडल 3000

सुविधाओं से वंचित महिलाओं को सिलाई का कोर्स सिखाने के लिए ₹7.6 लाख की लागत से एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र निर्मित किया गया। सदस्यों ने केंद्र के लिए 15 सिलाई मशीन दान की जो प्रत्येक तिमाही में 120 महिलाओं को प्रशिक्षित करेगा।



विधियाँ

रोटरी भुसावाल रेलसिटी - मंडल 3030

परियोजना Joy of giving के तहत क्लब के सदस्यों ने मुशलतानड़ा, एक जनजातीय गाँव के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय का दौरा किया और बच्चों को स्टेशनरी, छात्रा, टिफिन बक्से, स्नैक्स और दूधपेस्ट प्रदान किया। उपहारों ने बच्चों के चेहर पर मुस्कान लाई।



रोटरी क्लब अजमेर मेट्रो - मंडल 3053

अजमेर विकास प्राधिकरण के कमिश्नर और एक प्रतिष्ठित आईएस ऑफिसर, नामित मेहता को डीजी प्रियेश भंडारी की उपस्थिति में क्लब में शामिल किया गया। यह नए सदस्य जोधपुर से है और भंडारी के चचेरे भाई है।



रोटरी क्लब उधमपुर - मंडल 3070

राजौरी के जिला सिविल अस्पताल में, रोटरी क्लब राजौरी के साथ साझेदारी में एक पांच दिवसीय नेत्र जाँच और सर्जिकल शिविर आयोजित किया गया। 150 मरीजों की मोतियाबिंद की सर्जरी की गई, जिसमें एक 15-वर्षीय लड़की भी शामिल थी जो अभिघातज मोतियाबिंद से नेत्रहीन हो गई थी।

रोटरी क्लब शाहबाद मार्कंडा - मंडल 3080

परियोजना छाया के तहत 15 बड़े छात्रों का वितरन कॉबलरों को दिया गया। छात्रों पर क्लब का नाम और रोटरी वील नक्काशीत हैं। इस से रोटरी की जन छावी को फ़ायदा और कॉबलरों को छाया भी मिलेगी।



मंडल 3141

सुविधाओं से वंचित बच्चों के लिए जन्मजात हृदय विकार, कर्णावर्त तंत्रिका आरोपण और विकलांग चिकित्सा संबंधी मुद्दों के इलाज के लिए वित्तीय समर्थन प्रदान करने हेतु मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस और PRID अशोक महाजन की उपस्थिति में महाराष्ट्र राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया।



रोटरी क्लब पंडारिपुरम - मंडल 3150

नए क्लब अध्यक्ष के नियुक्ति कार्यक्रम पर जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीनें वितरित की गई। कल्पतरु कताई मिल द्वारा उसकी CSR निधि के हिस्से के रूप में ₹75,000 की लागत की ये मशीनें दान की गई।



रोटरी क्लब नेल्लोर - मंडल 3160

पेंचालाकोना गाँव में, रेड्डीजन सेवा संघम के सहयोग से एक नेत्र शिविर आयोजित किया गया जिसमें करीब 100 लोगों की बीमारियों की जाँच की गई। जरूरतमंदों की सुधारात्मक सर्जरी की गई और उन्हें चश्में वितरित किये गए। गुंताकट्टा गाँव के सरकारी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को स्टेशनरी और स्कूल के बस्ते वितरित किये गए।



रोटरी क्लब मूहबीदरी - मंडल 3181

सरकारी स्कूलों को वाटर प्यूरीफायर सौंपे गए जो बच्चों को साफ़ और सुरक्षित पेयजल प्रदान करेंगे।



रोटरी क्लब कादुर - मंडल 3182

वाय. सिद्धारल्ली गाँव के एक सरकारी स्कूल के बच्चों को स्कूल के बस्ते, कापी और स्टेशनरी किटें वितरित की गई। अन्य रोटेरियनों के साथ क्लब के अध्यक्ष के एच श्रीनिवास मौजूद थे।



रोटरी क्लब त्रिचुर सेंट्रल - मंडल 3201

एक सरकारी स्कूल में आश्रय लेने वाले 850 से अधिक बाढ़ पीड़ितों को चादर, तौलिये, साबुन, चावल और अन्य राशन के रूप में राहत सहायता प्रदान की गई। कुछ सदस्यों ने पैसे और वस्तुएं दोनों दान करके योगदान दिया।



विधियाँ

रोटरी क्लब त्रिपुर साउथ - मंडल 3202

IPDG PM शिवशंकरन ने ज़िला सरकारी अस्पताल में ₹2 लाख की लागत से बने प्रतीक्षालय का उद्घाटन किया। यह नई सुविधा अस्पताल जाने वाले लोगों के लिए उपयोगी होगी।



रोटरी क्लब शिवकाशी सेंट्रल - मंडल 3212

क्लब ने शहर के और उसके आसपास के स्कूलों के बच्चों को ₹10,000 की कापियाँ वितरित की। क्लब ने चार विद्यार्थियों के लिए ₹8,000 की शैक्षिक सहायता के साथ ही एक वृद्धाश्रम को ₹4,000 की कीमत की चावल की बोरियां भी दान की।



रोटरी क्लब वेल्लोर नॉर्थ - मंडल 3231

कटपदी के थरापदवेडु गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को खटिया के साथ गद्दे एवं तकिये दान किए गए। इन खटियों का केंद्र पर 250 गर्भवती महिलाओं के इलाज हेतु एवं नवजातों के स्तनपान हेतु भी उपयोग किया जाएगा।



रोटरी क्लब गंगटोक साउथ - मंडल 3240

क्लब द्वारा मण्डल अनुदान की मदद से पूर्व सिक्किम स्थित अहो किशन माध्यमिक स्कूल में हाथों की धुलाई के स्टेशन एवं वॉटर प्युरिफ़ाईर स्थापित किए गए और उन्हें बेंच और सफाई सामग्री प्रदान की गई।



रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति एवं किताबें देकर और जरूरतमंद महिलाओं के लिए सिलाई मशीनें खरीदने हेतु धन इकट्ठा करके क्लब ने उसके नव वर्ष प्रतिष्ठापन कार्यक्रम का उत्सव मनाया। PRIP राजेंद्र साबू मुख्य अतिथि और डीजी मुकुल सिन्हा सम्मानित अतिथि थे।

बी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रूपांकन

वेलाई इल्ला पट्टाधारी (बेरोजगार स्नातक),
रोटरी क्लब मदुरई नेक्स्ट जेन, मंडल 3000,
द्वारा संचालित एक रोजगार मेले, के उसके पांचवे
सफल वर्ष में क्लब ने 5,000 बेरोजगार युवाओं की
जिंदगियों को परिवर्तित कर रहा है।

45 वर्ष से कम की उसके सदस्यों की औसत
आयु के साथ, रोटरी क्लब मदुरई नेक्स्ट जेन के
सदस्य उन गंभीर मुद्दों का समाधान करने में विश्वास
रखते हैं जिनका सामना आज युवा कर रहे हैं और
चिंता का प्रमुख कारण बेरोजगारी है। वास्तव में,
आज युवा विभिन्न डिग्रियों के साथ स्नातक करते
हैं परन्तु फिर भी उन्हें ऐसा काम नहीं मिलता जो
उन्हें एक अच्छा जीवन जीने हेतु पर्याप्त आय प्रदान
कर सके, क्लब के पूर्व अध्यक्ष अमर वोरा कहते हैं।

पांडियन सरस्वती यादव इंजीनियरिंग कॉलेज,
मदुरई, के रोटारैक्टर्स के साथ मिलकर रोटेरियनो



के एक 12 सदस्यीय दल ने रोजगार मेले पर काम
किया। कॉलेज भर्ती सेल से संपर्क किया गया। और
सामाजिक एवं प्रिंट मीडिया के माध्यम से कैरियर
मेले से संबंधित पोस्टर बांटे गए।

एचसीएल, हनीवैल और सोलामलाई मेले में
सम्मिलित होने वाली 35 कंपनियों में शामिल
थी। चार घंटे से भी कम समय में नौकरी की
तलाश करने वाले 1,200 लोग पंजीकरण हेतु
आए। जो पिछले वर्ष के पंजीकरण के मुकाबले
25 प्रतिशत अधिक है। भर्ती प्रक्रिया के प्रभावी
रूप से कार्यान्वयन हेतु आवेदकों के लिए एक
मार्गदर्शन सत्र का आयोजन किया गया।

नियोक्ता इस रोजगार मेले से प्रसन्न थे क्योंकि
इसने बड़ी मात्रा में एक स्थान पर उम्मीदवारों से
मिलने में उनकी मदद की और यह कम लागत
वाला भी था। एक सौ स्नातकों को हाथों-हाथ
उनके पहले नियुक्ति पत्र मिले। यह परियोजना
मंडल 3,000 में लोकप्रिय हुई है और रोटरी
मंडल के भीतर विभिन्न शहरों में इसका आयोजन
किया जाएगा। ■



**COLLECT
ROTARY
ON
STAMPS**

More than 100
nations have
issued Postage
stamps honouring
Rotary and its
activities

Phila Art
www.phila-art.com



Japan 1978



USA 1955 (50th year)



India 1987



Germany 1980 (75th year)



India 2005 (Centenary)



Active RI fellowship
www.rotaryonstamps.org

"Rotary on Stamps" - a comprehensive beginner's collection available at Rs. 3200/-
For Details contact -

Rtn. Pradip Jain, FRPSL, Philatelist, Expert, Rotarian since 1977
WWW.PHILA-ART.COM, Whatsapp +91 9334132612 Email : philapradip@gmail.com

असफल आत्मकथाएं



टीसीए श्रीनिवासा राघवन

जो लोग आत्मकथाएं पढ़ते हैं वे उस बात से परिचित होंगे जो मैं कहने जा रहा हूँ, अर्थात्, ये दो प्रकार की होती हैं: एक विचारशील और दूसरी एक-के-बाद-एक-बेकार प्रकार की। पहला प्रकार सबसे अच्छा होता है, दूसरा सबसे खराब। मेरा मतलब, आखिरकार, आप एक आत्मकथा सफल व्यक्तियों द्वारा दिए जा सकने वाले परिज्ञान के लिए पढ़ते हैं, ना कि उनके जीवन के कालानुक्रमिक वर्णन के लिए, जब सफल व्यक्ति सफल होने के बारे में बात नहीं करते, तो वे आपके और मेरे जीवन की तरह नीरस लगते हैं।

सबसे बड़े दोषी, मेरे हिसाब से, लोक सेवक है जो अपनी आत्मकथाओं का इस्तेमाल यह समझाने और इस बात को सही साबित करने के लिए करते हैं कि उन्होंने क्यों गड़बड़ की। इसलिए मैंने उन्हें पढ़ना बंद कर दिया। अब, कम से कम मेरे पास, क्रिकेटर, अर्थशास्त्री, राजनेता और न्यायाधीश बचते हैं। और इसमें एक अजीब विरोधाभास निहित है। उदाहरण के लिए, जहाँ तक क्रिकेट खेलने की बात है संजय मांजरेकर और सचिन तेंदुलकर का कोई मुकाबला नहीं है। परंतु जहाँ संजय की आत्मकथा अद्भुत रही, वहीं सचिन की आत्मकथा एकदम फीकी रही। बल्लेबाजी में, वे दोनों ठीक उलट थे: मांजरेकर काफी नीरस बल्लेबाज थे और सचिन पूर्ण रूप से चमत्कारी। डेविड गोवर एक अपवाद है जो एक प्रतिभाशाली बल्लेबाज थे और साथ ही उन्होंने एक अद्भुत आत्मकथा भी लिखी।

वे केवल खिलाड़ी ही नहीं होते जिनकी कही गई कहानियों में परिज्ञान होता है। अंपायरों के पास भी बहुत सी कहानियाँ हैं। उन सभी में से, डिकी बर्ड शायद सर्वश्रेष्ठ है। 1974 में शुरू हुए उनके अंपायर के लंबे कैरियर की उनकी पास जबरदस्त कहानियाँ

हैं। सबसे अच्छी कहानी 1983 के विश्वकप फाइनल की है जिसे भारत ने जीता था। वह कहते हैं लगभग 15वें ओवर में ही - हाँ, इतनी जल्दी - कपिल देव ने उनसे कहा कि भारत यह मैच जीतेगा। बर्ड ने उनसे पूछा क्यों। उन्होंने कहा वेस्टइंडीज इसे बहुत हल्के में ले रहा है। बर्ड ने उनका विश्वास नहीं किया। परंतु अंत में, बिल्कुल ऐसा ही हुआ।

अन्य चार श्रेणियों - राजनेताओं, लोकसेवकों, न्यायाधीशों और अर्थशास्त्रियों - में से केवल कुछ ही विचारशील हैं। खिजाने वाली बात यह है कि उनमें से अधिकतर की आदत शोखी बघारने की होती है, या तो अप्रत्यक्ष रूप से या प्रत्यक्ष रूप से। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि आज भारत जैसा है उसे वैसा बनाने में इन सभी का योगदान है, वे बमुश्किल उन विकल्पों के बारे में बात करते हैं जिनसे उनका सामना हुआ, और कैसे उन्होंने अन्य सभी विकल्पों को छोड़कर एक रास्ता चुना। लोक सेवक, अधिकतर समय, उनके कैरियर को लेकर बस शिकायतें व्यक्त करते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि उन्हें कभी-कभार ही कोई सम्मान मिलता है, जो तकलीफदेह है। परंतु इसकी एक फायदेमंद विशेषता है: चूंकि वे चेहराबिहीन होते हैं, इसलिए

लोक सेवकों को कभी लोगो की आलोचनाएं भी नहीं झेलनी पड़ती। इसलिए वे गड़बड़ करते हैं और फिर दूसरी नौकरी में जाकर वहाँ भी गड़बड़ करते हैं।

हालाँकि, राजनेताओं पर पैनी दृष्टि रखी जाती है और इसलिए उन्हें इतने दुर्बचन सुनने को मिलते हैं। परंतु उन्हें बमुश्किल ही कोई सम्मान या प्रशंसा प्राप्त होती है जो कि एक दयनीय बात है क्योंकि उनमें से अधिकतर वास्तव में बहुत से अच्छे काम करते हैं। परंतु यह चीजों की प्रकृति में है, शायद ताकत की प्रकृति में, केवल उनके कुकर्मों पर ही ध्यान दिया जाता है इसलिए शोखी बघारने की आवश्यकता पड़ती है।

बहुत से न्यायाधीशों ने उनके जीवन की कथा लिखी है और सामान्यतः, यदि उस प्रकार की चीजों में आपकी रुचि है, तो ये कहानियाँ दिलचस्प लगती हैं। परंतु पिछले 20 सालों में, उनके लेखन की गुणवत्ता खराब हुई है। ना ही उनमें से अधिकतर इस बारे में लिखते हैं कि कैसे वे किसी विशेष निष्कर्ष पर पहुँचे। परंतु ऐसा इसलिए हो सकता है कि उन्होंने पहले ही उनके निर्णयों में इसका जिक्र किया है। एकमात्र समस्या यह है कि निर्णय बहुत ही उबाऊ होते हैं क्योंकि भारतीय न्यायाधीश बहुत लंबे निर्णय सुनाते हैं - अक्सर, जैसा मैं कहता हूँ, बहुत बुरी अंग्रेजी में।

अर्थशास्त्रियों के संबंध में, उनमें से कुछ ही आत्मकथाएं लिखते हैं, जो की बहुत आश्चर्य की बात है इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वे हमेशा सोचते हैं कि दुनिया उन्हीं से चलती है। और ना ही विभिन्न विषयों से संबंधित अन्य शिक्षाविद् लिखते हैं। मैंने मेरी पत्नी जो एक शिक्षाविद् है से सवाल किया कि ऐसा क्यों। उसने कहा “ओह, जवाब आसान है। वे प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कोई और उनकी जीवनियाँ लिखे!” ■

जहाँ तक क्रिकेट खेलने की बात

है संजय मांजरेकर और सचिन

तेंदुलकर का कोई मुकाबला नहीं

है। परंतु जहाँ संजय की आत्मकथा

अद्भुत रही, वहीं सचिन की

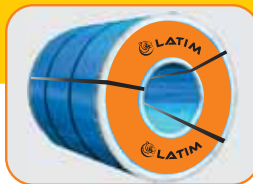
आत्मकथा एकदम फीकी रही।



LATIM
COLOUR COATED STEEL



Coloured steel that stands the test of time



LATIM's high quality galvanized / galvalume colour coated steel coils available in various designs, thickness, size & colours can be used for various applications - Roofings, Claddings, Crimping, Furnitures, False Ceilings, Shutter Doors, Vehicle Bodies, Decorative Container & Trunks, etc. **Ideal for Interior and Exterior Applications.**

- **Colour coated roofing sheet in various profiles design available on special request**
- **Available in various thickness, sizes and colours.**



LATIM GROUP

Corporate Office : 401, Navkar Plaza, 4th Floor, Bajaj Road, Vile Parle (West), Mumbai - 400056.

Tel : (022) 26202290, 26203399, 26203434, 26201166

Works : Industrial Plot No. 270, 271, GIDC, Umbergaon, Valsad. Gujarat - 396171



Colour coating Plant at Umbergaon, Gujarat

● E-mail : sales@latimsourcing.com ● Web : www.latimprofile.com

ROTARY SERVICE PROJECTS

VIDEO CONTEST

2018-19



Calling all **Rotary clubs in Zones 4,5 & 6A** to actively participate in this contest and win exciting cash prizes.

Club presidents and secretaries from participating clubs need to submit a video entry (not more than **three minutes duration**) about a project that is undertaken this year, under The **Rotary Foundation's six areas of focus**. These are:



**Peace and
conflict
prevention/
resolution**



**Disease
prevention
and
treatment**



**Water and
sanitation**



**Maternal
and child
health**



**Basic
education
and
literacy**



**Economic
and
community
development**

The contest will be judged by an esteemed panel convened by RID C Basker.

The **top 3 entries** (from each of the respective **RI Zones of 4,5 & 6A** in India) will win the following cash awards:

1st Prize: INR 100,000

2nd Prize: INR 50,000

3rd Prize: INR 25,000



The last date of submission of videos is **May 31, 2019**.

Please submit your video entries to Rotary News Trust online at:
rotaryprojectsvideo@gmail.com

You may also mail in your entries to:

**Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai,
Tamil Nadu 600008. Phone: 044 4214 5666**

Rotary
District 3012

BE THE
INSPIRATION
R.I. THEME 2018-19



Subhash Jain AKS
District Governor 2018-19

A tribute to the Martyrs...
by Rotary Club Noida
Meeting at holiday Inn



DISTRICT MEMBERSHIP & PUBLIC IMAGE SEMINAR - 2018

Saturday, 11th August 2018 • Hallmark Banquet, Delhi



District 3012 Celebrating Commitment to Excellence...